व्याकरण मेदिनी

Teacher Manual **Class-1 to 5**

व्याकरण मेदिनी-1

1. भाषा

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (ब) 4. (अ) 5. (ब)

(ख) 1. लिखकर 2. लिखित 3. मौखिक 4. समाचार-पत्रों 5. हिन्दी

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

(घ) 1. वह साधन जिसके द्वारा हम अपने विचार बोलकर या लिखकर प्रकट करते हैं भाषा कहते हैं।

2. मुख से जो कुछ बोला तथा कानों से सुना जाता है, वह भाषा का मौखिक रूप है।

3. जो कुछ लिखा और पढ़ा जाता है उसे भाषा का लिखित रूप कहते हैं।

4. हिन्दी का जन्म संस्कृत भाषा से हुआ है।

2. वर्ण

(क) 1. (स) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ) 5. (स)

(ख) 1. ध्वनियों 2. ध्वनि 3. अयोगवाह 4. लिपि

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(घ) 1. वह ध्वनि जिसके और टुकड़े न हो सकें, उसे वर्ण कहते हैं।

2. हिन्दी के वर्णों का उचित क्रम, वर्णमाला कहलाता है।

3. जिन वर्णों को बोलते समय किसी अन्य वर्ण की सहायता न लेनी पड़े, उन्हें स्वर वर्ण कहते हैं।

4. अं और अः वर्ण 'अयोगवाह' कहलाते हैं।

5. दो-दो व्यंजनों को जोड़कर बनने वाले व्यंजन संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं।

उदाहरण:- क्ष त्र ज्ञ श्र

3. वर्ण-संयोग

(क) 1. (अ) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (ब)

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗

(ग) 1. शब्द-रचना में जो वर्ण पूरा नहीं लिखा जाता, उसे आधा वर्ण कहते हैं।

2. व्यंजन को स्वर-रहित दिखाने के लिए हलंत लगाया जाता है।

3. पाई वाले व्यंजनों का अन्य व्यंजनों से संयोग करने के लिए उनकी पाई हटा देते हैं।

4. 'क' और 'फ' का अन्य वर्णों से संयोग करने के लिए उनकी दाईं ओर की सूंड़ हटा देते हैं।

4. स्वरों की मात्राएँ

(क) 1. (ब) 2. (स) 3. (स) 4. (अ) 5. (ब)

(ख) माला, शेर, केला, राम, रोटी

(ग)

आ	ओ	ई
ओ,ई	ई,आ	ऐ, आ
ओ, आ	इ, आ	उ
ओ, आ	इ, ऊ	ऊ
ऊ, इ	ऊ, ई	उ, आ
ऊ	ऋ	इ, आ

(घ) 1. शब्द रचना हेतु व्यंजन के बाद आने वाले स्वर को मात्रा कहते हैं।

2. ए, ऐ स्वरों की मात्राएँ व्यंजन के ऊपर लगती हैं।

3. उ, ऊ, ऋ स्वरों की मात्राएँ व्यंजन के नीचे लगती हैं।

4. आ, ई, ओ, औ स्वरों की मात्राएँ व्यंजन के आगे लगती हैं।

5. शब्द

(क) 1. (ब) 2. (अ) 3. (ब) 4. (अ) 5. (अ)

(ख) 1. कम, चख 2. साँप 3. बिल, तिल 4. चिड़ा

(ग) 1. निरर्थक 2. सार्थक 3. निरर्थक 4. सार्थक

(घ) 1. ध्वनियों के ऐसे मेल को शब्द कहते हैं जिसका कोई अर्थ होता है।

2. शब्द सारवान ध्वनि के योग से बनते हैं।

3. निरर्थक शब्द सार्थक शब्द के साथ प्रयुक्त होने पर सारवान हो उठते हैं।

4. **सार्थक**- चाय, रोटी, पानी, मकान, फल

निरर्थक- वाय, वोटी, वानी , वकान, वल

6. संज्ञा

(क) 1. (अ) 2. (अ) 3. (अ) 4. (अ) 5. (अ)

(ख) बाल, आँख, कान, हाथ, सिर, नाक, गला, पैर

(घ) 1. सूर्य 2. डाकिया 3. घोड़ा 4. गंगा 5. लक्ष्मण 6. रावण 7. किसान

(ङ) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗

(च) किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, गुण, भाव आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं।

7. लिंग

(क) 1. (स) 2. (अ) 3. (अ) 4. (स) 5. (ब)

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. वह मेरा बैल है।

2. मंजुला की बहिन गा रही है।

3. मुर्गा दाना चुग रहा है।

4. राजा ने नौकरानी को बुलवाया।

5. आशीष के पिताजी आ रहे हैं।

(घ) 1. दादा 2. रानी 3. माली 4. नाली 5. शिष्य

(ङ) 1. जिस शब्द से नर-मादा जाति का बोध होता है उसे लिंग कहते हैं।

2. नर जाति के शब्द को पुल्लिंग कहते हैं।

3. मादा जाति के शब्द को स्त्रीलिंग कहते हैं।

8. वचन

(क) 1. (ब) 2. (ब) 3. (स)

(ख) 1. पुस्तकें 2. लड़के 3. कुत्ता

(ग)

एकवचन	बहुवचन
एकवचन	एकवचन
बहुवचन	एकवचन
बहुवचन	एकवचन

(घ)

लोटे	तारे
डिब्बे	प्याले
जूते	साड़ियाँ
खिलौने	मक्खियाँ
बच्चे	डालियाँ

(ङ) 1. शब्द के जिस रूप से उसकी संख्या का बोध होता है उसे वचन कहते हैं।

2. शब्द के जिस रूप से एक व्यक्ति, प्राणी, वस्तु आदि का बोध होता है एकवचन कहलाता है।

3. शब्द के जिस रूप से एक से अधिक व्यक्तियों, प्राणियों, वस्तुओं आदि का बोध होता है बहुवचन कहलाता है।

9. सर्वनाम

(क) 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (अ)

(ख) 1. मैं 2. वह 3. तुम 4. हम 5. वे

(ग) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓

(घ) 1. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

2. बात कहने वाला अपने लिए 'मैं' और 'हम' शब्दों का प्रयोग करता है।

3. बात सुनने वाले के लिए 'तू', तुम और आप सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

4. दूर और निकट के प्राणी या वस्तु को दर्शाने के लिए 'यह' और 'वह' सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

10. विशेषण

(क) 1. (ब) 2. (अ) 3. (अ) 4. (ब) 5. (ब) 6. (अ)

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗

(ग) 1. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

2. जिस संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहते हैं।

11. क्रिया

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (अ) 4. (स) 5. (ब)

(ख) 1. उड़ती 2. फुफकारता 3. रँभाती 4. हिनहिनाता 5. टर्राता

(ग) 1. उड़ना 2. डरना 3. आना 4. मुस्कुराना

12. शुद्ध वर्तनी

(क) 1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (ब) 5. (अ)

(ख) 1. आज्ञा 2. नाखून 3. प्रणाम 4. विद्यालय 5. आसान

(ग) इन शब्दों में से शुद्ध व अशुद्ध वर्तनी के शब्दों को छाँटकर लिखिए:

शुद्ध वर्तनी- बारात, साधु, तिथि, प्रणाम

अशुद्ध वर्तनी- कवीता, बिमार, परसिद्ध, निशचय

13. पर्यायवाची शब्द

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (स) 5. (अ)

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓

(ग) 1. वाटिका 2. जनक 3. गिरि 4. सरोवर

14. विलोम शब्द

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (ब)

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. भीतर 2. धर्म 3. प्रेम 4. हानि 5. काला।

(घ)

1. मीठा	हार
2. खोटा	अपयश

3. बदबू हानि

व्याकरण मेदिनी-2

1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. (अ) 2. (स) 3. (स) 4. (ब)

(ख) 1. भाषा 2. अनेक 3. भारतीय 4. व्याकरण 5. संस्कृत

(ग) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(घ) 1. हमें सदा सत्य बोलना चाहिए।

2. लड़का जा रहा है।

3. हमने खाना खाया।

4. हरि ने दूध पिया।

5. सूरज पूरब में निकलता है।

(ङ) 1. जिसके द्वारा लोग आपस में बातचीत करते हैं और अपने विचार एक दूसरे तक पहुँचाते हैं उसे भाषा कहते हैं।

2. बोलने तथा लिखने का कार्य करने के लिए भाषा की आवश्यकता होती है।

3. भाषा के मुख्य रूप दो हैं- 1. मौखिक भाषा 2. लिखित भाषा

4. बोलते समय हमारे मुख से ध्वनियाँ निकलती हैं। इन ध्वनियों को लिखने के लिए कुछ चिह्नों का निर्माण किया जाता है। ध्वनि चिह्नों को लिखने की रीति "लिपि" कहलाती है।

5. किसी भाषा को शुद्ध रूप में लिखने और बोलने का ज्ञान कराने वाले नियमों को व्याकरण कहते हैं।

2. वर्ण-विचार

(क) 1. (स) 2. (स) 3. (अ) 4. (ब) 5. (स)

(ख) रथ, पल, कमल, चल, अधर, अजगर

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✗

(घ) 1. जिन वर्णों का उच्चारण किसी अन्य ध्वनि की सहायता के बिना होता है, उन्हें स्वर-वर्ण कहते हैं।

2. जिन वर्णों के उच्चारण में स्वरों की सहायता ली जाती है उन्हें व्यंजन वर्ण कहते हैं।

3. जब दो व्यंजनों के बीच कोई स्वर नहीं होता है तो वे संयुक्त व्यंजन माने जाते हैं।

4. जिन व्यंजनों में खड़ी पाई होती है, उनकी पाई हटाकर उन्हें व्यंजन में जोड़ दिया जाता है।

(ङ) 1. खड़ी पाई वाले व्यंजन - ख ग न प ल

2. बिना पाई वाले व्यंजन - क ट ठ द र

3. शब्द और वाक्य

(क) 1. (ब) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (स)

(ख) 1. मैं 2. वह 3. वह 4. वह 5. हम

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗

(घ) 1. वाक्य में प्रयोग होने पर जो शब्द अपना रूप बदल लेते हैं। उन्हें विकारी शब्द कहते हैं जैसे- **वह** गीत **गाएगा**।

2. वाक्य में प्रयोग होने पर जो शब्द अपना रूप नहीं बदलते, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं।

3. शब्दों का वह सार्थक समूह जो किसी विषय में पूरा भाव प्रकट करे, उसे वाक्य कहते हैं।

4. संज्ञा

(क) 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (स) 5. (अ)

(ख) ईमानदारी - गुण का नाम
बुढ़ापा - अवस्था का नाम
लखनऊ - शहर का नाम
कुर्सी - वस्तु का नाम
मोहन - व्यक्ति का नाम
बिल्ली - पशु की जाति का नाम

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(घ) 1. जिस संज्ञा शब्द से उसकी संपूर्ण जाति का बोध हो उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं जैसे- पुस्तक, नदी, पर्वत, गुड़िया

2. किसी विशेष प्राणी, वस्तु या स्थान के नाम को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं जैसे-गंगा, हिमालय, चेतक, लाल किला

3. जिस शब्द से किसी व्यक्ति या पदार्थ के भाव, दशा या स्थिति का बोध हो, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं जैसे- दु:ख, पीड़ा, बचपन, हरियाली

5. लिंग

(क) 1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (ब) 5. (अ)

(ख) 1. स्त्रीलिंग 2. पुल्लिंग 3. पुल्लिंग 4. पुल्लिंग 5. स्त्रीलिंग

6. वचन

(क) 1. (ब) 2. (अ) 3. (ब) 4. (ब) 5. (ब)

(ख) 1. लड़का 2. कुत्ते 3. रोटियाँ 4. तितलियाँ 5. पौधे

(ग) 1. दरवाजे बंद कर दो।

2. पर्दे धोकर सुखा दो।

3. ताले उठाकर यहाँ रख दो।

(घ) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓

7. कारक

(क) 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब) 5. (ब)

(ख) 1. ने 2. में 3. पर 4. को 5. से

(ग) 1. से 2. का 3. ने 4. ने, के लिए 5. पर 6. पर 7. पर 8. में 9. ने, को 10. में

(घ) 1. संज्ञा या सर्वनाम का क्रिया के साथ संबंध बताने वाली अवस्थाओं को कारक कहा जाता है।

2. वाक्य में जिसके द्वारा कार्य किया जाना प्रकट हो, उसे कर्ताकारक कहते हैं।

3. जिस पर क्रिया का प्रभाव पड़े, वह कर्म कहलाता है, वाक्य में कर्म ही कर्मकारक कहलाता है।

8. सर्वनाम

(क) 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (ब) 5. (अ)

(ख) 1. मैं 2. वह 3. वे 4. उन्हें 5. तुम

(ग) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(घ) 1. जो सर्वनाम बोलने वाले, सुनने वाले या अन्य किसी व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होता है, उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

2. वे प्रश्नवाचक शब्द जो किसी संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

3. जिन सर्वनामों में किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध नहीं होता उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

(ङ) संज्ञा- राम, राजू, समीर, फूल, रमेश

सर्वनाम - वह, कोई, मैं, किसने, कुछ

9. विशेषण

(क) 1. (अ) 2. (अ) 3. (अ) 4. (अ) 5. (अ)

(ग) 1. चतुर-अनुज 2. गरीब-वह

3. सत्यवादी-गाँधीजी 4. काला-घोड़ा

(घ) 1. किसी वस्तु या प्राणी के गुण-दोष बताने वाले शब्दों को गुणवाचक विशेषण कहते हैं। 2. संख्या बताने वाले शब्दों को संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। 3. मात्रा या परिमाण का बोध कराने वाले विशेषणों को परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। 4. जो विशेषण संज्ञा की ओर संकेत करते हैं, उन्हें संकेतवाचक विशेषण कहते हैं।

10. क्रिया

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (स) 5. (स)

(ख) 1. खा रहा है। 2. उड़ा रहा है। 3. भौंक रहा है। 4. रो रहा है। 5. खेल रहा है।

(ग) 1. अकर्मक क्रिया 2. सकर्मक क्रिया 3. सकर्मक क्रिया 4. अकर्मक क्रिया

(घ) 1. जिन क्रियाओं के साथ कर्म का प्रयोग किया जाता है, उन्हें सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे- राम केला खा रहा है। 2. जिन क्रियाओं के साथ कर्म नहीं होता, उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं जैसे- बच्चा सो रहा है।

11. काल

(क) 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब)

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

(ग) 1. क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य बीते हुए समय में हुआ था, उसे भूतकाल कहते हैं जैसे- यह पेड़ मेरे दादाजी ने लगाया था। 2. क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य अभी हो रहा है, उसे वर्तमान काल कहते हैं, जैसे- पेड़ पर आम लगे हैं पर अभी कच्चे हैं। 3. क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य आने वाले समय में होगा। उसे भविष्यत् काल कहते हैं, जैसे मैं कल विद्यालय जाऊँगा।

12. क्रियाविशेषण

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (अ) 5. (अ)

(ख) 1. उधर, स्थानवाचक क्रियाविशेषण 2. बहुत, रीतिवाचक क्रियाविशेषण 3. बाहर, स्थानवाचक क्रियाविशेषण

(ग) 1. कब 2. जल्दी-जल्दी 3. देर 4. यहाँ-वहाँ

13. शब्द-भंडार

(क) 1. (ब) 2. (अ) 3. (स) 4. (अ) 5. (ब)

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

(ग) धर्म-अधर्म, कठिन-सरल, राजा-रंक, खरा-खोटा दिन-रात, आदर-अनादर, न्याय-अन्याय, गुण-दोष

(घ) 1. अपराह्ण 2. शाकाहारी 3. अशिक्षित

14. मुहावरे

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (ब) 4. (स) 5. (अ)

(ख) 1. उल्लू बनाना 2. अक्ल की दुश्मन 3. कोल्हू का बैल 4. आँखों का तारा 5. नौ-दो ग्यारह

होना 6. आग बबूला होना

(ग) 1. दिलासा देना – आँसू पोंछना 2. रूठना – गाल फुलाना 3. सर्वनाश कर देना – ईंट-से-ईंट बजाना 4. वश में करना – अँगुली पर नचाना 5. खुशामद करना – जूतियाँ चाटना 6. बहुत मेहनती – कोल्हू का बैल

व्याकरण मेदिनी-3

1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. (अ) 2. (अ) 3. (ब) 4. (ब) 5. (ब)

(ख) 1. विचारों 2. लिपि 3. देवनागरी 4. हरियाणवी 5. बोली

(ग) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(घ) 1. भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने भाव या विचार लिखकर या बोलकर दूसरों के सामने प्रकट करते हैं।

2. भाषा के दो रूप हैं–मौखिक एवं लिखित।

3. बोलकर प्रयोग की जाने वाली भाषा मौखिक भाषा कहलाती है।

4. लिखकर प्रयोग की जाने वाली भाषा को लिखित भाषा कहते हैं।

(ङ) 1. भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं।

2. ध्वनियों को लिखने का ढंग लिपि कहलाता है।

3. भाषा को शुद्ध रूप से लिखने व बोलने के नियमों को बताने वाले शास्त्र को व्याकरण कहते हैं।

(च) 1. (द) 2. (अ) 3. (य) 4. (ब) 5. (स)

2. वर्ण-विचार

(क) 1. (ब) 2. (स) 3. (स) 4. (स) 5. (अ)

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗

(ग) 1. क 2. ह्रस्व 3. न्न 4. श्र 5. स

(घ) 1. (स) 2. (य) 3. (अ) 4. (ब) 5. (द)

(ङ) 1. वह छोटी से छोटी ध्वनि जिसके और टुकड़े न हो सकें, वर्ण कहलाती है।

2. जिन वर्णों को बोलने में किसी दूसरे वर्ण की सहायता नहीं लेनी पड़ती उन्हें स्वर वर्ण कहते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं, ह्रस्व व दीर्घ।

3. स्वर वर्ण की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण व्यंजन कहलाते हैं, ये तीन प्रकार के होते हैं–स्पर्श व्यंजन, अंत:स्थ व्यंजन व ऊष्म व्यंजन।

4. क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म।

3. वर्ण-संयोग

(क) 1. (ब) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब) 5. (स)

(ख) 1. वर्तनी 2. शब्द 3. से पहले 4. के बाद 5. पाई

(ग) त–त् गत्ता, क–क् पक्का, फ–फ् हफ्ता, ह–ह् चिह्न, भ–भ् अभ्यास, व–व् व्यापक, श–श् निश्चित, घ–घ् कृतघ्न, ण–ण् झण्डा, ख–ख् ख्याल, ग–ग् ग्वाला, ब–ब् शब्द, च–च् बच्चा, ज–ज् ज्वाला, ल–ल् वाल्मीकि, स–स् स्थान, द–द् युद्ध, ल–ल् बल्ला, ह–ह् प्रह्लाद, क्ष–क्ष् लक्ष्मण

(घ) करम–क्रम, धरम–धर्म, वरग–वर्ग, उचारण–उच्चारण, पूरथम–प्रथम, निरवाह–निर्वाह, पृथक–पृथक्, रुपया–रुपया

4. शब्द-विचार

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (ब) 4. (ब) 5. (ब)

(ख) 1. वर्ण 2. बदलते 3. अविकारी 4. पंकज 5. योगरूढ़

(ग) 1. रूढ़ शब्द 2. यौगिक शब्द 3. रूढ़ शब्द 4. यौगिक शब्द 5. रूढ़ शब्द 6. यौगिक शब्द

(घ) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ 6. ✓

(ङ) 1. एक या अनेक वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं।

2. शब्दों के वर्गीकरण के चार आधार हैं–उद्गम का आधार, रचना का आधार, अर्थ का आधार व प्रयोग का आधार।

3. उद्गम के आधार पर शब्द चार प्रकार के होते हैं। तत्सम्, तद्भव, देशज और विदेशी।

4. रचना के आधार पर शब्द के तीन भेद हैं–रूढ़ शब्द, यौगिक शब्द और योगरूढ़ शब्द।

5. प्रयोग के आधार पर शब्द के दो भेद हैं–विकारी शब्द और अविकारी शब्द।

(च) भ्राता, सर्प, कोकिल, गर्दभ, आम्र, कर्ण

5. संज्ञा

(क) 1. (ब) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (स)

(ख) 1. व्यक्तिवाचक 2. जातिवाचक 3. भाववाचक 4. समूहवाचक 5. द्रव्यवाचक

(ग) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(घ) बच्चा–बचपन, पशु–पशुत्व, गरीब–गरीबी, बूढ़ा–बुढ़ापा, मनुष्य–मानवता, कोमल–कोमलता, जवान–जवानी, गोरा– गोरापन, कठोर–कठोरता, चालाक–चालाकी, लड़का–लड़कपन,

ईमानदार–ईमानदारी।

(ङ) 1. किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैं। इसके प्रमुख तीन भेद हैं–व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा व भाववाचक संज्ञा।

2. जो शब्द किसी वर्ग या जाति के सभी प्राणियों, वस्तुओं तथा स्थानों आदि के नाम का बोध कराएँ उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे–लड़का, गाय, तोता आदि।

3.

जातिवाचक संज्ञा	**व्यक्तिवाचक संज्ञा**
स्त्री	नीरा
स्थान	चंडीगढ़
पुरुष	राकेश
पर्वत	हिमालय

4. जिन शब्दों से गुण, दशा, अवस्था या भाव आदि का बोध हो, वे भाववाचक संज्ञा कहलाते हैं; जैसे–वीरता, कायरता, बचपन, ईमानदारी आदि।

5. (1) समूहवाचक संज्ञा – जिस संज्ञा शब्द से किसी समूह या समुदाय का बोध होता है, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे – भीड़, कक्षा, टोली आदि। (2) द्रव्यवाचक संज्ञा – जिस संज्ञा शब्द से किसी पदार्थ का बोध होता है, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे – पानी, दूध, पत्थर, चूना आदि।

(च) चिड़िया–जातिवाचक संज्ञा,
ईमानदार–भाववाचक संज्ञा,
हिमालय–व्यक्तिवाचक संज्ञा,
कानपुर–व्यक्तिवाचक संज्ञा, सोना–द्रव्यवाचक संज्ञा, सेना–समूहवाचक संज्ञा।

6. लिंग

(क) 1. (अ) 2. (स) 3. (अ) 4. (अ) 5. (ब)

(ख) 1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग 3. पुल्लिंग 4. स्त्रीलिंग 5. पुल्लिंग

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(घ) युवती–युवक, सास–ससुर, ज्ञानवती–ज्ञानवान, बालिका– बालक, सेठानी–सेठ, शिष्या–शिष्य, माता–पिता, पत्नी–पति, बकरी–बकरा, अध्यापिका–अध्यापक, सुता–सुत, बाला–बालक

(ङ) 1. संज्ञा शब्दों में विकार लिंग, वचन तथा कारक के कारण आते हैं।

2. शब्द के जिस रूप से उसके स्त्री जाति अथवा पुरुष जाति के होने का पता चलता है, उसे लिंग कहते हैं।

3. लिंग के दो भेद हैं–पुल्लिंग व स्त्रीलिंग।

4. पुरुष जाति का बोध बराने वाले शब्द पुल्लिंग कहलाते हैं।

5. स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द स्त्रीलिंग कहलाते हैं।

(च) नौकर–नौकरानी, मालिक–मालकिन, धोबी–धोबिन, मामा–मामी, चौधरी–चौधराइन, वृद्ध–वृद्धा, लेखक–लेखिका, श्रीमान–श्रीमती

7. वचन

(क) 1. (स) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब)

(ख) 1. घोड़े 2. खिलौने 3. क्यारियाँ 4. मक्खियाँ 5. मछलियाँ

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(घ) 1. शब्द के जिस रूप से उसकी संख्या में एक या एक से अधिक होने का पता चलता है उसे वचन कहते हैं।

2. वचन दो प्रकार के होते हैं। 1. एक-वचन–जैसे–पुस्तक, गेंद। बहुवचन–जैसे – पुस्तकें, गेंदें।

3. बहुवचन बनाने के लिए पुल्लिंग शब्द के अंतिम 'आ' को 'ए' लिखा जाता है; जैसे–लड़का–लड़के। स्त्रीलिंग शब्द के अंतिम 'इ' में 'याँ' जोड़कर लिखा जाता है; जैसे–लड़की–लड़कियाँ। अकारांत स्त्रीलिंग शब्द में 'एँ' जोड़कर लिखा जाता है; जैसे – आँख–आँखें।

4. आदर प्रकट करने के लिए बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण–गाँधी जी महान थे।

5. (1) **समाचार**–आज समाचार आठ बजे प्रसारित होंगे। (2) **बाल**–मेरे बाल बहुत छोटे हैं। (3) **हस्ताक्षर**–क्या आपने हस्ताक्षर कर दिए हैं ?

(ङ) दादी–दादियाँ, स्त्री–स्त्रियाँ, योजना–योजनाएँ, तितली–तितलियाँ, आँख–आँखें, बहू–बहुएँ

8. कारक

(क) 1. (स) 2. (अ) 3. (अ) 4. (ब) 5. (ब)

(ख) 1. ने 2. से 3. में 4. के 5. ने, को

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(घ) 1. कर्ता 2. करण 3. कर्म 4. संबोधन 5. अधिकरण

(ङ) 1. संज्ञा अथवा सर्वनाम का वह रूप जो अन्य शब्दों, विशेषत: क्रिया से अपना संबंध स्पष्ट करता है, कारक कहलाता है। जैसे–नीता ने चूहे को पिंजरे में बंद किया। यहाँ कारक के प्रयोग से नीता, चूहा, पिंजरा आदि संज्ञा शब्दों का रूप बदल गया और चूहा शब्द चूहे तथा पिंजरा शब्द पिंजरे में बदल गया।

2. कारक के आठ भेद हैं। कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण व संबोधन।

3. जिसके लिए कार्य को किया जाए या जिसे कुछ दिया जाए, उस संज्ञा या सर्वनाम का कारक संप्रदान होता है। इसका चिह्न 'के लिए' है। उदाहरण–ये कपड़े आपके लिए हैं। ये फल मीना के लिए हैं।

4. जिस व्यक्ति या वस्तु पर क्रिया का प्रभाव पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं। इसका कारक चिह्न 'को' है। उदाहरण–राम को आराम करने दो। पतंग को ढीला छोड़ो।

5. करण का चिह्न 'से' साधन की ओर संकेत करता है। किंतु अपादान का चिह्न 'से' पृथक् होने (अलग होने) का संकेत करता है।

6. संबंधकारक के चिह्न हैं–का, की, के, रा, री, रे। उदाहरण वाक्य–यह राम का धनुष है। यह नीता की फ्रॉक है। यह मेरी माँ है।

(च) 1. ने 2. को 3. से 4. के लिए 5. से (अलग) 6. का के की रा रे री 7. में, पर

9. सर्वनाम

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (ब) 4. (ब) 5. (अ)

(ख) 1. मैं 2. तू 3. वे 4. कोई 5. कुछ

(ग) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(घ) 1. जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, सर्वनाम कहलाते हैं। **शर्मिला** मेरी बहन है। **वह** समझदार है। यहाँ संज्ञा शब्द शर्मिला के स्थान पर 'वह' शब्द का प्रयोग हुआ है। 'वह' शब्द सर्वनाम है।

2. सर्वनाम के छ: भेद हैं। पुरुषवाचक सर्वनाम, निश्चयवाचक सर्वनाम, अनिश्चयवाचक सर्वनाम, संबंधवाचक सर्वनाम, प्रश्नवाचक सर्वनाम, निजवाचक सर्वनाम। पुरुषवाचक सर्वनाम के भेद–1. उत्तम पुरुष 2. अन्य पुरुष 3. मध्यम पुरुष।

3. मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम का प्रयोग सुनने वाले या जिससे बात की जाती है, उसके लिए प्रयोग किया जाता है। जिसके विषय में बात की जाती है उसे अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। उदाहरण–**तुम** यहाँ कब आओगे? (मध्यम पुरुष-वाचक सर्वनाम)

वह कल दिल्ली जाएगा। (अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम)

4. जो सर्वनाम निकट या दूर की किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति की ओर संकेत करते हैं, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे–**वह** मेरा मित्र है। **यह** कपड़े की दुकान है।

5. जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का पता नहीं चलता, वहाँ अनिश्चियवाचक सर्वनाम होता है; जैसे–**कोई** तुम्हें बुला रहा है। **कुछ** तो बना लाओ।

6. निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध कराने वाले सर्वनाम निश्चयवाचक और अनिश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध कराने वाले सर्वनाम अनिश्चितवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

(ङ) 1. वह–निश्चयवाचक सर्वनाम 2. जिसकी, उसकी–संबंधवाचक सर्वनाम 3. कुछ–अनिश्चयवाचक सर्वनाम 4. वह, आप–निजवाचक सर्वनाम 5. आप–मध्यम पुरूषवाचक सर्वनाम, कब–प्रश्नवाचक सर्वनाम

(च) 1. उसने पुस्तक पढ़ ली है। 2. मैंने अपना नाम लिख दिया है। 3. अब मुझे अपना काम करना होगा। 4. वह चार बजे आया था, पर अभी सो रहा है। 5. मैंने जो कहा वह किसी ने सुना तो नहीं। 6. तुम्हें क्या चाहिए ? 7. किसने तुम्हारी पुस्तक ली है?

10. विशेषण

(क) 1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (ब) 5. (ब)

(ख) 1. भार 2 से पहले 3. की संख्या 4. संज्ञाओं

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(घ) 1. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। जैसे–सफेद कमीज। यहाँ सफेद शब्द संज्ञा 'कमीज' की विशेषता बताने के कारण विशेषण कहलाएगा।

2. विशेषण पाँच प्रकार के होते हैं–गुणवाचक विशेषण, परिमाणवाचक विशेषण, संख्यावाचक विशेषण, संकेतवाचक विशेषण, व्यक्तिवाचक विशेषण; **व्यक्तिवाचक विशेषण**–जो विशेषण व्यक्तिवाचक संज्ञाओं से बनाए जाते हैं, उन्हें

व्यक्तिवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे–नागपुरी संतरे बड़े रसीले होते हैं।

3. जिस शब्द की विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहते हैं।

4. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की संख्या बताते हैं, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे–चार कमीजें, पाँच रास्ते आदि।

5. जो शब्द किसी वस्तु की माप-तौल बताते हैं, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे–थोड़ा पानी, दो मीटर कपड़ा आदि।

6. परिमाणवाचक विशेषण वस्तु की माप-तौल बताते हैं जबकि संख्यावाचक विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की संख्या बताते हैं।

7. विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं। मूलावस्था, उत्तरावस्था और उत्तमावस्था। उत्तरावस्था मूल अवस्था से अधिक व उत्तमावस्था सबसे अधिक की ओर संकेत करती है; उदाहरण–मधुर–मधुरतर, मधुरतम।

(ङ) 1. पुरानी 2. थोड़े 3. तीन 4. बनारसी 5. मधुर

(च) रुपए, लोमड़ी, पहाड़, पानी, फूल, चाय

(छ) 1. (द) 2. (य) 3. (अ) 4. (ब) 5. (स)

11. क्रिया

(क) 1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (स) 5. (ब)

(ख) 1. हथियाना 2. पढ़वाया 3. चला गया 4. बुलवाया

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(घ) 1. जिस शब्द से किसी काम का करना या होना पाया जाता है, उसे क्रिया कहते हैं; जैसे–चलना, हँसना, गाना आदि।

2. क्रिया का मूल रूप धातु कहलाता है।

3. जिस क्रिया के साथ कर्म की आवश्यकता होती है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे–निधि पुस्तक पढ़ती है। (क्या पढ़ती है? पुस्तक-कर्म)

4. जिस क्रिया के साथ कर्म की आवश्यकता नहीं होती, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे–हाथी नहाता है। (क्या नहाता है?)

12. काल

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (ब) 4. (स) 5. (अ)

(ख) 1. जाओगे 2. पिया 3. चला गया 4. रहा हूँ 5. गया था 6. रहा है

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

(घ) 1. क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने या करने के समय का बोध होता है, उसे काल कहते हैं। ये तीन प्रकार के होते हैं। भूतकाल, वर्तमान काल व भविष्यत् काल।

2. क्रिया के जिस रूप से यह प्रकट हो कि कार्य बीते हुए समय में हुआ है, उसे भूतकाल कहते हैं। उदाहरण–कल वर्षा हुई थी। सचिन सो गया।

3. क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि कार्य अभी जारी है, उसे वर्तमान काल कहते हैं। उदाहरण–मैं खाना खाता हूँ। हवा चल रही है।

4. आगे आने वाले समय को भविष्यत् काल कहते हैं। इस काल की क्रिया में गा गे गी आदि जुड़े रहते हैं। जैसे–मैं दिल्ली जाऊँगा। हम खूब खेलेंगे।

(ङ) 1. वर्तमान काल 2. वर्तमान काल 3. भविष्यत् काल 4. भूतकाल 5. वर्तमान काल 6. भूतकाल 7. भूतकाल 8. भूतकाल 9. भूतकाल 10. वर्तमान काल 11. भूतकाल 12. भविष्यत् काल

13. अविकारी शब्द

(क) 1. (ब) 2. (ब) 3. (ब) 4. (ब) 5. (ब)

(ख) 1. में 2. के साथ 3. के नीचे

(ग) 1. या 2. परंतु 3. कि

(घ) 1. हाय! 2. छिः! 3. ओह! 4. वाह! 5. हे राम!

(ङ) 1. जो शब्द सदैव एक-सी स्थिति में रहते हैं, अविकारी शब्द कहलाते हैं। इसके चार भेद हैं–क्रिया-विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक।

2. क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को क्रियाविशेषण कहते हैं। ये चार प्रकार के होते हैं–(1) कालवाचक क्रियाविशेषण (2) स्थानवाचक क्रियाविशेषण (3) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण (4) रीतिवाचक क्रियाविशेषण

3. जो अविकारी शब्द संज्ञा या सर्वनाम के साथ आकर उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से बताएँ, उन्हें संबंधबोधक अव्यय कहते हैं।

4. जो अविकारी शब्द दो शब्दों, वाक्यांशों या उपवाक्यों को जोड़ने का कार्य करते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं। प्रमुख समुच्चयबोधक अव्यय हैं–और, व, या, क्योंकि आदि।

5. जो शब्द हर्ष, शोक, आश्चर्य, करुणा आदि के भाव प्रकट करते हैं, विस्मयादिबोधक शब्द कहलाते हैं; जैसे–हाय! मैं लुट गया। वाह! कितनी बढ़िया सुगंध है।

(च) 1. जल्दी-जल्दी 2. बहुत 3. आज शाम

(छ) 1. और 2. क्योंकि 3. सबका

14. विराम-चिह्नों का प्रयोग

(क) 1. (अ) 2. (अ) 3. (स) 4. (स) 5. (ब)

(ख) 1. (द) 2. (स) 3. (य) 4. (ब) 5. (अ)

(ग) 1. लिखते समय रुकने का संकेत देने के लिए तथा कथन का आशय समझाने के लिए प्रयोग किए जाने वाले चिह्नों को विराम चिह्न कहते हैं।

2. भाषा में वाक्यों का अर्थ सही रूप में समझाने के लिए विराम चिह्नों की आवश्यकता पड़ती है।

3. हिन्दी में प्रमुख रूप से पूर्ण विराम, अल्पविराम, प्रश्नसूचक-चिह्न, विस्मयादिबोधक-चिह्न, उद्धरण-चिह्न, योजक-चिह्न तथा निर्देशक-चिह्न की आवश्यकता पड़ती है।

(घ) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗ 6. ✗ 7. ✓ 8. ✓

(ङ) सुमन, निधि और मोना बाजार गईं।

आम, अंगूर, संतरे और चीकू फलवाले से ले आओ।

शाबाश! तुम बढ़िया खेले।

उफ! आज कितनी गर्मी है।

तुम्हारा क्या नाम है?

तुम कहाँ रहते हो ?

हमने अपना काम कर लिया है।

आज काफी अच्छा मौसम है।

माँ ने पूछा–"तुमने दवाई पी या नहीं।"

15. शब्द-भंडार

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (स) 5. (ब)

(ख) 1. हानि 2. निराशा 3. व्यय 4. सच 5. अपमान

(ग) 1. (द) 2. (य) 3. (अ) 4. (ब) 5. (स)

(घ) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

(ङ) 1. परस्पर समान अर्थ रखने वाले शब्द को पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

2. एक-दूसरे से विपरीत अर्थ बताने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं।

3. अनेक शब्दों के लिए कभी-कभी एक शब्द लिखना भी पर्याप्त होता है। ऐसे शब्द ही वाक्यांश के लिए एक शब्द के नाम से जाने जाते हैं। जैसे–सोहन **काम से जी चुराता** है। (सोहन **कामचोर** है।)

(च) पृथ्वी–भूमि, धरा, वसुधा

बादल–घन, मेघ, जलद

नदी–सरिता, तरंगिनी, तरणि

गणेश–विनायक, लंबोदर, एकदंत

ईश्वर–प्रभु, भगवान, परमात्मा

दूध–क्षीर, पय, दुग्ध

आँख–नेत्र, चक्षु, नयन

(छ) तरल–ठोस, क्रूर–दयालु, न्याय–अन्याय, सफल–असफल, प्रकाश–अंधकार, स्वाधीन–पराधीन, उत्तीर्ण–अनुत्तीर्ण, साक्षर–निरक्षर

16. मुहावरे

(क) 1. (स) 2. (अ) 3. (स) 4. (स) 5. (स)

(ख) 1. ऐसे वाक्यांश जो सामान्य अर्थ का बोध न कराकर किसी विशेष व लक्षित अर्थ का बोध कराते हैं, मुहावरा कहलाते हैं।

2. भाषा में प्रभाव तथा चमत्कार उत्पन्न करने के लिए मुहावरों का उपयोग किया जाता है।

(ग) 1. **जिस पर किसी बात का असर न हो**–दिनेश को लाख समझाओ कि प्रतिदिन पढ़ा करो, पर वह तो चिकना घड़ा है।

2. **बाधा डालना**–बनते कामों में वह अपनी टाँग अड़ा देता है।

3. **प्रभाव फैलना**–पहले विश्व में हमारी संस्कृति की तूती बोलती थी।

4. **बुद्धि भ्रष्ट होना**–उसने सारा पैसा जुए में झोंक दिया। सचमुच उसकी अक्ल पर पत्थर पड़े हैं।

5. **मूर्ख**–राकेश ने बहुमूल्य ग्रंथ रद्दी में बेच दिया। सचमुच वह अक्ल का दुश्मन है।

6. **जोश में आना**–अगर कोई किसी को सताए तो मेरा खून खौल उठता है।

7. **अपनी इच्छा के अनुसार चलाना**–अपने पद का लाभ उठाकर वह सभी कर्मचारियों को उँगुली पर नचाता है।

18. कहानी-लेखन

सारांशीय मूल्यांकन हेतु

1. बिल्ली के गले में घंटी कौन बाँधेगा?

एक बिल्ली चूहों को मारकर खा जाती **थी, इस**

कारण चूहों में डर फैल गया । **तब चूहों द्वारा एक** सभा बुलाई गई । **सभा में** सभी बिल्ली से छुटकारा पाने का उपाय सुझाने लगे । **तभी** एक चूहे ने बिल्ली के गले में घंटी बाँधने की युक्ति सुझाई । **इस पर** एक बूढ़े चूहे ने प्रश्न उठाया कि किस प्रकार और कैसे घंटी बाँधी जाए । **सभी** चूहे चुप रहे, **तभी सहसा** बिल्ली का आगमन **हुआ और सभी** चूहे भाग गए।

2. शेर और खरगोश

जंगल में एक शेर **प्रतिदिन अनेक** पशुओं को मारता और खा जाता **था। इस बात से परेशान होकर** पशुओं ने सभा की। **उन्होंने** एक पशु प्रतिदिन शेर की सेवा में भेजने का प्रस्ताव **पास किया।** एक दिन खरगोश की बारी आई। **कुछ सोचकर** वह शेर के पास देर से गया। **इस पर** शेर नाराज हुआ। **उसने** देर से आने का कारण पूछा। **तब** खरगोश का उत्तर था–रास्ते में दूसरा शेर मिल गया था। **यह सुनकर** शेर नाराज **हो गया। अब वह** दूसरे शेर को मारना चाहता था । **तब** खरगोश उसे एक कुएँ पर ले गया। शेर ने कुएँ में अपनी परछाई देखी **और** उसे ही उसने दूसरा शेर समझा । **शेर उस पर हमला करने के लिए** कुएँ में कूद गया । **वह पानी में डूब कर** मर गया । **शेर के मरने पर** सभी पशुओं ने खुशियाँ मनाई।

3. मगरमच्छ और बंदर : स्वयं करें

व्याकरण मेदिनी-4

1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. (ब) 2. (ब) 3. (स) 4. (स) 5. (ब)

(ख) 1. देवनागरी 2. गुरुमुखी 3. हिन्दी 4. लिपि 5. बोली

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(घ) व्याकरण के तीन अंग होते हैं–1. वर्ण-विचार 2. शब्द-विचार 3. वाक्य-विचार

(ङ) 1. भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों के सामने प्रकट करता है और दूसरों के विचार स्वयं समझता है।

2. भाषा के दो रूप होते हैं 1. मौखिक भाषा 2. लिखित भाषा–1. **मौखिक भाषा**–मुख से जो कुछ बोला तथा कानों से सुना जाता है, वह भाषा का मौखिक रूप है। 2. **लिखित भाषा**–अपने भावों या विचारों को लिखकर प्रकट करना भाषा का लिखित रूप है।

3. भाषा के लिखित रूप द्वारा भाव या विचारों को दीर्घकाल तक सुरक्षित रखा जा सकता है।

4. बोलते समय मुख से अनेक ध्वनियाँ निकलती हैं। इन ध्वनियों को लिखने के लिए कुछ चिह्न निर्धारित किए जाते हैं। उन चिह्नों को लिखने की रीति लिपि कहलाती है। हिन्दी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है।

5. व्याकरण वह भाषा है जिसकी सहायता से व्यक्ति शुद्ध लिखना, पढ़ना तथा बोलना सीखता है।

(च) 1. मौखिक भाषा 2. लिखित भाषा 3. लिखित भाषा 4. मौखिक भाषा 5. मौखिक भाषा

(छ) राष्ट्रभाषा–कोई भाषा विकसित होते-होते जब इस स्थित में पहुँच जाती है कि संपूर्ण राष्ट्र के अधिकांश लोग दैनिक जीवन में उसका व्यवहार करने लगते हैं, तो वह भाषा राष्ट्रभाषा कहलाती है।

मातृभाषा–बालक अपने परिवार अथवा माता से जो भाषा सीखता है, उसे मातृभाषा कहते हैं।

2. वर्ण-विचार

(क) 1. (स) 2. (अ) 3. (स) 4. (ब) 5. (स)

(ख) 1. अयोगवाह 2. स्वरों 3. अनुस्वार 4. विसर्ग 5. अंत:स्थ

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

(घ) 1. वह छोटी-से-छोटी ध्वनि जिसके और टुकड़े न किए जा सकें वर्ण कहलाती है। दो भेद हैं- 1. स्वर 2. व्यंजन

2. किसी भाषा में प्रयुक्त होने वाले सभी वर्णों के क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहते हैं।

3. जिन वर्णों के उच्चारण में मुख से निकलने वाली वायु बिना किसी रूकावट के मुख से बाहर निकल जाए, उन्हें स्वर कहते हैं।

4. शब्द-रचना में व्यंजनों के बाद आने वाले स्वर का रूप परिवर्तित हो जाता है। इस परिवर्तित रूप को मात्रा कहते हैं।

5. स्वर दो प्रकार के होते हैं-1. ह्रस्व स्वर 2. दीर्घ स्वर। **ह्रस्व स्वर** - जिन स्वरों के उच्चारण में समय कम लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। अ, इ, उ और ऋ ह्रस्व स्वर हैं। **दीर्घ स्वर** - जिन स्वरों के उच्चारण में अधिक समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। आ, ऊ, ई, ए, ऐ, ओ, औ आदि दीर्घ स्वर

हैं।

6. व्यंजन को तीन वर्गों में बाँटा जाता है – 1. स्पर्श व्यंजन 2. अंत:स्थ व्यंजन 3. ऊष्म व्यंजन। **स्पर्श व्यंजन** – जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जीभ मुख के विभिन्न स्थानों का स्पर्श करती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। उदाहरण : क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग आदि। **अंत:स्थ व्यंजन** – जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जीभ मुख के किसी भाग से पूरी तरह स्पर्श नहीं करती, उन्हें अंत:स्थ व्यंजन कहते हैं। उदाहरण : य, र, ल, व। **ऊष्म व्यंजन** – इनका उच्चारण करते समय हवा के तेज गति से मुँह से रगड़ खाने के कारण ऊष्मा सी पैदा होती है। इन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। उदाहरण : श, ष, स, ह।

(ङ) अंग–अनुस्वार, कंघा–अनुस्वार, पाँच–अनुनासिक, आँख–अनुनासिक, गाँठ–अनुनासिक, कुंडा–अनुस्वार, ऊँट–अनुनासिक, पंच–अनुस्वार, टाँग–अनुनासिक

(च) **ड**–डमरू, डिब्बा, डंडा; **ड़**–खिड़की, कड़वा, कंकड़; **ढ**–ढक्कन, ढोलक, ढलान; **ढ़**–पढ़ाई, कढ़ाई, बढ़ाई

(छ) संयुक्त व्यंजन–क्षमा, यज्ञ, श्रवण, पत्र

द्वित्व व्यंजन–भट्टी, पत्ता, मक्का, छप्पर

3. शब्द-विचार

(क) 1. (ब) 2. (स) 3. (स) 4. (अ) 5. (स)

(ख) 1. पर्यायवाची 2. प्रचलित 3. तत्सम 4. तत्सम 5. देशज

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗

(घ) 1. दो या दो से अधिक वर्णों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं।

2. शब्द जब किसी वाक्य में प्रयुक्त होते हैं तो वे पद कहलाते हैं।

3. शब्द वर्णों के मेल से बनते हैं जबकि पद शब्दों के वाक्य में प्रयुक्त होने के बाद बनते हैं।

4. अर्थ के आधार पर-सार्थक व निरर्थक।

5. रचना के आधार पर शब्द के तीन भेद हैं–1. रूढ़ शब्द 2. यौगिक शब्द 3. योगरूढ़ शब्द

6. उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के चार भेद होते हैं। 1. तत्सम 2. तद्भव 3. देशज 4. विदेशी या आगत।

7. ऐसे शब्द जिनके रूप वाक्य में प्रयुक्त लिंग, वचन व कारक के अनुसार बदल जाते हैं, विकारी शब्द कहलाते हैं।

8. ऐसे शब्द जिन्हें वाक्य में प्रयोग करने पर भी उनका रूप नहीं बदलता, अविकारी शब्द कहलाते हैं।

(ङ) रूढ़ शब्द–घोड़ा, लड़का, हाथी, बकरी, गधा

यौगिक शब्द–सेनापति, पाठशाला, गौशाला, राष्ट्रपति, राष्ट्रभाषा

योगरूढ़ शब्द–निशाचर, पंकज, आस्तिक, नास्तिक

(च) सार्थक शब्द–सौगंध, घी, जगह, कमीज, गरम, मुँह, माथा, पूत, मरीज, कप्तान, मोटर, पाँच, कोट, ईंट, बरगद

(छ) तत्सम शब्द–संस्कृत से हिन्दी में आए हुए वे शब्द जो अपने मूल रुप में ही प्रयोग किए जाते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं।

तद्भव शब्द–जो शब्द संस्कृत से हिन्दी में आ गये हैं परन्तु प्रयोग के कारण उनके रूप में परिवर्तन हो गया है। उन्हें तद्भव शब्द कहते हैं।

4. शब्द-भंडार

(क) 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (ब) 5. (स) 6. (ब) 7. (स) 8. (ब) 9. (स) 10. (स) 11. (स) 12. (ब) 13. (अ) 14. (ब) 15. (स)

(ख) अमृत–अमिय, अमी, पीयूष

कंजूस–कृपण, अनुदार, मक्खीचूस

दीपावली–दीपदानोत्सव, दीवाली, दीपोत्सव

हवा–वायु, पवन, अनिल

ईश्वर–भगवान, प्रभु, परमेश्वर

बंदर–कपि, हरि, वानर

पृथ्वी–अचला, अवनि, धरती

पानी–जल, अंबु, वारि

(ग) धर्म–अधर्म, उन्नति–अवनति, पूर्ण–अपूर्ण, रिक्त–पूर्ण, योग्य–अयोग्य, पक्ष–विपक्ष, आस्तिक–नास्तिक, अंश–पूर्ण, विजय–पराजय, रोगी–नीरोगी, खिन्न–प्रसन्न, साकार–निराकार, क्रोध–क्षमा, उत्थान–पतन, दुर्भाग्य–सौभाग्य, अंतिम–पहला

(घ) 1. अमर 2. ज्ञानी 3. हस्तलिखित 4. मितव्ययी 5. अनाथ 6. मितभाषी 7. वाचाल 8. सहपाठी 9. त्रैमासिक 10. भाग्यवान

(ङ) 1. **अमूल्य**–जो अधिक से अधिक मूल्य देने पर भी न मिल सके।

बहुमूल्य–अधिक मूल्य वाला।

2. **अस्त्र**–फेंककर चलाया जाने वाला हथियार, जैसे–बाण, भाला आदि।

शस्त्र–हाथ में पकड़कर चलाया जाने वाला हथियार, जैसे–तलवार, लाठी आदि।

3. **अपराध**–सामाजिक नियमों का उल्लंघन।

पाप–नैतिक नियमों का उल्लंघन।

4. **भागना**–भय के कारण।

दौड़ना–स्वाभाविक दौड़।

5. **मनुष्य**–मानव जाति का सदस्य (स्त्री या पुरुष)।

पुरुष–मनुष्य जाति का नर रूप।

(च) प्रसाद–कृपा, प्रासाद–महल, अधर–ओंठ, आधार–सहारा, तरंग-लहर, तुरंग–घोड़ा, दंश–डंक, दश–दस, निहार–देखना, बहू–पुत्र की पत्नी, बहु–बहुत, अधम–नीच, अधर्म–पाप, नियत–निश्चित, नीयत-इरादा, अवलंब–सहारा, अविलंब–शीघ्र, नीहार–ओस

(छ) कमर–पृष्ठ, दरवाजा–द्वार, आँसू–अश्रु, नाक–नासिका, नाच–नृत्य, रात–रात्रि, भौंरा–भ्रमर, काम–कर्म, हाथ–हस्त

(ज) 1. जिन शब्दों के अर्थ में समानता हो उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

2. एक दूसरे के विपरीत अर्थ बताने वाले शब्दों को विलोम शब्द कहते हैं।

3. शब्दों के समूह के लिए एक शब्द का प्रयोग करना, वाक्यांश के लिए एक शब्द कहलाता है।

4. प्राय: पर्यायवाची शब्दों का अर्थ लगभग समान होता है परंतु कुछ शब्दों के अर्थ में थोड़ा भेद होता है। ऐसे शब्द एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द होते हैं।

5. मुहावरे और लोकोक्तियाँ

(क) 1. (द) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ) 5. (स) 6. (स) 7. (द) 8. (स) 9. (ब) 10. (द)

(ख) 1. जिन वाक्यांशों का सामान्य या शाब्दिक अर्थ न होकर विशिष्ट अर्थ होता है, वे मुहावरे कहलाते हैं।

2. लोगों में बहुप्रचलित कथन को लोकोक्ति कहते हैं।

3. लोकोक्ति पूर्ण वाक्य होती है, जबकि मुहावरा वाक्यांश या खंड-वाक्य होता है।

(ग) 1. (बहुत भूख लगना)–कब से पेट में चूहे कूद रहे हैं, कुछ तो खाने को दो।

2. (हराना)–भारतीय सेना ने पाक सेना के दाँत खट्टे कर दिए।

3. (अत्यधिक क्रोधित होना)–वह तो जरा-सी बात पर आग बबूला हो जाता है।

4. (खुशी मनाना)–देश को स्वतंत्रता मिलने पर देशवासियों ने घी के दीये जलाये थे।

5. (किसी के विरुद्ध शिकायत करना)–दीपक ने रवि के विरुद्ध अध्यापक के कान भर दिए।

(घ) 1. (र) 2. (द) 3. (अ) 4. (ब) 5. (य) 6. (स)

(ङ) 1. पत्थर की लकीर 2. आस्तीन का साँप 3. बगुला भगत 4. गाल बजाना

6. संज्ञा

(क) 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (ब) 5. (ब) 6. (ब) 7. (ब)

(ख) 1. वृक्ष 2. दिल्ली 3. मनमोहन सिंह 4. प्रतिभा देवी सिंह पाटिल 5. खिलाड़ी

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(घ) 1. किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, भाव या अवस्था के नाम को संज्ञा कहते हैं। संज्ञा के पाँच भेद होते हैं–1. व्यक्तिवाचक संज्ञा 2. जातिवाचक संज्ञा 3. भाववाचक संज्ञा 4. समूहवाचक संज्ञा 5. पदार्थवाचक संज्ञा

2. जिन संज्ञा शब्दों से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु व स्थान का बोध होता है, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। उदाहरण : राम, कृष्ण, ताजमहल आदि।

3. जिन संज्ञा शब्दों से एक ही जाति अथवा वर्ग के सभी प्राणियों, वस्तुओं अथवा स्थानों आदि का बोध हो, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। उदाहरण–शहर, गाय।

4. जिन संज्ञा शब्दों से किसी प्राणी अथवा पदार्थ के गुण, दोष, अवस्था या दशा का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे–बचपन, मिठास।

5. जिन संज्ञा शब्दों से किसी प्राणी या वस्तु के समूह का बोध होता है, उन्हें समुदायवाचक संज्ञा कहते हैं। उदाहरण–पुस्तकालय, भीड़।

6. जिन संज्ञा शब्दों से पदार्थ का बोध होता है, उन्हें पदार्थवाचक संज्ञा कहते हैं।

(ङ) बच्चा–बचपन, लड़का–लड़कपन, चलना–चाल, हँसना–हँसी, शीघ्र–शीघ्रता, अपना–अपनापन, बड़ा–बड़प्पन, भला–भलाई,

नित्य–नित्यता, निकट–निकटता, प्यासा–प्यास, सफेद–सफेदी

(च) 1. ढलना 2. पानी 3. पक्षी 4. दूध 5. बच्चा 6. लोहा 7. शहद 8. हरिद्वार 9. मेले 10. गाँव

(छ) 1. लड़ाई 2. मित्रता 3. भलाई 4. ईमानदारी 5. ध्यान

(ज) 1. पक्षी 2. सेब 3. बिल्ली 4. हाथी 5. कुत्ता

(झ) 1. दिल्ली 2. सुभाषचंद्र बोस 3. भारतवर्ष 4. रवि, मोहन 5. मीरा, कृष्ण

(ञ) सुख-दुख–हर व्यक्ति के जीवन में सुख-दुख तो आता ही है।

सोना-चाँदी–सोना-चाँदी का प्रयोग आभूषणों में किया जाता है।

रात-दिन–जो रात-दिन मेहनत करता है, उसे सफलता अवश्य मिलती है।

माता-पिता–हमें माता-पिता का सम्मान करना चाहिए।

भाई-बहन–सोनू और मोनी भाई-बहन हैं।

दूध-पानी–चोर के पकड़े जाने पर दूध का दूध और पानी का पानी हो गया।

कुत्ते-बिल्ली–कुत्ते-बिल्ली कभी मित्र नहीं हो सकते।

गाय-भैंस–गाय-भैंस घरेलू जानवर हैं।

7. लिंग

(क)1. (ब) 2. (अ) 3. (अ) 4. (ब) 5. (अ)

(ख)1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग 3. सिंह 4. कवयित्री 5. स्त्रीलिंग

(ग) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓5. ✓

(घ) 1. चाचीजी गाँव गयी हैं।

2. अध्यापिका छात्रों को पढ़ाएँगी।

3. धोबिन ने सारे कपड़े धो दिए।

(ङ) 1. संज्ञा में विकार निम्न कारणों से होता है। (1) लिंग के कारण (2) वचन के कारण (3) कारक के कारण

2. शब्द के जिस रूप से यह बोध हो कि वह शब्द पुरुष जाति के लिए प्रयोग किया गया है या स्त्री जाति के लिए, उसे लिंग कहते हैं। जैसे–लड़का, लड़की।

3. शब्द के जिस रूप से स्त्री या मादा जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं। उदाहरण–लड़की, गाय, बकरी।

4. शब्द के जिस रूप से पुरुष या नर जाति का बोध होता है, उसे पुल्लिंग कहते हैं। उदाहरण–लड़का, कुत्ता, वर।

(च) मकड़ी–स्त्रीलिंग, धोबी–पुल्लिंग, डिब्बा–पुल्लिंग, पक्षी–पुल्लिंग, गिलहरी–स्त्रीलिंग, पति–पुल्लिंग, ग्वाला–पुल्लिंग, बेटा–पुल्लिंग, मास्टर–पुल्लिंग, छात्र–पुल्लिंग, माली–पुल्लिंग, मच्छर–पुल्लिंग।

(छ) बालिका–बालक, वधू–वर,
डिबिया–डिब्बा, चौधरानी–चौधरी, प्रिया–प्रिय,
माता–पिता, मादा कौआ–कौआ, वीरांगना–वीर,
नायिका–नायक, गायिका–गायक, बहन–भाई,
दादी–दादा।

(ज) राजा–रानी, बोरा–बोरी, दास–दासी, लुटिया–लोटा, उल्लू–मादा उल्लू, घोड़ा–घोड़ी, पहाड़–पहाड़ी, पुरूष-स्त्री, लेखिका–लेखक, बिच्छू–मादा बिच्छू।

8. वचन

(क) 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (ब) 5. (ब)

(ख) 1. स्त्रियाँ 2. लड़कियाँ 3. लताएँ 4. कुत्ते 5. कौए

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

(घ) रोटी–रोटियाँ, लोटा–लोटे, कपड़ा–कपड़े, चादर–चादरें, धारा–धाराएँ, बहू–बहुएँ, मक्खी–मक्खियाँ, ताला–ताले, चारपाई–चारपाइयाँ, जूँ–जुएँ, पंखा–पंखे, तिथि–तिथियाँ।

(ङ) 1. शब्द के जिस रूप से उसकी संख्या का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं।

2. शब्द के जिस रूप से किसी एक प्राणी, वस्तु, स्थान आदि का बोध होता है उसे एकवचन कहते हैं।

3. शब्द के जिस रूप से एक से अधिक प्राणियों, वस्तुओं, स्थानों आदि का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं।

4. (1) स्त्रीलिंग शब्दों के अंतिम स्वर 'अ' के स्थान पर 'ऐं' कर देने से–गाय से गायें

(2) स्त्रीलिंग शब्दों के अंतिम स्वर 'आ' के बाद 'एँ' जोड़ देने से–माता से माताएँ

(3) अंतिम वर्ण 'या' के ऊपर चंद्रबिंदु लगाने से–चुहिया से चुहियाँ।

(च) जल, मल, क्रोध, क्षमा, याचना, प्रेम, जनता,

वर्षा

(छ) केश, आँसू, दर्शन, हस्ताक्षर, प्राण, होश, प्रजा, परिवार

(झ) घोड़ा–घोड़े, ध्वनि–ध्वनियाँ, ठप्पा–ठप्पे, चींटी–चींटियाँ, सभा–सभाएँ, नाला–नाले, केला–केले, खूँटी–खूँटियाँ

9. कारक

(क)1. (अ) 2. (स) 3. (स) 4. (स) 5. (अ)

(ख) 1. से 2. पर 3. को 4. की 5. पर 6. से, को 7. से 8. के लिए

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(घ) 1. यह घोड़ा रामू का है। 2. नौकर मालिक के लिए पानी लाया। 3. मामा बाग में गया है। 4. नेताजी ने भाषण दिया। 5. पेड़ से फल टूट कर नीचे गिर पड़ा।

(ङ) 1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध क्रिया के साथ जाना जाता है, इसे कारक कहते हैं।

2. संज्ञा या सर्वनाम शब्दों का क्रिया से संबंध प्रकट करने वाले शब्दों को कारक चिह्न या परसर्ग कहते हैं।

3. कर्ता कारक, कर्म कारक, करण कारक, संप्रदान कारक, अपादान कारक, संबंध कारक, अधिकरण कारक, संबोधन कारक।

(च) 1. संबंध कारक 2. अधिकरण कारक 3. संबोधन कारक 4. अधिकरण कारक 5. करण कारक 6. अपादान कारक 7. संप्रदान कारक 8. हरि – कर्ता कारक, राम – कर्म कारक

(छ) 1. अंशुल ने पुस्तक पढ़ी। 2. अमित ने सुनंदा को देखा। 3. बंदर छत से कूद पड़ा। 4. भक्त देवता के लिए पुष्प लाया। 5. चिड़िया पेड़ पर बैठी है। 6. मैं बस के द्वारा दिल्ली गया। 7. मछली पानी में रहती है।

10. सर्वनाम

(क) 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (ब) 5. (स) 6. (अ)

(ख) स्वयं–निजवाचक सर्वनाम, कोई–अनिश्चयवाचक सर्वनाम, कौन–प्रश्नवाचक सर्वनाम, मैं–पुरुषवाचक सर्वनाम, यह–निश्चयवाचक सर्वनाम

(ग) 1. तुम, मध्यम पुरुष 2. वह, अन्य पुरुष 3. वह, अन्य पुरुष 4. जो/वही, अन्य पुरुष 5. मैं, उत्तम पुरुष

(घ) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(ङ) 1. संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

2. सर्वनाम के छः भेद होते हैं–1. पुरुषवाचक सर्वनाम 2. प्रश्नवाचक सर्वनाम 3. निश्चयवाचक सर्वनाम 4. सम्बन्धवाचक सर्वनाम 5. अनिश्चयवाचक सर्वनाम 6. निजवाचक सर्वनाम

3. जो सर्वनाम किसी पुरुष के नाम के स्थान पर प्रयोग में लाए जाते हैं, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं, जैसे–मैं, वे, हम, तुम, आप।

4. निश्चयवाचक सर्वनाम दूर या पास की वस्तु की ओर संकेत करता है जबकि अनिश्चयवाचक में ऐसा नहीं है।

5. जो सर्वनाम एक शब्द के दूसरे सर्वनाम शब्दों के साथ सम्बन्ध दर्शाते हैं, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं।

6. (स्वयं करें)

(च) 1. वे लोग आ गए हैं। 2. यह किसका सामान है? 3. मैं किसी आदमी को नहीं जानता। 4. जिस आदमी ने यह बात कही, वह झूठा है। 5. मैं अपना काम कर रहा हूँ। 6. तू अपना काम कर। 7. मुझे वहाँ जाना है। 8. मैं प्रथम आया तो तुझे दुख क्यों हुआ ?

11. विशेषण

(क) 1. (स) 2. (अ) 3. (स) 4. (स) 5. (स) 6. (अ)

(ख) 1. भारतीय 2. बुद्धिमान 3. दोषी 4. वैज्ञानिक 5. विषैला

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

(घ) 1. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताएँ, उन्हें विशेषण कहते हैं।

2. विशेषण के मुख्यतः पाँच भेद होते हैं–1. गुणवाचक 2. परिमाणवाचक 3. संख्यावाचक 4. संकेतवाचक 5. व्यक्तिवाचक

3. जिस शब्द की विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहते हैं।

4. जिस शब्द से संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दशा, स्वभाव आदि का बोध हो, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

5. जो विशेषण किसी वस्तु की नाप-तौल या मात्रा बताते हैं, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे–मुझे थोड़ा अनाज दो।

6. जो विशेषण संज्ञा अथवा सर्वनाम की संख्या बताते हैं, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; उदाहरण–मैंने पाँच पैंसिल खरीदीं।

(ङ) रंग–काला, हरा, नीला
आकार–लम्बा, नुकीला, गोल
गुण–अच्छा, सच्चा, दानी

(च) मूर्ख-व्यक्ति, ठंडा-पानी, हरी-मिर्च, काली-गाय, ऊँचे-पर्वत, मीठा-रस

(छ) उच्च–मूलावस्था, अधिकतम–उत्तमावस्था, प्रियतर–उत्तरावस्था, श्रेष्ठतम–उत्तमावस्था, महानतर–उत्तरावस्था, कोमलतर–उत्तरावस्था, मधुरतम–उत्तमावस्था, अधिक–मूलावस्था, सुंदर–मूलावस्था, योग्य–मूलावस्था, तीव्र–मूलावस्था, निकटतम–उत्तमावस्था

(ज) 1. कुछ 2. असंख्य 3. चतुर 4. काले 5. पाँच किलो 6. काला

(झ) मूल विशेषण - कुछ शब्द अपने मूल रूप में ही विशेषण होते हैं; जैसे - अच्छा, बुरा, काला, गोरा आदि।

यौगिक विशेषण - एक से अधिक शब्दों से मिलकर बने विशेषण यौगिक विशेषण कहलाते हैं; जैसे - बहुत अच्छा, बहुत सुंदर आदि।

12. क्रिया तथा काल

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (स) 6. (ब) 7. (अ) 8. (स) 9. (स) 10. (ब)

(ख) 1. करो 2. किया 3. किया

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(घ) 1. अपूर्ण भूत 2. वर्तमान काल 3. हेतु-हेतुमद् भूत 4. भविष्यत् काल 5. संदिग्ध भूत 6. भविष्यत् काल

(ङ) 1. मैं स्कूल जाऊँगा। 2. दिनेश गेंद फेंक रहा है। 3. मोची जूते बनाता था।

(च) 1. खेल रहा है 2. दौड़ता है 3. बजाता है 4. पढ़ाई 5. याद कर रहा है।

(छ) 1. लिखूँगा। (लिख) 2. लाई। (ला) 3. खाया। (खा) 4. पकड़ता। (पकड़) 5. खेल। (खेल)

(ज) 1. जिन शब्दों से किसी काम के करने या होने का पता चलता है, उन्हें क्रिया कहते हैं।

2. क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं।

3. जब वाक्य में क्रिया के साथ कर्म भी हो तो क्रिया को सकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे–गाय चरती है।

4. सकर्मक क्रिया में कर्म होता है जबकि अकर्मक क्रिया में नहीं होता।

5. संज्ञा, सर्वनाम व विशेषण आदि शब्दों से बनने वाली क्रिया को नामधातु क्रिया कहते हैं; उदाहरण–लज्जा-लजाना।

6. क्रिया के जिस रूप से कार्य के करने या होने का बोध हो, उसे काल कहते हैं।

7. (1) सामान्य भूतकाल (2) आसन्न भूतकाल (3) पूर्ण भूतकाल (4) अपूर्णभूत (5) संदिग्ध भूत (6) हेतुहेतुमद् भूत।

(झ) भूतकाल–क्रिया के जिस रूप से बीते हुये समय में कार्य के सम्पन्न होने का बोध होता है, उसे 'भूतकाल' कहते हैं। उदा० वह दौड़ी।

वर्तमान काल–क्रिया के जिस रूप से कार्य के वर्तमान समय में होने का बोध होता है, उसे 'वर्तमान काल' कहते हैं। उदा० मैं जा रहा हूँ।

भविष्यत् काल–क्रिया के जिस रूप से आने वाले समय में कार्य होने का बोध होता है, उसे 'भविष्यत् काल' कहते हैं। उदा० श्वेता कल भजन गाएगी।

प्रेरणार्थक क्रिया–जिन क्रियाओं में कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे को प्रेरित करके कार्य करवाता है, उन्हें 'प्रेरणार्थक क्रियाएँ' कहते हैं। उदा० रोहन ने सतीश से पत्र लिखवाया।

नामधातु क्रिया–संज्ञा, सर्वनाम व विशेषण आदि शब्दों से बनने वाली क्रिया को नामधातु क्रिया कहते हैं। उदा० हाथ-हथियाना, लज्जा–लजाना, ठोकर–ठुकराना।

13. अविकारी शब्द

(क) 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (ब) 5. (स) 6. (स) 7. (स) 8. (स) 9. (अ) 10. (ब)

(ख) 1. व्यय 2. अविकारी 3. अव्यय 4. समय 5. रीतिवाचक 6. घृणा

(ग) 1. आगे-आगे, पीछे-पीछे 2. सर्वत्र 3. अचानक 4. तेज

(घ) 1. के मारे 2. के बिना 3. के आगे 4. से पहले

(ङ) 1. और 2. अपितु 3. परंतु 4. या, या

(च) 1. अरे-आश्चर्य 2. अहा-हर्ष 3. राम-राम–घृणा 4. अच्छा-अनुमति

(छ) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण–वह बहुत पढ़ता है। वह कम सोता है। **स्थानवाचक क्रियाविशेषण**–वह ऊपर बैठी है। तुम आगे चलो।

(ज) 1. जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रियाविशेषण कहते हैं। उदा० कम खाओ।

2. जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ जाना जाता है, उन्हें संबंधबोधक कहते हैं। उदा०राम छत के ऊपर खड़ा था।

3. जो अविकारी शब्द दो शब्दों, दो वाक्यों अथवा वाक्यांशों को जोड़ने का कार्य करता है, उसे समुच्चयबोधक कहते हैं। उदा०–दो और दो चार होते हैं।

4. क्रियाविशेषण के भेद–(1) कालवाचक (2) स्थानवाचक (3) परिमाणवाचक (4) रीतिवाचक। जो क्रियाविशेषण क्रिया के होने का समय सूचित करते हैं, उन्हें कालवाचक कहते हैं। उदा०–वह कल आएगा।

5. जो क्रियाविशेषण क्रिया के स्थान या दिशा का ज्ञान कराए, उसे स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं। उदा०–वह इधर नहीं आया।

6. जिन क्रियाविशेषणों से क्रिया की अधिकता, न्यूनता आदि परिमाण का पता लगे, उन्हें परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं। उदा०–वह बहुत हँसा।

7. जिन क्रियाविशेषणों से क्रिया के होने के ढंग का पता चले, उन्हें रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं। उदा०–धीरे-धीरे चलो।

8. उदा०–अरे! इतना बड़ा अजगर। अरे शब्द आश्चर्य प्रकट कर रहा है। ऐसे शब्द विस्मयादिबोधक अव्यय कहलाते हैं।

(झ) 1. अहा 2. अरे 3. छि: 4. अरे 5. हाय 6. अहा

(ञ) चूँकि–उसने कल कार्य नहीं किया चूँकि वह कल बीमार था।

ताकि–उसने झूठ बोला ताकि वह तुम्हें बचा सके।

के बिना–विद्या के बिना मनुष्य पशु के समान है।

के सामने–घर के सामने मंदिर है।

14. विराम-चिह्नों का प्रयोग

(क) 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (अ) 5. (ब) 6. (स)

(ख) विवरण-चिह्न–(–), कोष्ठक–(()), प्रश्नवाचक–(?), उद्धरण-चिह्न–('.....'), विस्मयादिबोधक-चिह्न–(!)

(ग) प्रश्नवाचक-चिह्न–तुम्हारा क्या नाम है ?

विस्मयादिबोधक-चिह्न–अहा! कितना अच्छा मौसम है।

अल्पविराम–राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न भाई थे।

अर्धविराम–जल्दी चलो; अंधेरा हो गया है।

कोष्ठक–मोहन ने सारा सामान (थैला, अटैची, बिस्तर आदि) गाड़ी में लाद दिया है।

उद्धरण-चिह्न–नेताजी ने कहा था, ''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।''

योजक-चिह्न–माता-पिता

(घ) 1. बोलते या पढ़ते समय वाक्य के बीच में अथवा अन्त में रुकना पड़ता है। रुकने की इस प्रक्रिया को विराम कहते हैं।

2. बोलते या पढ़ते समय वाक्य के बीच में अथवा अंत में रुकना पड़ता है। रुकने से वाक्य का सही अर्थ समझने में सुविधा होती है। लिखते समय रुकने की इस प्रक्रिया को स्पष्ट करने के लिए कुछ संकेत-चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। इन चिह्नों को विराम-चिह्न कहते हैं।

3. यदि विराम-चिह्न का प्रयोग न हो तो हम वाक्य को स्पष्ट रूप से नहीं समझ पायेंगे। उदा०–वह गाना गाता है।

4. पूर्ण-विराम सदैव वाक्य के अंत में लगाया जाता है जबकि अल्पविराम वाक्य के बीच में लगाया जाता है।

5. जब हम किसी से प्रश्न पूछते हैं, तब प्रश्न चिह्न प्रश्न के अंत में लगाया जाता है।

(ङ) 1. गाँधीजी ने वकालत क्यों छोड़ी ?

2. तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना की।

3. भीलराज - ''राजन्, आप क्या चाहते हैं?''
राजा-युद्ध।

4. पुस्तक, कुत्ता तथा दिल्ली अथवा किसान पर एक अनुच्छेद लिखिए।

5. गाँव में एक बूढ़ा व्यक्ति रहता था। उसके चार

बेटे थे। उनमें मेल नहीं था। वे सदैव आपस में लड़ते रहते थे। 6. सतीश, दिनेश और राजीव कल तुम्हारे घर आएँगे।

7. गुरुजी ने छात्रों से कहा, ''परिश्रम सफलता की कुंजी है।''

व्याकरण मेदिनी-5

1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. (अ) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (स)

(ख) 1. बोली 2. बोली 3. मौखिक 4. व्याकरण 5. व्याकरण

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(घ) 1. जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों के सामने प्रकट करता है और दूसरों के विचार समझता है, उसे भाषा कहते हैं। 2. एक मनुष्य को अपने विचार दूसरे मनुष्य तक पहुँचाने के लिए भाषा की आवश्यकता होती है। 3. व्याकरण की दृष्टि से भाषा के दो रूप हैं– 1. मौखिक भाषा 2. लिखित भाषा .. .. पढना और समझना। 4. भाषा के क्षेत्रिय रूप को बोली कहते हैं। 5. ऐसे चिह्न जिन्हें हम भाषा लिखने में प्रयोग करते हैं, उनका समन्वित रूप लिपि कहलाता है। 6. व्याकरण के अध्ययन से मनुष्य किसी भाषा को शुद्ध लिखना, शुद्ध पढ़ना, शुद्ध बोलना सीखता है तथा भाषा पर नियंत्रण भी करना सीखता है।

(ङ) 1. लिखित 2. लिखित 3. मौखिक 4. लिखित 5. मौखिक

(च) 1. (ल) 2. (व) 3. (य) 4. (र) 5. (स) 6. (ब) 7. (अ) 8. (द)

2. वर्ण-विचार

(क) 1. (ब) 2. (अ) 3. (स) 4. (स) 5. (स)

(ख) 1. स्वरों 2. वर्ण 3. कंठ 4. शब्द 5. क्रमिक 6. दो

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

(घ) मुख, दाँत, मूर्धा, कंठ, जिह्वा

(ङ) अनुस्वार, अनुनासिक, अनुस्वार
अुनस्वार, अनुनासिक, अनुस्वार
अनुनासिक, अनुस्वार, अनुनासिक
अनुस्वार, अनुस्वार, अनुस्वार।

(च)

ऊष्म	अंत:स्थ
स्पर्श	स्पर्श
स्पर्श	स्पर्श
अंत: स्थ	स्पर्श
स्पर्श	ऊष्म
स्पर्श	स्पर्श

(छ) 1. भाषा की सबसे छोटी ध्वनि के संकेत जिसके और टुकड़े ना किए जा सकें, वर्ण कहते हैं। 2. किसी भाषा में प्रयुक्त होने वाले सभी वर्णों के क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहते हैं। 3. 1. ह्रस्व स्वर ..... दीर्घ स्वर कहते हैं। 4. जब किसी स्वर को किसी व्यंजन के साथ मिलाया जाता है, तो उसका रूप परिवर्तित हो जाता है। स्वर परिवर्तित रूप या चिह्न को मात्रा कहते हैं। 5. स्वर तथा व्यंजन से भिन्न ध्वनि होने के कारण इनका किसी से योग नहीं हैं इसलिए ये अयोगवाह कहलाते हैं। 6. संयुक्त व्यंजन– जब दो व्यंजनों के बीच .... क् + ख = क्ख = अक्खड़।

(ज) 1. जिन वर्णों के उच्चारण में प्राणवायु कम मात्रा में बाहर निकलती है, अथवा जिनमें उच्चारण में 'हकार' की ध्वनि नहीं सुनाई पड़ती, उन्हें अल्पप्राण कहते हैं। 2. जिन व्यंजनों के उच्चारण में 'हकार' की ध्वनि विशेष रूप से सुनाई पड़ती है, उन्हें महाप्राण कहते हैं।

3. शब्द-विचार

(क) 1. (अ) 2. (अ) 3. (ब) 4. (स) 5. (स)

(ख) 1. तीन 2. निरर्थक 3. विकारी 4. यौगिक 5. एकार्थी

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗

(घ) देशज शब्द– रोटी, पानी, चाट, चुटकी
विदेशी शब्द– बटन, मीटर, कैमरा, सिनेमा
रूढ़ शब्द– देश, हाथी, घोड़ा, मोर
योगरूढ़ शब्द– चारपाई, पंकज, पीतांबर, लंबोदर
यौगिक शब्द– हिमालय, रसोईघर, विद्यालय, पुस्तकालय
मिश्रित (संकर) शब्द–रेलगाड़ी

(ङ) शेर-सिंह, बाघ-व्याघ्र, अँधेरा-अंधकार, चूरन-चूर्ण, उल्लू-उलूक, आधा-अर्ध, कपूर-कर्पूर, घिन-घृणा, चमड़ा-चर्म, गाँव-ग्राम, आज-अद्य, घंटी-घंटिका, आँख-अक्षि, चाँदनी-चंद्रिका, भीख-भिक्षा, उजाला-उज्जवल।

(च) 1. वर्णों या ध्वनियों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं। 2. उत्पत्ति के आधार पर शब्दों को भागों में

बाँटा गया है। 3. व्युत्पत्ति से तात्पर्य है-बनावट। इस आधार पर शब्दों के तीन भेद किये जाते हैं। (1) रूढ़ शब्द (2) यौगिक शब्द (3) योगरूढ़ शब्द उदाहरण- देश, हिमालय, चारपाई। 4. अर्थ के आधार पर शब्दों को निम्नलिखित भागों में बाँटा जा सकता है (1) एकार्थी (2) अनेकार्थी (3) समानार्थी या पर्यायवाची (4) विपरीतार्थी या विलोम। उदाहरण- गाय, उत्तर, जल और पानी, दिन व रात। 5. प्रयोग के आधार पर शब्दों को दो भागों में बाँटा गया है (1) विकारी शब्द (2) अविकारी शब्द। उदाहरण- लड़के जाते हैं। लड़के धीरे-धीरे चल रहे हैं। 6. जब शब्द किसी वाक्य या वाक्यांश का भाग बन जाते हैं, तब शब्द पद कहलाते हैं।

(छ) 1. तत्सम और तद्भव शब्द में तत्सम, संस्कृत शब्द होते हैं जबकि तदभ्व हिन्दी शब्द होते हैं।

2. विकारी और अविकारी शब्द में विकारी शब्द परिवर्तित नहीं होते।

4. शब्द-रचना

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (ब) 4. (स) 5. (अ) 6. (ब) 7. (स)

(ख) 1. अपना 2. पीछे 3. ध्वनियों 4. शब्दों 5. पास-पास

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

(घ) दिनेश, परोपकार, इत्यादि, सदैव, भानोदय, कवीन्द्र, स्वागत, वनौषधि, नयन, विद्यालय।

(ङ) 1. दो ध्वनियों के मेल को संधि कहते हैं उदाहरण- सदा + एव = सदैव। 2. दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से यौगिक शब्द बनाना समास कहलाता है। उदाहरण- कठपुतली। 3. शब्द-निर्माण के लिए शब्दों के पूर्व जो शब्दांश जोड़े जाते हैं वे उपसर्ग कहलाते हैं। उदाहरण- अज्ञान, अधर्म 4. नये शब्द की रचना हेतु मूल शब्दों के अंत में जो शब्दांश जोड़ा जाता है उसे प्रत्यय कहते हैं। उदाहरण- सिलाई, लिखाई।

(च) अज्ञान, अधर्म — उपनाम, उपकार
सुपुत्र, सुलभ — स्वतंत्र, स्वदेय
अनुकरण, अनुज — प्रतिदिन, प्रतिफल
अधिकार, अधिमास — सजीव, सफल

(छ) घुड़सवार, जन्मांध, तुलसी रचित, चौराहा, सेना का नायक = सेनापति।

पिता-पुत्र, हस्तशिल्प, पथभ्रमित, कार्यकुशल, परीक्षाभवन

(ज) ईय, आ, गर, उ, ला, वान

(झ) रंगीला, रुकावट, धार्मिक, बधाई, सहायता, बलवान।

5. शब्द-भंडार

(क) 1. (अ) 2. (स) 3. (अ) 4. (अ) 5. (अ) 6. (स)

(ख) 1. व्यय 2. सज्जन 3. प्रशंसा 4. निर्धन 5. मूर्ख

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(घ) 1. अपराध- सामाजिक और सरकारी कानूनों का उल्लंघन। पाप- नैतिक व धार्मिक नियम तोड़ना। 2. दुख- सामान्य पीड़ा। कष्ट- किसी कार्य से होने वाली पीड़ा। 3. दया- दूसरे के दु:ख दूर करने की इच्छा। कृपा- दूसरे की सहायता करने की सामान्य इच्छा 4. व्यय-खर्च। अपव्यय- फिजूल खर्च 5. ईर्ष्या- दूसरे की प्रगति देखकर बिना कारण ही जलना। द्वेष- किसी कारण शत्रुता का भाव रखना या जलना।

(ङ) 1. (ल) 2. (व) 3. (र) 4. (अ) 5. (स) 6. (ब) 7. (द) 8. (य)

(च) तारा-नक्षत्र, आँख की पुतली। कक्ष-कमरा, भूमि। दंड- सजा, डंडा। काल- मृत्यु, यमराज। घट-मन, कम। जाल-फरेब, जाला। पद-चिह्न, गीत। पक्ष-पंख, ओर। लक्ष-उददे्श्य, निशान। राशि-समूह, मेष। गति-हाल, चाल। अर्थ-मतलब, कारण। भूत-प्रेम, प्राणी। मधु-शहद, मदिरा। पत्र-चिट्ठी, पत्ता। पृष्ठ-पीछे का भाग, पन्ना।

(छ)

परमार्थ-स्वार्थ	आकाश-पाताल
पूर्ण-अपूर्ण	उदार-अनुदार
बलवान-बलहीन	गुण-अवगुण
कुटिल-सरल	दुर्बल-सबल
उत्तीर्ण-अनुत्तीर्ण	निर्मल-मलिन
छूत-अछूत	पाप-पुण्य
आस्तिक-नास्तिक	क्रम-विक्रम

(ज) 1. पर्याय का अर्थ होता है बदले में आने वाला। जो शब्द एक दूसरे के बदले प्रयुक्त हो सकें पर्यायवाची शब्द कहते हैं। 2. जो शब्द आपस में उल्टा अर्थ बताए उन्हें विलोम कहते हैं। 3. वाक्यांश के लिए एक शब्द से अभिप्राय है शब्दों के समूह के लिए एक शब्द का प्रयोग करना। उदाहरण- देश को

प्रेम करने वाला- देशप्रेमी। 4. कुछ शब्दों के प्रयोगानुसार अनेक अर्थ होते हैं ऐसे शब्द अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं।

(झ) पृथ्वी- भू, भूमि, धरा।
पुत्री- बेटी, आत्मजा, तनुजा।
वृक्ष- पेड़, विटप, पादप।
बिजली- विद्युत, चपला, चंचला।
झंड़ा- ध्वज, ध्वजा, निशान।
राजा- महीप, महीपति, नरेशपति।
किसान - कृषक, क्षेत्रक, क्षेत्रपति।

(ञ) 1. विशेषज्ञ 2. अग्रिम 3. परीक्षक 4. परीक्षार्थी 5. दूरदर्शी 6. द्रुतगामी 7. अवैतनिक 8. अवर्णनीय।

6. मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

(क) 1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (ब) 5. (अ) 6. (ब) 7. (ब) 8. (ब)

(ख) 1. उँगली उठाना 2. कलेजे पर साँप लोटने लगा। 3. कच्चा चिट्ठा खोल दूँगा। 4. अकल पर पत्थर पड़ गया है। 5. अँगार उगलने लगा।

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(घ) 1. ऐसे वाक्यांश जो सामान्य अर्थ की प्रतीति न कराकर विशेष अर्थ का बोध कराए, 'मुहावरा' कहलाता है। 2. लोगों में बहुप्रचलित कथन को लोकोक्ति कहते हैं। 3. मुहावरे वाक्यांश होते हैं, लोकोक्ति स्वतंत्र उक्ति या कथन होती है।

(ङ) 1. (र) 2. (य) 3. (ल) 4. (अ) 5. (ब) 6. (स) 7. (द)

(च) 1. बिजली समय पर न आने से कारखानों का उत्पादन कार्य खटाई में पड़ गया है। 2. आजकल कहाँ रहते हो मोहन? अब तो ईद का चाँद हो गये हो। 3. महापुरूष सबको एक नजर से देखते हैं। 4. दोनों भाई व्यवहार में उन्नीस-बीस हैं। 5. अच्छा है या बुरा दिनेश ही उसके घर का उजाला है। 6. जो योग्य होते हैं, वे अपने मुँह मियाँ मिट्ठू नहीं बनते। 7. निरंतर कार्य करने से मेरा अंग-अंग ढीला हो गया है। 8. अध्यापक के बाहर निकलते ही लड़कों ने आसमान सिर पर उठा लिया।

7. संज्ञा

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब) 5. (ब) 6. (ब) 7. (ब) 8. (ब)

(ख) 1. पढ़ाई 2. सफलता 3. सज्जनता 4. विनम्रता 5. खटास।

(ग)

नगर	जातिवाचक संज्ञा
लखनऊ	व्यक्तिवाचक संज्ञा
चाँदी	पदार्थवाचक संज्ञा
परिवार	समूहवाचक संज्ञा
घबराहट	भाववाचक संज्ञा

(घ) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(ङ) 1. किसी प्राणी, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। राम, मेरठ आदि। 2. हिन्दी में संज्ञा के निम्नलिखित भेद हैं-1. व्यक्तिवाचक संज्ञा 2. जातिवाचक संज्ञा 3. भाववाचक संज्ञा। 3. व्यक्तिवाचक संज्ञा- किसी विशेष ..... दिल्ली आदि। जातिवाचक संज्ञा ..... पेड़, पहाड़ आदि।

4. जिन संज्ञा शब्दों से किसी प्राणी या वस्तु के गुण, दशा, कार्य भाव आदि का बोध होता है। उदाहरण- सेना, भीड़। 5. जिन संज्ञा शब्दों से किसी समूह, समुदाय या झुंड का बोध होता है। उन्हें समूहवाचक संज्ञा कहते हैं। उदाहरण- सेना, भीड़ आदि। 6. जिन संज्ञा शब्दों से पदार्थ का बोध हो, उन्हें पदार्थवाचक संज्ञा कहते हैं। उदाहरण- सोना, आटा आदि।

(च) भाई-भाईचारा, तेज-तेजी, निज-निजता, मीठा-मिठास, दूर-दूरी, चुनना-चुनाव, जल्दी-जल्दबाजी, समीप-समीपता, भागना -भगदड़, बच्चा-बचपन, सेवा-सेवक, लड़का -लड़कपन, ऊँचा-उँचाई, मुस्कुराना-मुस्कुराहट

(छ) व्यक्तिवाचक संज्ञा- मोहन, हिमालय
जातिवाचक संज्ञा - किला, पहाड़
भाववाचक संज्ञा - ऊँचाई, बचपन
पदार्थवाचक संज्ञा - दूध, चाँदी
समूहवाचक संज्ञा - परिवार, सेना

8. लिंग

(क) 1. (अ) 2. (अ) 3. (स) 4. (अ) 5. (ब) 6. (ब) 7. (अ) 8. (ब)

(ख) 1. स्त्रीलिंग 2. पुल्लिंग 3. पुल्लिंग 4. स्त्रीलिंग 5. स्त्रीलिंग

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓

(घ) धावक-पुल्लिंग, डंडा-पुल्लिंग, मोती-पुल्लिंग, नाविक-पुल्लिंग, पत्ती-स्त्रीलिंग, बिंदु-स्त्रीलिंग, मामा-पुल्लिंग, पुष्प-पुल्लिंग, घोड़ा

– पुल्लिंग, कुत्ता–पुल्लिंग, शिष्या–स्त्रीलिंग, फूल – पुल्लिंग, लुटिया – स्त्रीलिंग, कुर्सी – स्त्रीलिंग, कली – स्त्रीलिंग, सम्राट – पुल्लिंग, पंड़ितायन – स्त्रीलिंग, सामग्री – स्त्रीलिंग, पाठक – पुल्लिंग, बहिन – स्त्रीलिंग, पानी – पुल्लिंग।

(ङ) घोड़ी–घोड़ा, वधू–वर, ससुर–सास, साँपिन–साँप, नौकर–नौकरानी, चोर–चोरनी, ठकुराइन–ठाकुर, अनुजा–अनुज, चौधरी–चौधाराइन, पंडित–पंडिताइन, मादा–नर, राजपूत–राजपूतनी, सेठानी–सेठ, कर्ता–कृत्री।

(च) 1. संज्ञा के जिस रूप से व्यक्ति या वस्तु, पुरूष या स्त्री होने का बोध होता है, उसे व्याकरण में लिंग कहते हैं। 2. हिन्दी में दो प्रकार के लिंग माने जाते हैं ..... चाँदी, अध्यापिका, मोरनी आदि। 3. ई, इया, इका, आ, नी, इन, इनी, मती, वती, आनी, त्री, आइन।

(छ) ई – मिठाई, सिलाई, लड़ाई, कढ़ाई, नाई
नी– रानी, पानी, नानी, कहानी, दानी
इन– चौधराइन, पंडिताइन, ठकुराइन, हीरोइन, साइन

9. वचन

(क) 1. (स) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब) 6. (ब)

(ख) 1. ताला 2. शाखाओं 3. केले 4. चादर 5. बच्चे

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(घ) 1. बहुवचन 2. एकवचन 3. एकवचन 4. बहुवचन।

(ङ) 1. गायकों ने अच्छे गीत गाये। 2. मेरी पुस्तक कहाँ है? 3. बच्चे भागते–भागते गिर गये। 4. अपनी कमीज वहाँ टाँग दो। 5. थैले में केला रखा हुआ है।

(च) 1. जिस शब्द से किसी वस्तु या पदार्थ के एक या अनेक होने का बोध होता हो, उसे वचन कहते हैं। 2. शब्द के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि वस्तु या व्यक्ति आदि की संख्या एक है उसे एक वचन कहते हैं। उदाहरण– घोड़ा, पुस्तक, लड़का। 3. शब्द के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि वस्तुओं या व्यक्तियों आदि की संख्या एक से अधिक हो, उसे बहुवचन कहते हैं। उदाहरण– लड़के, घोड़े आदि। 4. आदर प्रकट करने के लिए बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण– माता जी पूजा कर रही हैं। 5. व्यक्तिवाचक संज्ञा तथा भाववाचक संज्ञा, बहुवचन में प्रयोग किया जा सकता है, उदाहरण– देश में कभी दुर्योधनों की कमी नहीं रही।

(छ) दीवार–दीवारें, रात–रातें, चूहा–चूहे, कुर्सी–कुर्सियाँ, कन्या–कन्याएँ, चिड़िया–चिड़ियों, सपना–सपने, बहु–बहुएँ, पंखा–पंखे, घोड़ा–घोड़े, सूचना – सूचनायें, दिशा–दिशायें, वस्तु–वस्तुएँ, मेज–मेजें, पुस्तक–पुस्तकें।

(ज) ध्वनियाँ– ध्वनि, सेनाएँ– सेना, बहुएँ– बहू, पाठक वर्ग– पाठक, गलियाँ– गली, छात्रवृंद– छात्र, गरीब लोग– गरीब, सपने– सपना, देवगण– देव।

10. कारक

(क) 1. (अ) 2. (ब) 3. (स) 4. (अ) 5. (स)

(ख) 1. पर 2. पर, से, के, पर 3. का, से 4. ने 5. पर

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

(घ) 1. मैं पुस्तक पढ़ूँगा। 2. मुझे विद्यालय जाना है। 3. वह छत पर बैठा है। 4. हमने पाठ याद कर लिया है। 4. हमने पाठ याद कर लिया है। 5. सड़क पर मत खेलो।

(ङ) 1. करण 2. करण 3. करण 4. संबंध 5. कर्ता 6. कर्म

(च) 1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के करने का बोध होता है, उसे कारक कहते हैं। उदाहरण– आदित्य ने अपना जन्मदिन मनाया। 2. वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा या सर्वनाम शब्दों का क्रिया से संबंध प्रकट करने वाले शब्द–चिह्नों को कारक कहते हैं। 3. कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण, संबोधन

(छ) कर्ता कारक– 'कर्ता' का अर्थ है 'करनेवाला'। जो कई क्रिया करता है, उसे क्रिया का कर्ता कहा जाता है; जैसे मोहन ने गीत गाया। यहाँ क्रिया मोहन द्वारा संपादित हुई। अत: मोहन क्रिया का कर्ता है तथा वाक्य में मोहन कर्ताकारक है।

कर्म कारक– सकर्मक क्रिया वाले वाक्यों में क्रिया का प्रभाव जिस पर पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं।

करण कारक– संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के साधन का बोध होता है, उसे करण कारक कहते हैं।

संप्रदान कारक- जिसके लिए कुछ दिया जाये, उसे संप्रदान कारक कहते हैं।

आपादान कारक- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से 'अलग होने' का अर्थ प्रकट होता है, उसे अपादान कारक कहते हैं।

संबंध कारक- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध (लगाव, स्वत्व, अपनापन) किसी प्राणी या वस्तु से ज्ञात हो, उसे संबंध कारक कहते हैं।

(ज) कर्ता- ने। आपादान- से अलग होना। कर्म- को। संबंध- का, की, के, ना, नी, ने, रा, री, रे। करण- से, के द्वारा। अधिकरण- में, पे, पर। संप्रदान- के लिये, को। संबोधन- हे, अरे, ओ।

(झ) 1. अकारांत पुल्लिंग शब्द-रूप 2. आकारांत पुल्लिंग शब्द-रूप 3. इकारांत पुल्लिंग शब्द-रूप 4. उकारांत पुल्लिंग शब्द-रूप 5. इकारांत पुल्लिंग शब्द रूप 6. उकारांत पुल्लिंग शब्द-रूप।

(ञ) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के साधन का बोध होता है, उसे करण कारक कहते हैं, जबकि संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से 'अलग होने' का अर्थ प्रकट होता है, उसे आपादान कारक कहते हैं।

11. सर्वनाम

(क) 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (ब) 5. (अ)

(ख) 1. आपको, आप 2. उसे, वह 3. तुझे, तू 4. किसने 5. मुझे

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ 6. ✗ 7. ✓ 8. ✗

(घ) 1. जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किये जाते हैं, उन्हें 'सर्वनाम' कहते हैं। उदाहरण- तुम, वह। 2. बात कहने वाला या लिखने वाला व्यक्ति अपने नाम के बदले जिन सर्वनाम का प्रयोग करता है, उसे उत्तम पुरूष कहते हैं। उदाहरण- मैं, हम आदि। 3. जो सर्वनाम शब्द बात सुनने वाले के नाम के बदले प्रयुक्त किये जाते हैं, उन्हें मध्यम पुरुष कहते हैं। उदाहरण- तू, तुम आदि। 4. अन्य पुरुष- बोलने या लिखने वाले जिसके बारे में बात करे या लिखें, उसके नाम के बदले प्रयोग किए जाने वाले सर्वनाम अन्य पुरुष सर्वनाम कहलाते हैं; वह, वे, वे लोग, उसे, उन्हें, उन्होंने, उसने आदि।

5. **निश्चयवाचक सर्वनाम** - जो सर्वनाम किसी व्यक्ति अथवा वस्तु की ओर निश्चयपूर्वक संकेत करें, वह निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाता है। 6. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** - जिस सर्वनाम से किसी व्यक्ति, वस्तु या पदार्थ का निश्चित बोध न हो, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे- कोई, कुछ आदि। 7. जिस सर्वनाम से प्रश्न पूछने का बोध होता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। 8. निजवाचक - 'आप' स्वयं के लिये प्रयोग होता है जबकि पुरुषवाचक - 'आप' दूसरे व्यक्ति को सम्मान देने के लिये प्रयोग होता है।

(ङ) 1. कोई - अनिश्चयवाचक

2. कुछ, क्या - अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक

3. कौन है- प्रश्नवाचक

4. मुझे- पुरुषवाचक

5. जो, सो- संबंधवाचक

6. खुद- निजवाचक

7. जिसकी, उसकी- संबंधवाचक

(च) उससे उसके पिताजी ने कहा कि उसको मामा के यहाँ कानपुर भेज दिया जाएगा।

(छ) 1. गली में आदमी कौन है? 2. मुझे अभी जाना है। 3. वह तुमसे नहीं मिलेगा। 4. मैंने तुम्हें पहले ही समझा दिया था।

12. विशेषण

(क) 1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (अ) 5. (स) 6. (स)

(ख) 1. विषैला 2. बनारसी 3. जंगली 4. बेचनी 5. धार्मिक

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(घ) 1. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं। उदाहरण- मोटा।

2. विशेषण जिन शब्दों की विशेषता बताते हैं उन्हें विशेष्य कहते हैं। उदाहरण- लड़का। **लड़का** मोटा है। 3. जो पद विशेषण की विशेषता बताते हैं उन्हें प्रविशेषण कहते हैं। उदाहरण-शेर बहुत शक्तिशाली है। 4. गुणवाचक विशेषण-जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, रंग, आकार तथा दशा आदि का बोध कराते हैं, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

5. **निश्चित परिमाणवाचक**- इन विशेषणों से वस्तु या पदार्थ की निश्चित मात्रा का बोध होता है। **अनिश्चित परिमाणवाचक**- इन विशेषणों से वस्तु

या पदार्थ की मात्रा (नाप-तौल आदि) का निश्चित बोध नहीं होता। 6. **निश्चित संख्यावाचक**- जिन विशेषण पदों से किसी निश्चित संख्या का पता चलता है, उन्हें निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। **अनिश्चित संख्यावाचक**- जिन विशेषण पदों से संख्या निश्चित रूप से न मानी जा सके, उन्हें अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। 7. जब सर्वनाम शब्द (यह, वह, ये, वे) वाक्य में अकेले प्रयोग होते हैं, अर्थात् संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, तब इन्हें सर्वनाम कहते हैं परंतु जब इन शब्दों के साथ संज्ञा-पद होते हैं, तो ये सार्वनामिक विशेषण या संकेतवाचक विशेषण कहलाते हैं। 8. घी शुद्ध है (मूलावस्था), मीरा श्यामा से अधिक सुंदर है (उत्तरावस्था), दिनेश कक्षा का श्रेष्ठतम बालक है (उत्तमावस्था)

(ङ) 1. पवित्र-नदी 2. तीन-दिन 3. कुछ-फल 4. मेरी-गाय

(च) 1. बहुत 2. ज्यादा 3. बिल्कुल 4. बहुत

(छ) दैनिक, साप्ताहिक, सामाजिक, योगी, रोगी, सड़ियल, आंशिक, बनारसी, बुद्धिमान, आदरणीय

(ज) 1. सार्वनामिक विशेषण- वे
2. सार्वनामिक विशेषण- वे
3. सर्वनाम- तुम्हें
4. सर्वनाम- मुझे

13. क्रिया

(क) 1. (अ) 2. (स) 3. (ब) 4. (ब) 5. (स)

(ख) 1. पानी 2. वहाँ 3. अच्छा, बुरा 4. पत्र 5. बुद्धिमान

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(घ) 1. किसी काम के करने अथवा होने का बोध कराने वाले पदों को 'क्रिया' कहते हैं। उदाहरण- खेलना। 2. क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। 3. कर्म की दृष्टि से क्रिया के दो भेद हैं (1) अकर्मक क्रिया (2) सकर्मक क्रिया। 4. वाक्य में मुख्य क्रिया के अतिरिक्त जो अन्य क्रियाएँ प्रयुक्त होती हैं, उन्हें सहायक क्रिया कहते हैं। उदाहरण - है, था आदि। 5. जिन क्रिया के दो कर्म होते हैं, उन्हें द्विकर्मक क्रिया कहते हैं। उदाहरण- संदीप ने दिनेश को पुस्तक दी। 6. अपूर्ण क्रिया के अर्थ को पूर्ण करने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है; उन्हें पूरक कहते हैं। उदाहरण- मैं उसे देख लूँगा।

(ङ) 1. मीरा गाती है। 2. मैं पढ़ता हूँ। 3. कुत्ते भौंकते हैं। 4. मैं लिखता हूँ। 5. वह दौड़ता है।

(च) 1. वाल्मीकि ने रामायण लिखी। 2. पिताजी फल लाए। 3. मैंने पत्र लिखा। 4. उसने गाना गाया। 5. वह पुस्तक पढ़ता है।

(छ) 1. भिक्षा (भीख) 2. लिख (लिख) 3. पढ (पढ़) 4. देखता (देख) 5. उड़ (उड़)

(ज) 1. अकर्मक क्रिया- खेलते रहे
2. सकर्मक क्रिया- खरीदी
3. सकर्मक क्रिया- चुन रहा है।
4. अकर्मक क्रिया- चल दिए।
5. अकर्मक क्रिया- उदय हो रहा है।

(झ)

मुख्य कर्म	**गौण कर्म**
कलम	गोपाल
गेंद	श्याम
पाँच रुपए	महिमा
गाँव	किसान
चित्र	श्वेता

(ञ)

करना	**होना**
	सुंदर है
बो रहा है	
	हो रही है
भौंक रहे हैं	
	साफ है

(ट) पीना-पिलवाया, खाना-खिलवाया, सोना-सुलवाया, पढना-पढ़वाया, धोना-धुलवाया, लिखना-लिखवाया।

(ठ) 1. पीकर 2. साफ 3. पढ़कर 4. पढ़कर

14. काल

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (ब) 4. (ब) 5. (ब)

(ख) 1. पूर्ण भूत 2. संदिग्ध 3. अपूर्ण वर्तमान 4. संभाव्य भविष्यत् 5. हेतु-हेतुमद् भूत

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(घ) 1. क्रिया के होने का समय तथा उसकी पूर्ण या अपूर्ण अवस्था क्रिया के होने या न होने के समय की बोधक होती है। यह समय ही क्रिया का काल कहा जाता है।

2. काल के तीन भेद होते हैं- 1. भूतकाल, 2. वर्तमान काल, 3. भविष्यत् काल 1. **भूतकाल**- क्रिया के जिस रूप से उसके बीते हुए समय में होने

का बोध हो, वह भूतकाल की क्रिया कहलाती है। 2. **वर्तमान काल**- क्रिया के जिस रूप से कार्य का वर्तमान काल में होना पाया जाए, उसे वर्तमान काल की क्रिया कहते हैं। 3. **भविष्यत् काल**- जो काल (समय) अभी आएगा, उसे भविष्यत् काल कहते हैं। 3. भूतकाल के 6 भेद होते हैं- सामान्य, आसन्न, पूर्ण, अपूर्ण, संदिग्ध, हेतु-हेतुमद् 4. वर्तमान काल के तीन भेद हैं- सामान्य, अपूर्ण संदिग्ध।

सामान्य वर्तमान- क्रिया के जिस रूप से कार्य के वर्तमान काल में सामान्य रूप से होने का पता चले, उसे सामान्य वर्तमान कहते हैं; जैसे- समीर आता है। **अपूर्ण वर्तमान**- क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि कार्य वर्तमान काल में शुरू होकर अभी जारी है, उसे अपूर्ण वर्तमान कहते हैं; जैसे- सलिल खेल रहा है। **संदिग्ध वर्तमान**- क्रिया के जिस रूप से उसके वर्तमान काल में होने में संदेह पाया जाए, उसे संदिग्ध वर्तमान कहते हैं; जैसे- बच्चा अब जाग गया होगा। 5. **सामान्य भविष्यत्**- क्रिया ..... शायद कल वर्षा हो। 6. पूर्ण भूत- क्रिया के जिस ..... पढ़ा था। अपूर्ण भूत- क्रिया ..... पिताजी बाजार जा रहे थे। **संदिग्ध भूत**- क्रिया के ..... गीत गाया होगा।

(ङ) 1. मारे गए- सामान्य भूत। 2. पढ़ता है- सामान्य वर्तमान। 3. लिखते हैं- सामान्य वर्तमान। 4. याद कर रहे हैं- अपूर्ण वर्तमान। 5. वर्षा हो- संभाव्य भविष्यत्। 6. जाएगा - सामान्य भविष्यत्। 7. बल दे रहे हैं- अपूर्ण वर्तमान। 8. गए होंगे- संदिग्ध वर्तमान। 9. आता है - सामान्य वर्तमान। 10. हेतु हेतुमद् भूत।

(च) 1. राजू सत्य बोला। 2. वे आ गए होंगे। 3. उसने पत्र लिखा। 4. रेखा झूला झूल रही थी। 5. माताजी मंदिर जा रही थीं। 6. शायद सुमित और सोनू सो गये। 7. रोहित परीक्षा देने जाता है।

15. वाच्य

(क) 1. (अ) 2. (ब) 3. (स) 4. (अ) 5. (ब) 6. (स) 7. (ब)

(ख) 1. क्रिया का वह रूप, जिसके द्वारा इस बात का बोध होता है कि वाच्य में कर्ता, कर्म, अथवा 'भाव' में किसकी प्रधानता है, वाच्य कहलाता है। 2. जिस वाक्य में क्रिया कर्ता के लिंग और वचन के आधार पर होती है, वह वाक्य कर्तृवाच्य में होता है; जैसे- अशोक फल खाता है। 3. कर्मवाच्य- जिस वाक्य में कर्म की प्रधानता होती है, अर्थात् क्रिया कर्म के लिंग और वचन के आधार पर होती है, वह वाक्य 'कर्मवाच्य' में होता है; जैसे- धोबी के द्वारा कपड़े धोए गए। 4. भाववाच्य- जिस वाक्य में क्रिया का संबंध न तो कर्ता से होता है और न कर्म से, वरन् भावप्रधान हो, वह वाक्य 'भाववाच्य' में होता है; जैसे- उससे चला नहीं जाता।

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓

(घ) 1. कर्तृवाच्य 2. भाववाच्य 3. कर्मवाच्य 4. भाववाच्य 5. कर्मवाच्य 6. भाववाच्य 7. भाववाच्य 8. कर्तृवाच्य 9. कर्तृवाच्य

16. अविकारी शब्द

(क) 1. (ब) 2. (स) 3. (स) 4. (ब) 5. (ब)

(ख) 1. क्रियापद 2. कालवाचक 3. रीतिवाचक 4. रीतिवाचक 5. परिमाणवाचक

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ 5. ✓

(घ) 1. चुपके-चुपके = रीतिवाचक क्रियाविशेषण 2. के सामने = संबंधबोधक 3. प्रतिमाह = कालवाचक क्रियाविशेषण 4. के उपरांत = कालवाचक संबंधबोधक 5. इधर = स्थानवाचक क्रियाविशेषण।

(ङ) 1. अविकारी वे शब्द हैं, जिनमें कोई विकार (परिवर्तन) न हो। वाक्य में प्रयोग करते समय जिन शब्दों में कोई विकार (परिवर्तन) नहीं होता, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं। अविकारी शब्द निम्नलिखित होते हैं- 1. क्रियाविशेषण 2. संबंधबोधक 3. समुच्चयबोधक 4. विस्मयादिबोधक

2. जो विशेषण क्रिया के होने का समय सूचित करते हैं, उन्हें क्रियाविशेषण कहतें हैं। उदाहरण- मैं अभी आया। 3. जो अविकारी शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ जुड़कर उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से प्रकट करते हैं, उन्हें संबंधबोधक कहते हैं।

1. रूप-रचना के आधार- ..... की बाबत आदि। 4. जो अविकारी शब्द दो शब्दों, दो वाक्यों अथवा वाक्यांशों को जोड़ने का कार्य करता है, उसे समुच्चयबोधक कहते हैं। उदाहरण- दो और दो चार होते हैं। 5. हर्षबोधक, आश्चर्यबोधक, शोकबोधक, स्वीकारबोधक, अनुमोदनबोधक, तिरस्कारबोधक, संबोधनबोधक, आशीर्वाद बोधक।

(च) जो क्रियाविशेषण क्रिया के होने का समय सूचित करते हैं, उन्हें कालवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं। 2. जो क्रियाविशेषण क्रिया के स्थान या दिशा का ज्ञान कराए, उसे स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं। 3. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण- जिन क्रियाविशेषणों से क्रिया की अधिकता, न्यूनता आदि परिमाण का पता लगे, उन्हें परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

(छ) 1. कालवाचक 2. रीतिवाचक 3. कालवाचक 4. स्थानवाचक 5. रीतिवाचक 6. रीतिवाचक 7. परिमाणवाचक 8. स्थानवाचक।

(ज) 1. के पीछे 2. में 3. के ऊपर 4. पीछे 5. के निकट 6. अपेक्षा 7. के आगे 8. के मारे ।

(झ) 1. क्योंकि 2. और 3. या 4. और 5. या 6. ताकि 7. परंतु 8. अन्यथा

(ञ) (स्वयं करें)

17. वाक्य विचार

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (अ) 4. (अ) 5. (अ)

(ख) 1. (र) 2. (य) 3. (ल) 4. (अ) 5. (ब) 6. (व) 7. (स) 8. (द)

(ग) 1. रवीन्द्रनाथ टैगोर, गीतांजलि, की सर्वश्रेष्ठ कृति है। 2. स्वामी विवेकानंद, ने देश को नई दिशा दी। 3. वह आदमी, पागल हो गया है। 4. मछुवारे ने मछली, पकड़ ली थी। 5. वह बिस्तर, पर लेटते ही सो गया।

(घ) 1. किसी विचार को पूर्णता से प्रकट करने वाला शब्द-समूह वाक्य कहलाता है। 2. उद्देश्य और विधेय। **उद्देश्य-** वाक्य में जिस वस्तु या प्राणी के विषय में कुछ कहा जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं। 3. **विधेय-** उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाता है, वह सब विधेय कहलाता है। उदाहरण- कोयल डाल पर बैठी है। 4. रचना के आधार पर तीन भेद होते हैं- (1) सरल (2) संयुक्त (3) मिश्र 5. (1) विधिवाचक (2) नकारात्मक (3) आज्ञावाचक (4) प्रश्नवाचक (5) विस्मयादिबोधक (6) संदेहवाचक (7) इच्छावाचक (8) संकेतवाचक

(ङ) 1. सरल वाक्य 2. मिश्र वाक्य 3. संयुक्त वाक्य 4. संयुक्त वाक्य 5. संयुक्त वाक्य

(च) 1. विधिवाचक 2. प्रश्नवाचक 3. इच्छावाचक 4. संकेतवाचक 5. विस्मयादिबोधक 6. नकारात्मक 7. विस्मयादिबोधक 8. संदेहवाचक

(छ) 1. क्या पिताजी कल लखनऊ गये थे? 2. मोहन आज विद्यालय आया है। 3. मोहन, सत्य बोलो।

18. विराम-चिह्नों का प्रयोग

(क) 1. (स) 2. (अ) 3. (स) 4. (स) 5. (स)

(ख) 1. बोलते समय या पढ़ते समय, वाक्य के अंत में अथवा बीच में साँस लेने, किसी कथन पर बल देने, समझाने आदि के लिए रुकना पड़ता है। रुकने को ही विराम या विश्राम कहते हैं। 2. वाक्यों में आश्चर्य, हर्ष, घृणा आदि भाव प्रकट करने के लिये इसका प्रयोग करते हैं। 3. जब लिखने में कुछ छूट जाता है, तब इस चिह्न का प्रयोग करते हैं। 4. जब वाक्य में किसी का कथन या कथन का मूल रूप पुस्तक आदि से लिया जाए, तो इस चिह्न का प्रयोग करते हैं। किसी दैनिक पत्र या पुस्तक का नाम लिखते समय अथवा कवि का उपनाम, लेख या कविता का शीर्षक लिखते समय प्रायः इकहरे उद्धरण चिह्न (' ..... ') का भी प्रयोग किया जाता है। 5. **विवरण-चिह्न-** जिस वाक्य के बाद कोई सूची देनी हो या कोई बात ब्यौरेवार बतानी हो, तो उसके पहले विवरण-चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

(ग) 1. मैंने डॉ० वर्मा का निबंध पढ़ा है, भ्रष्टाचार-एक कोढ़। 2. अरे! यह क्या गड़बड़ कर रहे हो। 3. सच बोलो, झूठ कभी मत बोलो। 4. पेड़-पौधे, फल -फूल और औषधियाँ देते हैं। 5. अरे! तुम कब आए, रुकते तो मैं भी चलता। 6. छोटी-छोटी बातों पर आपे से बाहर नहीं होना चाहिए। 7. क्या आपके सिर में दर्द है? एक गोली लीजिए और सिरदर्द गायब। 8. मोहन क्या ईश्वर ने दुनिया दुखों को दिखाने के लिए बनाई है। रमेश- नहीं। 9. राम ने कहा- रावण तो मारा गया। लंका का राज्य अब कौन संभालेगा। लक्ष्मण, क्या यह राज्य तुम सँभाल सकोगे? लक्ष्मण बोले, प्रभु आपकी आज्ञा शिरोधार्य कर मुझे हर्ष ही होगा पर विभीषण जैसे उत्तराधिकारी के होते क्या यह उचित है? 10. रामू जोर से चिल्लाया, बचो। 11. पाप से घृणा करो, पापी से नहीं महावीर 12. समस्त पशु-पक्षी, गाय-भैंस, चील-कौए तथा कीट-पतंगे सभी व्याकुल थे।

व्याकरण मेदिनी-6

1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (स) 5. (स)

(ख) 1. भाषा 2. बोली 3. लिपि 4. वर्ण 5. व्याकरण

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(घ) 1. भाषा के दो भेद हैं। मौखिक व लिखित। 2. भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं। 3. व्याकरण वह शास्त्र है जो भाषा को शुद्ध रूप से लिखने व बोलने के नियम बताता है। यही इसका कार्य है। 4. ध्वनियों को लिखने की विधि को लिपि कहते हैं। 5. हिन्दी व संस्कृत की लिपि का नाम 'देवनागरी' है। 6. व्याकरण के तीन विभाग हैं – वर्ण-विचार, शब्द -विचार व वाक्य विचार। 7. भाषा का मौखिक रूप पहले आया। 8. भारतीय संविधान में 22 भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है।

(ङ) 1. भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा हम बोलकर या लिखकर अपने भाव या विचार दूसरों तक पहुँचाते हैं तथा दूसरों के भाव और विचार सुनकर या पढ़कर स्वयं समझते हैं। 2. भाषा के दो भेद हैं, मौखिक भाषा एवं लिखित भाषा। **मौखिक भाषा–** मुख से जो कुछ बोला या सुना जाता है, वह भाषा का मौखिक रूप होता है। इसे ही मौखिक भाषा कहते हैं। **लिखित भाषा–** जो कुछ लिखा या पढ़ा जाता है, वह भाषा का लिखित रूप है इसे ही 'लिखित भाषा' कहते हैं। 3. बालक अपने परिवार अथवा माता से जो भाषा सीखता है, उसे मातृभाषा कहते हैं। किसी हिंदीभाषी परिवार में जन्म लेने वाला बालक प्रारंभ में ही हिंदी भाषा के परिवेश में रहकर हिंदी भाषा ही सीख सकता है। यही उसकी मातृभाषा होगी।

(च) 1. हमारे मन में अनेक भाव एवं विचार उत्पन्न होते रहते हैं। उन्हें व्यक्त करने के लिए हमें भाषा की आवश्यकता पडती है। केवल भाषा ही एकमात्र ऐसा साधन है जो हमारे विचारों को पूरी तरह व्यक्त करने में समर्थ है। 2. प्रत्येक भाषा के अपने नियम होते हैं। उन्हें जाने बिना भाषा का शुद्ध रूप में प्रयोग नहीं हो सकता। इन नियमों को ही व्याकरण के अन्तर्गत समझाया जाता है। इस प्रकार भाषा और व्याकरण में अटूट संबंध है। 3. भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं। बोली किसी क्षेत्र विशेष में मौखिक रूप से ही प्रयोग की जाती है। भाषा का क्षेत्र विस्तृत और बोली का क्षेत्र सीमित होता है। 4. किसी प्रदेश में बोली जाने वाली भाषा प्रादेशिक भाषा कहलाती है। जैसे महाराष्ट्र में मराठी बोली जाती है, अतः मराठी प्रादेशिक भाषा है। जब कोई भाषा विश्व के अनेक राष्ट्रों द्वारा बोली जाती है, तो वह अन्तर्राष्ट्रीय भाषा का स्थान ले लेती है; जैसे– अंग्रेजी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है।

2. वर्ण-विचार

(क) 1. (ब) 2. (अ) 3. (ब) 4. (ब) 5. (अ) 6. (ब)

(ख) 1. अनुस्वार 2. अनुनासिक 3. अ
4. क्रमबद्धसमूह 5. ऊष्म

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ 6. ✓ 7. ✓

(घ)

अनुस्वार ध्वनि	अनुनासिक ध्वनि
वंश	आँख
दंत	साँप
हंस	मुँह
संशय	ऊँट
	ताँगा

(ङ) 1. मूल ध्वनि की वह सबसे छोटी इकाई जिसके और खंड न किए जा सकें 'वर्ण' कहलाती

है। 2. जो वर्ण किसी अन्य वर्ण की सहायता के बिना बोले जाते हैं स्वर-वर्ण कहलाते हैं। 3. स्वर की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण 'व्यंजन' कहलाते हैं। 4. इन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा मुख के विभिन्न भागों को स्पर्श करती है। इसी कारण ये स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं। इनके वर्ग हैं - कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग। 5. इन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा का पूरा स्पर्श मुख के किसी विशेष भाग के साथ नहीं होता। ये चार हैं- य्, र्, ल्, व्।

(च) 1. उच्चारण की दृष्टि से प्रत्येक व्यंजन में 'अ' मूल रूप से मिला होता है परन्तु किसी व्यंजन में 'अ' न भी मिला हो, तो उसे पूरा अक्षर न मानकर आधा अक्षर मानते हैं, और व्यंजन के नीचे एक तिरछी रेखा, खींच देते हैं। इसी तिरछी रेखा को हलंत चिह्न कहते हैं।

2. जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों के उच्चारण से तिगुना समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। इसे प्रकट करने के लिए हिंदी का तीन का अंक लिख देते हैं। जैसे-ओइम्

3. वर्णमाला से अलग कुछ ध्वनियाँ अयोगवाह कहलाती हैं। ये हैं - अनुस्वार (ं),
अनुनासिक (ँ) तथा विसर्ग (:)।

4. यह अंग्रेजी भाषा से हिंदी में आए शब्दों में प्रयोग होने वाली ध्वनि है : जैसे - डॉक्टर, हॉल, कॉफी, ऑफिस आदि।

(छ) 1. जिन स्वरों के उच्चारण में कम से कम समय लगे, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं। (क) ह्रस्व स्वर—जिन स्वरों के उच्चारण ..... मेल से नहीं बनते। इनकी संख्या चार है—अ, इ, उ, ऋ। (ख) दीर्घ स्वर—जिन स्वरों के उच्चारण ..... संयुक्त स्वर भी कहा जाता है। इनकी संख्या सात है—

1. आ (अ + अ), 2. ई (इ + इ), 3. ऊ (उ + उ), 4. ए (अ + इ), 5. ऐ (अ + ए), 6. ओ (अ + उ), 7. औ (अ + ओ)

2. 'र' के अन्य व्यंजनों से मिलने पर निम्नलिखित रूप बन जाते हैं— .... र् + ऊ = रू; रूप, रूठ, रूल

3. **व्यंजनों के भेद**— व्यंजनों के तीन भेद हैं— (क) स्पर्श व्यंजन, (ख) अंत:स्थ व्यंजन, (ग) ऊष्म व्यंजन

(क) स्पर्श व्यंजन—इन व्यंजनों के उच्चारण ..... श्, ष्, स्, ह्।

3. उच्चारण-स्थान और वर्तनी

(क) 1. (स) 2. (अ) 3. (अ) 4. (ब) 5. (ब) 6. (ब) 7. (अ) 8. (अ)

(ख) 1. सामाजिक, चाहिए 2. परिचय 3. चारपाइयाँ 4. कृपालु 5. नमस्कार

(ग) 1. आहार 2. कहावत 3. सड़क 4. विधान 5. अधीन 6. कौशल 7. शासन 8. विषय 9. साप्ताहिक 10. नौकरी 11. ह्रदस 12. घनिष्ठ 13. प्रार्थना 14. प्रसाद।

(घ) कंठ-अ आ, दंत और ओष्ठ - व, तालु - इ ई, कंठ और तालु - ए ऐ, दंत - त द, कंठ और ओष्ठ - ओ औ, ओष्ठ - उ ऊ, नासिका - ण न, मूर्धा - ट ठ।

(ड़) व - दंत व ओष्ठ, प - ओष्ठ, ब - ओष्ठ, ओ - कंठ और ओष्ठ, औ - कंठ और ओष्ठ, ए - कंठ और तालु, ऐ - कंठ और तालु, अं - नासिका, अः - कंठ।

(च) 1. जिन वर्णों का उच्चारण कंठ से होता है, वे कंठ्य-वर्ण कहलाते हैं; ये हैं - अ, आ, अः, क, ख, ग, घ, ङ; ह। 2. जिन वर्णों का उच्चारण तालु से होता है, वे तालव्य वर्ण कहलाते हैं; ये हैं - इ, ई, च, छ, ज, झ, य, श। 3. जिन वर्णों का उच्चारण मूर्धा से होता है, वे मूर्धन्य वर्ण कहलाते हैं; ये हैं - ऋ, ट, ठ, ड, ढ, ण, ड़, ढ। 4. जिन वर्णों का उच्चारण जिह्वा द्वारा दाँतों का स्पर्श करने से होता है, वे दंत्य वर्ण कहलाते हैं; ये हैं—त, थ, द, ध, न, ल, स। 5. जिन वर्णों का उच्चारण ओठों से होता है, वे ओष्ठ्य वर्ण कहलाते हैं; ये हैं—उ, ऊ, प, फ, ब,

भ, म। 6. जिन वर्णों का उच्चारण दाँत तथा ओष्ठ से होता है, अतः इसे दंतोष्ठ्य वर्ण की श्रेणी में लिया गया है। 7. जिन वर्णों का उच्चारण कंठ तथा तालु से होता है, उन्हें कंठ-तालव्य वर्ण कहा जाता है; ये हैं–ए, ऐ। 8. जिन वर्णों का उच्चारण कंठ तथा ओष्ठ से होता है, वे कंठोष्ठ्य वर्ण कहलाते हैं; ये हैं–ओ, औ। 9. जिन वर्णों का उच्चारण नासिका की सहायता से होता है, वे नासिक्य वर्ण कहलाते हैं; ये हैं–अं, अँ, ङ, ञ, ण, न, म।

4. शब्द-विचार

(क) 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (अ) 5. (अ) 6. (अ) 7. (ब) 8. (अ) 9. (अ) 10. (स)

(ख) 1. भिन्न 2. समानता 3. उल्टे 4. तत्सम 5. देशज 6. योगरूढ़

(ग) 1. वर्णों का ऐसा मेल जिसका कोई निश्चित अर्थ हो, शब्द कहलाता है।

2. जब स्वतंत्र सार्थक वर्ण-समूह किसी वाक्य का भाग बनते हैं, तो पद कहलाते हैं।

3. जिन शब्दों का प्रयोग केवल एक ही अर्थ में किया जाता है, वे एकार्थी शब्द कहलाते हैं।

4. विपरीत अर्थ को प्रकट करने वाले शब्द विपरीतार्थी अथवा विलोम शब्द कहलाते हैं।

(घ) 1. तत्सम् भाषा के जो शब्द बिना किसी परिवर्तन के हिंदी भाषा में प्रयुक्त होते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं।

2. संस्कृत भाषा से हिंदी में आए हुए वे शब्द जो अपने बदले हुए रूप में प्रयोग होते हैं, तत्भव् शब्द कहलाते हैं। जैसे कर्ण से कान, दुग्ध से दूध शब्द तद्भव शब्द हैं।

3. हिंदी में प्रचलित वे शब्द जो देश की विभिन्न बोलियों द्वारा हिंदी भाषा में स्थान पा गए हैं, देशज शब्द कहलाते हैं। जैसे रोटी, बेटा, लोटा, गाड़ी आदि।

(ङ) 1. रूढ़ शब्द —जो शब्द किन्हीं अन्य शब्दों के योग से नहीं बनते, ... निरर्थक हो जाते हैं। यौगिक शब्द—जो शब्द अन्य शब्दों के योग (मेल) से बनते हैं, ... सुगंध (सु + गंध) आदि।

2. योगरूढ़ शब्द—योगरूढ़ दो शब्दों के मेल से बना है–योग + रूढ़ि = योगरूढ़। ..... 'राक्षस' के लिए प्रयोग किया जाता है।

3. विकारी शब्द—विकार का अर्थ है–परिवर्तन। जो शब्द वाक्य ..... **विस्मयादिबोधक** – अहा, हाय, ओह, छिः आदि।

(च) सेनापति, राष्ट्रपति, प्रतिदिन
चॉकलेट, ब्लाउज, कॉलिज
बच्चा, लड़का, पतला
साथ, किंतु, अथवा
कार्य, दिवस, अंक
पानी, नाक, कान
पंकज, निशाचर, चारपाई

5. संधि

(क) 1. (अ) 2. (अ) 3. (ब) 4. (अ) 5. (स) 6. (ब)

(ख) 1. दीर्घ 2. दीर्घ 3. गुण 4. यण 5. अयादि

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ 6. ✓

(घ) 1. अ + अ = आ (मत + अनुसार = मतानुसार) आ + अ = आ (विद्या + अर्थी = विद्यार्थी)

2. (इ या ई + कोई अन्य स्वर) = यदि + अपि = यद्यपि, इति + आदि = इत्यादि।

3. अ + इ = ए (नर + इन्द्र = नरेन्द्र), अ + ई = ए (नर + ईश = नरेश)

4. गुण संधि, अ + ई = ए

(ङ) 1. जब दो शब्द एक दूसरे के समीप आते हैं तो पहले शब्द की अंतिम ध्वनि या वर्ण आपस में मिल जाते हैं। यह मिलन ही संधि है। उदाहरण - हिम + आलय = हिमालय

2. संधि के नियमों के अनुसार यदि मिले हुए वर्णों को फिर से अलग कर दिया जाए तो यह संधिविच्छेद कहलाएगा। जैसे विद्यालय का संधि विच्छेद होगा—विद्या + आलय।

3. वृद्धि संधि का यह सूत्र है - 'अ' या 'आ' + 'ए' या 'ऐ' = 'ऐ', 'अ' या 'आ' + 'ओ' या 'औ' = औ, उदाहरण - एक + एक = एकैक, परम + ओज = परमौज

4. यण संधि का सूत्र है - इ या ई + कोई अन्य स्वर = य, उ या ऊ + कोई अन्य स्वर = व उदाहरण - यदि + अपि = यद्यपि

(च) 1. संधि के तीन भेद हैं स्वर संधि, व्यंजन संधि व विसर्ग संधि। स्वर संधि—जब मिलने वाले दो शब्दों ..... 'स्वर संधि' है। उदाहरण - हिम + आलय = हिम् + अ + आलय = हिमालय।

2. व्यंजन संधि—जब पहले शब्द के अंत में कोई व्यंजन होता है और दूसरे शब्द के प्रारंभ में स्वर या व्यंजन कोई भी वर्ण होता है, ...उदाहरण–नि: + मल = निर् + मल = निर्मल

3. **दीर्घ संधि**—जब एक ही जाति के स्वर पास-पास आ जाएँ, तो उन दोनों के मेल से उसी जाति का दीर्घ स्वर बन जाता है। यह मेल दीर्घ संधि कहलाता है; जैसे– परम + अणु = परमाणु, देव + आलय = देवालय, मत + अनुसार = मतानुसार।

गुण संधि—यदि 'अ' अथवा 'आ' के पश्चात् इ या ई, उ या ऊ अथवा ऋ हो तो क्रमश: दोनों (पहले और बाद के स्वरों) को मिलाकर ए, ओ तथा अर् हो जाता है। ऐसी संधि को गुण संधि कहते हैं। उदाहरण देखिए- नर + इन्द्र = नरेन्द्र, राजा + इन्द्र = राजेन्द्र, नर + ईश = नरेश।

4. **अयादि संधि**—'ए', 'ऐ', 'ओ' या 'औ' के परे यदि कोई भिन्न (विजातीय) स्वर आ जाए तो 'ए' का 'अय', 'ऐ' का 'अव' और 'औ' का 'आव' हो जाता है। ऐसी संधि को अयादि संधि कहते हैं; जैसे– ने + अन = नयन, पो + अन = पवन, शे + अन = शयन, भो + अन = भवन, गै + अन = गायन, नौ + इक = नाविक, गै + अक = गायक, पौ + अन = पावन

(छ) मतानुसार, रवीन्द्र, महाशय, रेखांश, हरीश, मुनीश्वर, प्रत्युपकर, स्वागत, इत्यादि, स्वल्प, गायक, पावन, गायन, नयन, परोपकार, परमौज

(ज) प्रति + एक, महा + औषध, तथा + एव, भो + अन, यदि + अपि, सदा + एव, पर + उपकार, सूर्य + उदय, राजा + ईश, सु + उक्ति, देव + आलय, योग + अभ्यास, अभि + इष्ट, महा + इन्द्र, महा + ऋषि।

6. समास

(क) 1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (स) 5. (स) 6. (स)

(ख) 1. कर्मधारय समास 2. द्विगु समास 3. अव्ययीभाव समास 4. द्वंद समास 5. तत्पुरूष समास 6. द्विगु समास

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(घ) 1. समास का शाब्दिक अर्थ है छोटा करना या संक्षिप्त करना।

2. परस्पर संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं।

3. समस्त पद को पुन: पहली जैसी अवस्था में अलग करना समास विग्रह कहलाता है।

4. विभक्तिरहित शब्दों को मिला देने से जो शब्द बनता है, उसे समस्त पद कहते हैं।

5. समास में दो पद होते हैं। पहला पद पूर्वपद व दूसरा उत्तर पद कहलाता है।

(ड़) 1. कर्मधारय समास तत्पुरूष का भेद है। इस समास का पूर्वपद विशेषण तथा उत्तर पद विशेष्य होता है। जैसे - नीलगाय - नीली है जो गाय, यहाँ नीली विशेषण तथा गाय विशेष्य है।

2. जिस समास में दोनों पद प्रधान हों और विग्रह करने पर 'और', 'तथा' एवं 'आदि'। लगता हो वह द्वंद्व समास है।

3. इस समास में पूर्वपद संख्यावाचक होता है और किसी समूह का बोध कराता है। जैसे - तिरंगा - तीन रंगों का समूह।

4. जिस समास का प्रथम पद प्रधान व अव्यय हो वह अव्ययीभाव समास कहलाता है। जैसे -

यथाशक्ति, आजन्म आदि।

5. जिस समस्तपद में कोई भी पद प्रधान नहीं होता और सारा समस्तपद किसी अन्य के विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। उदाहरण : चतुर्भुज – चार भुजाओं वाला।

(च) 1. तत्पुरुष समास—जिस समास में द्वितीय पद प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। तत्पुरुष समास में प्रथम पद विशेष्य होता है। .....

अधिकरण तत्पुरुष: आपबीती – आप पर बीती
गृहप्रवेश – गृह में प्रवेश

2. **कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर :** कर्मधारय समास तत्पुरूष का भेद है। इस समास का पूर्वपद विशेषण और उत्तरपद विशेष्य होता है जबकि जिस समस्तपद में कोई भी पद प्रधान नहीं होता और समस्तपद किसी अन्य के ..... बहुव्रीहि समास हैं।

3. द्विगु समास में समस्तपद का पहला पद संख्यावाचक होता है और समूह का बोध कराता है जबकि बहुव्रीहि समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता और सारा समस्तपद किसी अन्य के विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है।

7. उपसर्ग एवं प्रत्यय

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (ब) 6. (ब) 7. (स)

(ख) कु–कुरूप, कुमार्ग नि–निडर, निहत्था
उप–उपयोग, उपनाम भर–भरपाई, भरसक
स्व–स्वतंत्र, स्वाधीन प्र–प्रशिक्षण, प्रमाण
अधि–अधिकार, अधिनायक
आ–आजीवन, आजन्म
दुर्–दुरात्मा, दुर्दशा परा–पराधीन, पराशक्ति
सु–सुयश, सुफल ना – नानुकर, नाराज
स–सपरिवार, सधन्यवाद अध–अधपका, अधजला
बे–बेरहम, बेशर्म
बिन–बिनपका, बिनब्याहा

(ग) 1. (ब) 2. (स) 3. (स) 4. (अ) 5. (स) 6. (ब) 7. (ब)

(घ) 1. भाषा में यौगिक शब्दों की रचना निरंतर होती रहती है।

2. उपसर्ग शब्द में पहले जोड़े जाते हैं।

3. प्रत्यय शब्द के अंत में जोड़े जाते हैं।

(ड़) 1. जो शब्दांश शब्दों से पूर्व जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता उत्पन्न करते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं।

2. ऐसे शब्दांश जो मूलशब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं।

(च) 1. जो शब्दांश शब्दों से पूर्व जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता उत्पन्न करते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं; जैसे–ज्ञान में 'अ' जोड़कर बना शब्द 'अज्ञान'। यहाँ 'अ' जुड़ने से शब्द के अर्थ में परिवर्तन हो गया है।

उपसर्ग स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं होते, शब्द के साथ जुड़कर प्रयुक्त होते हैं।

2. ऐसे शब्दांश जो मूल शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं; जैसे–भला + ई = भलाई ('ई' प्रत्यय)। यहाँ विशेषण (भला) में 'ई' प्रत्यय जुड़ जाने से भलाई शब्द (भाववाचक संज्ञा) का निर्माण हुआ है। प्रत्यय स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं किए जाते हैं।

(छ) ना – झूलना, भूलना इक – नैतिक, भौतिक
वाला – रखवाला, घरवाला
दार – रंगदार, शानदार ता – समता, ममता
गर – जादूगर, बाजीगर आल – ननिहाल, ससुराल
ईला – रंगीला, चटकीला

8. शब्द-भंडार

(क) 1. (अ) 2. (अ) 3. (स) 4. (ब) 5. (स)

(ख) अर्जुन – कौन्तेय, धनंजय, पार्थ
इच्छा – कामना, मनोरथ, लालसा
अग्नि – अनल, आग, पावक
अतिथि – मेहमान, पाहुना, आगंतुक
सरस्वती – शारदा, गिरा, भारती
लक्ष्मी – श्री, इंदिरा, हरिप्रिया

गणेश – लंबोदर, गजानन, एकदंत
आकाश – नभ, गगन, अंबर

(ग) 1. सरस–नीरस, डर–निडर, आशा–निराशा
2. एकता–अनेकता
3. सच–झूठ, स्वर्ग–नरक, प्रेम–घृणा
4. तरल–ठोस, पूर्ण–अपूर्ण, मुख्य–गौण

(घ) 1. (अ) 2. (स) 3. (अ) 4. (ब) 5. (स)

(ड़) 1. पर्वत 2. रथ 3. ज़िन्दगी 4. प्यार 5. रंग 6. नगीना

(च) 1. यहाँ, एक ऋषि 2. भाग, कंधा
3. आग, वायु 4. माता, जल
5. देहान्त, गरीब 6. नगर, बाढ़
7. कठोर, व्यक्ति 8. देवता, झरना

(छ) 1. (ब) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब) 5. (ब)

(ज) 1. जिनकी गणना न हो सके 2. प्रजा का शासन 3. नभ में विचरने वाला 4. जिसके आर–पार दिखाई दे 5. धरती पर विचरने वाला 6. जो वस्तु बहुत मूल्य दे कर भी प्राप्त न की जा सके 7. लंबे समय तक टिकने वाला 8. दूसरों पर उपकार करने वाला

(झ) 1. जीवन का बीता हुआ भाग, पूर्ण जीवन काल 2. फेंक कर चलाया जाने वाला हथियार, हाथ में पकड़ कर चलाए जाने वाला हथियार 3. प्रतियोगिता में जीतने पर इनाम, किसी कार्य के लिए इनाम 4. स्वयं को श्रेष्ठ मानना, झूठा घमंड 5. संदेह, भविष्य में कुछ बुरा घट जाने की संभावना 6. किसी वस्तु के प्रति मन की लगन का भाव, कोई विशेष इच्छा 7. सामाजिक और सरकारी नियमों का उल्लंघन, नैतिक व धार्मिक नियम तोड़ना 8. जो वस्तु बहुत मूल्य देकर भी प्राप्त न हो सके, जिसका बहुत मूल्य देना पड़े।

(ञ) 1. अस्त्र 2. अमूल्य 3. बहुमूल्य 4. पाप 5. का द्वेष

(ट) 1. सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी, गणेश का दाँत, ईश्वर 2. अपरा, परा 3. दैहिक, दैविक, भौतिक 4. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र 5. विष्णु, गणेश, दुर्गा, सूर्य, शिव 6. कड़वा, कसैला, खट्टा, मीठा, चरपरा, खारा 7. आलस्य, निद्रा, स्वाद, मंदबुद्धि, काम, क्रीड़ा, महाचिंता 8. सूर्य, चंद्र, नक्षत्र, पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश 9. श्रृंगार, हास्य, करुण, वीर, भयानक, रौद्र, वीभत्स, अद्भुत शांत 10. धैर्य, क्षमा, दया, अस्तेय, शौच, इंद्रिय निग्रह, अहिंसा, सत्य, अक्रोध, विधा 11. प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान, नाम, कूकल, कूर्म, आत्मा देवदत्त, धनंजय 12. चैत्र, बैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन।

(ठ) 1. समान अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं। 2. विपरीत या उल्टा अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों को विलोम शब्द कहते हैं।

(ड) 1. वे शब्द जिनके अनेक अर्थ हों, अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं–जैसे, अंबर का अर्थ आकाश भी है और वस्त्र भी। 2. दो पक्ष– शुक्ल व कृष्ण। दो विद्या– परा और अपरा। दो अयन– उत्तरायण, दक्षिणायन

(ढ) 1. हिन्दी भाषा में अनेक ऐसे शब्द हैं, जो उच्चारण ..... जिसके समान कोई दूसरा नहीं
2. हिन्दी भाषा में ऐसे शब्द पर्याप्त मात्रा में .... जिसका बहुत मूल्य देना पड़े।

9. संज्ञा

(क) 1. (अ) 2. (अ) 3. (स) 4. (ब) 5. (ब)

(ख) 1. विशेष नाम 2. व्यक्तिवाचक 3. जागरण 4. सजावट 5. मिठास

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗

(घ) 1. किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, गुण, अवस्था या भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं। 2. जिन संज्ञा शब्दों से किसी समूह अथवा समुदाय का बोध होता है, वे समूहवाचक संज्ञा कहलाते हैं। 3. जिन शब्दों से किसी धातु, द्रव्य या पदार्थ का बोध हो, उन्हें पदार्थवाचक संज्ञा कहते हैं।

(ङ) 1. जो शब्द किसी वर्ग या जाति के सभी प्राणियों, स्थानों या वस्तुओं का बोध कराऐं, उन्हें

जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- पुरुष, स्त्री, लड़की, लड़का आदि। 2. किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु, स्थान के नाम का बोध कराने वाले शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाते हैं, जैसे - राम, कृष्ण, मीरा, ताजमहल, मथुरा आदि।

(च) 1. जिन शब्दों से किसी व्यक्ति, वस्तु .... भाववाचक संज्ञा कहते हैं। भाववाचक संज्ञाएँ दो प्रकार की होती हैं ..... मना से मनाही आदि। 2. व्यक्तिवाचक संज्ञा का जातिवाचक के रूप में ... . जातिवाचक संज्ञा हो गए हैं।
3. जातिवाचक संज्ञा का व्यक्तिवाचक .... भारत माता के सच्चे सपूत थे।

(छ) कक्षा-जातिवाचक, कपड़ा-पदार्थवाचक, कलम-जातिवाचक, कमीज-जातिवाचक, फूल-जातिवाचक, झुंड-समूहवाचक, संसद भवन-व्यक्तिवाचक, अहिंसा-भाववाचक, मेला-जातिवाचक, बच्चा-जातिवाचक, जानकी निवास-व्यक्तिवाचक, बचपन-भाववाचक, भीड़-समूहवाचक, कुत्ता-जातिवाचक, ऊँचाई-भाववाचक, चेतक-व्यक्तिवाचक, चाँदी-पदार्थवाचक, घोड़ा-जातिवाचक, कालिमा-भाववाचक, बुढ़ापा-भाववाचक, भगवद्गीता-व्यक्तिवाचक, मानवता-भाववाचक, लोहा-पदार्थवाचक, दूध-पदार्थवाचक

(ज) चालाक-चालाकी अच्छा-अच्छाई, गुरु-गुरूत्व युवक-यौवन, व्यक्ति-व्यक्तित्व शत्रु-शत्रुता, हारना-हार नारी-नारीत्व, मित्र-मित्रता एक-एकता, सजाना-सजावट मुस्कुराना-मुस्कुराहट, (झ) पशुता-पशु पुरुषत्व-पुरुष, भ्रातृत्व-भाई पांडित्य-पंडित, कवित्व-कवि वकालत-वकील, सामाजिक-समाज डकैती-डाकू, देवत्व-देवता लड़ाई-लड़ाकू, थकावट-थकान

(ज) 1. वह क्रोध से भर उठा। 2. मुझे घबराहट हो गई। 3. उसकी पढाई ठीक नहीं है। 4. अपूर्वा की लिखाई ठीक नहीं है। 5. आज सभापति का चुनाव है।

(ट) 1. **महात्मा जी** अहिंसा के पुजारी थे। 2. **नेताजी ने** आजाद हिंद फौज बनाई।

(ठ) 1. आज देश को ऐसी लक्ष्मीबाइयों की आवश्यकता है, जो साहस दिखा सकें। 2. आज हर घर में रावण का राज है।

(ड) सफेदी ईर्ष्या वीरता
सेवा चोरी आतिथ्य पहचान

(ढ) मधुरता - विशेषण से, हरियाली - विशेषण से हार - क्रिया से, स्वत्व - सर्वनाम से, कैशोर्य - संज्ञा से

10. लिंग

(क) 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब) 5. (अ)

(ख) 1. नौकरानी 2. भिखारी 3. बेटे 4. पुल्लिंग 5. स्त्रीलिंग

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

(घ) 1. लिंग के कारण संज्ञा में विकार आता है; जैसे संज्ञा शब्द लड़का - लड़की में और बालक - बालिका में बदल जाता है। 2. समूह, कुटुंब, दल, मंडल, परिवार, समाज, संघ आदि। 3. नक्षत्रों के नाम प्राय: स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे कृतिका, भरणी, चित्रा, रोहिणी आदि।

(ङ) 1. शब्द के जिस रूप से यह पता चलता है कि वह पुरूष जाति का है अथवा स्त्री जाति का उसे व्याकरण में लिंग कहते हैं। उदाहरण के लिए शब्द 'बूढ़ा' से पुल्लिंग और 'बुढ़िया' से स्त्रीलिंग होने का पता चलता है। 2. कुछ शब्द हमेशा पुल्लिंग में ही प्रयोग किए जाते हैं उन्हें नित्य पुल्लिंग शब्द कहते हैं तोता, खटमल, कौआ, प्रधानमंत्री, मैनेजर आदि। 3. कुछ शब्द हमेशा स्त्रीलिंग रूप में प्रयोग किए जाते हैं। वे नित्य स्त्रीलिंग शब्द कहलाते हैं; जैसे- सौत, सुहागिन, संतान, मकड़ी, मैना, लोमड़ी आदि।

(च) 1. हिन्दी भाषा में प्रत्येक ..... सास,

अध्यापिका आदि।

2. पुल्लिंग की पहचान – जिन शब्दों के अंत में 'आ'..... परिवार, समाज, संघ आदि। स्त्रीलिंग की पहचान ..... जिन संस्कृत .....आयु आदि। 3. अकारांत पुल्लिंग शब्दों को आकारांत कर देने से वे स्त्रीलिंग हो जाते हैं; .....पूज्य पूज्या। अकारांत तथा आकारांत पुल्लिंग शब्दों को ईकारांत .. .. देव देवी। अकारांत पुल्लिंग शब्दों में 'नी' राजपूत राजपूतनी।

(छ) सेठनी, जाटनी, मोरनी, चोरनी, शेरनी
तेलिन, दर्जिन, ठकुराइन, धोबिन, मालिन
बालिका, सेविका, पाठिका, नायिका, धाविका

(ज)	पुल्लिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग
	स्त्रीलिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग
	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
(झ)	पंडिताइन	विधवा	निवेदिका
	श्रीमति	मादा मच्छर	भवदीय
	पाठिका	अनुजा	बुद्धिमती

(ञ) 1. फिल्म की नायिका एक महान अभिनेत्री थी। 2. इस गीत की गायिका एक सीधी-सादी युवती है। 3. इस राज्य की रानी बड़ी विदुषी है।

11. वचन

(क) 1. (ब) 2. (ब) 3. (अ) 4. (अ) 5. (अ)

(ख) 1. सोना 2. जनता 3. तलवारें 4. मक्खियाँ

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

(घ) 1. शब्द के जिस रूप से किसी संज्ञा या सर्वनाम के संख्या में एक या अनेक होने का पता चलता है, उसे वचन कहते हैं। 2. जिन शब्दों का प्रयोग सदैव एकवचन में होता है वह हैं- सोना, भीड़, जनता, चाय, घी। 3. इन शब्दों का प्रयोग सदैव बहुवचन में होता है– दर्शन, आँसू, होश, हस्ताक्षर।

(ङ) 1. शब्द के जिस रूप से एक वस्तु प्राणी या पदार्थ का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे-लड़का, भाई, माता, पुस्तक, मेज, कुर्सी आदि। 2. शब्द के जिस रूप में एक से अधिक वस्तुओं, प्राणियों या पदार्थों का बोध होता है उसे बहुवचन कहते हैं- जैसे- लड़के, माताएँ, घड़ियाँ आदि।

(च) 1. पुल्लिंग शब्दों के अंतिम 'आ' को 'ए' कर देने से बहुवचन रूप बन जाता है; जैसे- ....शीशा शीशे। अकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के अंत .... चप्पल चप्पलें। इकारांत स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अंत ..... पंक्ति पंक्तियाँ। इकारांत स्त्रीलिंग शब्दों में 'ई' ..... लकड़ी लकड़ियाँ। 2. ये शब्द हैं- **आँसू**- मेरे आँसू बह निकले। **हस्ताक्षर**- मैंने हस्ताक्षर कर दिए। **होश**- शेर को देखकर मेरे होश उड़ गए। **दर्शन**- धन्यवाद आपने दर्शन दिए। 3. ये शब्द हैं- **भीड़**- भीड़ बेकाबू हो गई। **जनता**- जनता अधिकार चाहती है। **सोना**- सोना महंगा हो गया है। **चाय**- चार प्याली चाय देना।

(छ) 1. एकवचन 2. एकवचन 3. एकवचन 4. एकवचन

(ज) मालाएँ, गौएँ, संतजन, मुनिजन, साड़ियाँ, लाठियाँ, वस्तुएँ, धेनुएँ, गरीब लोग, प्रजाजन, विद्वज्जन, छात्रवृंद

(झ) 1. फूल खिल रहे हैं। 2. उससे शीशे टूट गए। 3. लड़कियों ने नृत्य किया। 4. आज के छात्र कल के नेता हैं। 5. डाकुओं को पुलिस ने पकड़ा।

12. कारक

(क) 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (ब) 5. (स)

(ख) 1. पर 2. से 3. के लिए 4. पर 5. में

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(घ) 1. वाक्य में पाए जाने वाले शब्दों का आपस में संबंध बताना कारक का काम है। 2. संज्ञा अथवा सर्वनाम का संबंध क्रिया या दूसरे शब्दों से बताने के लिए उनके साथ जो शब्द चिह्न लगाए जाते हैं, उन्हें परसर्ग कहते हैं। 3. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के करने वाले का बोध होता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं।

(ङ) 1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य में क्रिया, अन्य संज्ञा या सर्वनाम शब्दों से जाना जाए, उसे कारक कहते हैं। जैसे- मोनू आम

काटा। यह वाक्य अधूरा है, इसमें कारक चिह्न (ने) लगा दें तो वाक्य स्पष्ट हो जाएगा- मोनू **ने** आम काटा। 2. वाक्य में जिस संज्ञा या सर्वनाम पर क्रिया के व्यापार का फल पड़े उसे कर्म कारक कहते हैं। जैसे-राम ने रावण को मारा। यहाँ **रावण को** में कर्म है। 3. अपादान कारक व्यक्ति या वस्तु के अलग होने का बोध कराता है; जैसे- पेड़ से पत्ता गिरा। यहाँ पेड़ **से** में पृथकता दिखाता है। अत: अपादान कारक है। 4. क्रिया को करने में कर्ता जिस साधन की सहायता लेता है, वहाँ करण कारक होता है; जैसे-चाकू **से** फल काटो। यहाँ चाकू से में करण कारक है। 5. संज्ञा या सर्वनाम का दूसरे से संबंध दिखाने वाला कारक संबंधकारक कहलाता है। जैसे-यह नीलम का **घर** है।

(च) 1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप .... हे, अरे, ओ।

2. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के करने वाले ..... 'को' का प्रयोग केवल प्राणिवाचक कर्म के साथ ही होता है। 3. संप्रदान कारक ..... पिताजी ने मोहन को बुलाया। (कर्म कारक) 4. कारक .... (हे) बालको!

(छ) 1. अपादान कारक 2. कर्म कारक 3. करण कारक 4. अधिकरण कारक 5. संबंध कारक 6. संप्रदान कारक 7. संबंध कारक 8. संबंध कारक 9. संबोधन कारक 10. अधिकरण कारक

(ज) 1. पिताओं ने 2. कवि को 3. हे (साधुओं!) 4. गौओं की, गौओं को, गौओं के

(झ) 1. रस्सी को कसकर बाँधो। 2. मैं दूध पीता हूँ। 3. तुमने क्या काम किया है? 4. सीमा खाना बनाती है। 5. चाकू से आम काटो। 6. चाकू के द्वारा फल काटो।

(ञ) 1. बकरी शेर से डरती है। 2. नेहा मोना से जलती है। 3. सुधा मेघा से होशियार है। 4. गंदी चीजों से चिढ़ होती है।

(ट) 1. राम ने चाय पी। 2. सड़क पर मत खेलो। 3. उसने राजू को पढ़ाया। 4. गाड़ी देरी से आएगी। 5. मैंने रमेश को रुपये दिए।

13. सर्वनाम

(क) 1. (अ) 2. (ब) 3. (ब) 4. (ब) 5. (अ)

(ख) 1. पुरुषवाचक 2. पुल्लिंग 3. स्त्रीलिंग 4. लिंग 5. अनिश्चयवाचक

(ग) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ 6. ✓ 7. ✓

(घ) 1. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं। 2. बोलने वाले , सुनने वाले या किसी अन्य के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग होता है, उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। 3. जिन सर्वनाम शब्दों से निज या अपनेपन का बोध होता है, वे निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

(ङ) 1. संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे- राघव मेरा भाई है। राघव शब्द संज्ञा है। यदि हम लिखें वह हमारा भाई है। तो वह सर्वनाम है। 2. बोलने वाला या लिखने वाला अपने से संबंध रखने वाले जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है वे उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं, जैसे- मैं, हम, मुझे, हमें। 3. बोलने वाले या लिखने वाला सुनने या पढ़ने वालों के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, उन्हें मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं जैसे तू, तुम, आप, तुम्हें। 4. जिस सर्वनाम से किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध न हो, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे-आपसे कोई मिलने आया है। 5. जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे- क्या, कौन, किसकी आदि।

(च) 1. जिस सर्वनाम से किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु की ओर संकेत ..... वे हमारे हैं।

2. जिन सर्वनाम शब्दों से निज या ..... (आप) निजवाचक आप का प्रयोग स्वयं के लिए तथा मध्यम पुरुषवाचक 'आप' का प्रयोग दूसरों के लिए होता है, जैसे- मैं चाय **आप** बना लूँगा। (निजवाचक सर्वनाम) **आप** कब आए? (मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम)

(छ) 1. (स्वयं) (निजवाचक सर्वनाम) 2. (मेरे)

(दूरवर्ती निश्चयवाचक सर्वनाम) 3. (वे) (अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम) 4. (मैं) (उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम) 5. (कोई) (अनिश्चयवाचक सर्वनाम) 6. (कुछ) (अनिश्चयवाचक सर्वनाम) 7. (कौन) (प्रश्नवाचक सर्वनाम) 8. (जिसे, वही) (संबंधवाचक सर्वनाम) 9. उन्हें (अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम) 10. (क्या) (प्रश्नवाचक सर्वनाम)

14. विशेषण

(क) 1. (स) 2. (स) 3. (अ) 4. (स) 5. (ब)

(ख) 1. भारतीय 2. विषैला 3. बुद्धिमान 4. वैज्ञानिक

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

(घ) 1. संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। 2. जिस संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहते हैं। 3. एक, दो, तीन, चार, दुगना, तिगना आदि शब्द निश्चिय संख्यावाचक विशेषण हैं। 4. जो शब्द वस्तु की मात्रा, नाप या तौल बताते हैं वे परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं। 5. जो पद विशेषण की भी विशेषता बताता है, उन्हें प्रविशेषण कहते हैं।

(ङ) 1. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, रंग आकार तथा दशा आदि का बोध कराते हैं, वे गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे- नीना **अच्छी** लड़की है। ये अंगूर **मीठे** हैं। 2. जिन शब्दों से किसी संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध होता है वे संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे- मेरे पास दो कमीजें हैं। उसके पास तीन गेंद हैं। 3. जो शब्द वस्तु की मात्रा नाप या तौल बताते हैं परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे- एक लीटर दूध लाओ। मुझे थोड़ा पानी दो। 4. जो विशेषण व्यक्तिवाचक संज्ञाओं से बनाए जाते हैं, उन्हें व्यक्तिवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे - जापानी मशीन, बनारसी साड़ी, आदि।

(च) 1. कुछ गुणवाचक विशेषण निम्न प्रकार हैं- ..... गंध - सुगंधित, दुर्गंधपूर्ण आदि। 2. संख्यावाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं- (क) निश्चित संख्यावाचक (ख) अनिश्चित संख्यावाचक। एक, दो, तीन, चार, दूसरा, तीसरा, दुगुना, तीनों आदि शब्द निश्चित संख्यावाचक शब्द हैं तथा कुछ, थोड़े-से, सैकड़ों आदि अनिश्चित संख्यावाचक शब्द हैं। 3. परिमाणवाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं- ..... गिलास में कुछ पानी है। 4. सार्वनामिक विशेषण .... वह लड़का मेरा भाई है। 5. मूल विशेषण - कुछ शब्द मूल रूप ..... अखाद्य। विशेषणों का प्रयोग तीन प्रकार ..... सुंदर, सुंदरतर, सुंदरतम

(छ) 1. एक-चाय 2. काली-गाय 3. सरल, सुबोध-भाषा 4. उपयोगी-पुस्तक 5. बुद्धिमान-मनुष्य

(ज) 1. ज्यादा 2. अत्यंत 3. स्व 4. कुछ 5. कच्चे

(झ)

करुणावान	व्यवहारिक	बिकाऊ
घरेलू	कुलीन	आदरणीय
विपक्ष	गुणवान	कँटीला
धनी	ऊपरी	आगामी
ऐतिहासिक	ममेरा	दिखावटी

15. क्रिया एवं वाच्य

(क) 1. (ब) 2. (स) 3. (स) 4. (स) 5. (ब)

(ख) 1. क्रिया 2. सामान्य 3. पूर्वकालिक 4. सकर्मक 5. सामान्य

(ग) 1. जिस शब्द से किसी कार्य, घटना अथवा अस्तित्व का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं। 2. जिस मूल शब्द से क्रिया बनती है, उसे धातु कहते हैं। 3. धातु में 'ना' जोड़ने से क्रिया का सामान्य रूप बनता है। 4. क्रिया के उस रूप को वाच्य कहते हैं जिससे पता चलता है कि वाक्य में क्रिया द्वारा किए गए कार्य का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म है या भाव है। 5. कभी-कभी धातु अपने मूल रूप में भी प्रयोग होती है किंतु प्राय: यह प्रयोग पुरुषवाचक सर्वनाम के मध्यम पुरुष शब्द 'तू' के साथ होती है। 6. क्रिया के अभाव में कोई भी वाक्य पूर्ण नहीं होता।

(घ) 1. सकर्मक क्रिया ..... अत: ये क्रियाएँ

सकर्मक हैं। 2. अकर्मक क्रिया ..... इसलिए ये अकर्मक क्रियाएँ हैं। 3. सामान्य क्रिया- जहाँ केवल एक ही क्रिया का प्रयोग किया जाए, ... एक-एक क्रियापद हैं।) 4. नामधामु क्रिया- संज्ञा, सर्वनाम अथवा विशेषण आदि शब्दों . ..... चिकना चिकनाना। 5. जब दो या दो से अधिक क्रियाएँ मिलकर प्रयोग की जाएँ तो वे संयुक्त क्रिया कहलाती हैं। 6. मुख्य क्रिया से पहले आने वाली क्रिया ..... ये पूर्वकालिक क्रियाएँ हैं। 7. क्रिया के उस रूप को वाच्य कहते हैं, ... वाच्य के तीन भेद होते हैं।

(ङ) 1. क्रिया से पहले क्या, किसको या किसे लगाकर ..... (क्या हँसता है?-)- अकर्मक क्रिया। 2. ऐसे वाक्यों में कर्ता की प्रधानता होती है ..... एवं श्वेता से है। 3. कर्मवाच्य- ऐसे वाक्यों में कर्म ..... कर्म से है। 4. भाववाचक- ऐसे वाक्य में भाव की प्रधानता .... श्वेता से दौड़ा जाता है।

5. संज्ञा सर्वनाम और विशेषण की भाँति क्रिया भी विकारी ..... वे लिखते हैं। 6. वाक्य में क्रिया के पुरुष, लिंग और वचन कभी तो कर्ता के अनुसार ..... जैसे- रचना से लिखा नहीं जाता। 7. जिस क्रिया से यह पता ..... प्रेरणार्थक क्रिया कहलाती है। दिलवाना, कटवाना, पढ़वाना, मँगवाना, कहलवाना, भिजवाना, मिलवाना, जुड़वाना

(च) 1. पढ़ूँगा-पढ़ 2. खेल रहा है-खेल 3. देखती है-देख 4. देखता हूँ-देख 5. पी लिया होगा-पी

(छ) शर्माना, बदलाना, लजाना, धकियाना, लठियाना, ललचाना, झुठलाना, गर्माना

(ज) 1. बहुवचन 2. बहुवचन 3. एकवचन 4. एकवचन 5. एकवचन

(झ) 1. हँसकर 2. सांत्वना देकर 3. साफ करके 4. पीकर

(ञ) सबको भोजन खिलवाओ।
ठंडा पानी पिलवाओ।
कक्षा में रोज पढ़वाओ।
फर्श सर्फ से धुलवाओ।

(ट) 1. भाववाच्य 2. कर्तृवाच्य 3. कर्मवाच्य 4. भाववाच्य 5. कर्तृवाच्य

(ठ) 1. विमला फूल तोड़ती है। 2. बच्चे द्वारा खेला जा रहा है। 3. आदिल द्वारा कविता पढ़ी जाती है। 4. तरुण द्वारा चाय पी गई। 5. मुझसे बैठा नहीं जाता।

16. काल

(क) 1. (ब) 2. (ब) 3. (ब) 4. (स) 5.(स)

(ख) 1. आसन्न 2. काल 3. साधारण 4. समय 5. अपूर्ण

(ग) 1. सामान्य वर्तमान 2. अपूर्ण वर्तमान 3. संभाव्य भविष्यत 4. हेतुहेतुमद भूत 5. पूर्ण भूत 6. संधिग्ध वर्तमान 7. सामान्य वर्तमान 8. सामान्य भविष्य 9. अपूर्ण भूत 10. आसन्न भूत 11. अपूर्ण वर्तमान 12. सामान्य वर्तमान

(घ) 1. क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने के समय का पता चलता है, उसे काल कहते हैं। 2. मुख्य रूप से काल तीन प्रकार के होते हैं- भूतकाल, वर्तमानकाल, भविष्यतकाल। 3. भूतकाल की क्रिया के साधारण रूप को सामान्य भूत कहते हैं। 4. क्रिया के जिस रूप से वर्तमान काल की क्रिया का सामान्य रूप से होना पाया जाए, उसे सामान्य वर्तमान काल कहते हैं। 5. क्रिया का वह रूप जिससे आने वाले समय में कार्य के सामान्य रूप से होने का बोध हो उसे सामान्य भविष्यत कहते हैं।

(ङ) 1. अपूर्ण भूत- क्रिया का वह रूप जिससे यह ..... जैसे- वह विद्यालय गया था। वर्षा हुई थी। 2. संदिग्ध भूत- क्रिया के जिस रूप से ..... यदि अखिल पढ़ता, तो पास हो जाता। 3. आसन्न भूत- क्रिया के जिस ..... मैंने फूल तोड़ा है। सामान्य भूत- भूतकाल की क्रिया के साधारण ..... दीपक गया।

(च) 1. जो समय चल रहा है, उसे वर्तमान काल कहते हैं; .....बच्चा भूखा होगा। 2. सामान्य भविष्यत्- क्रिया का वह रूप जिससे आने

वाले ..... संभवत: मैं कल चला जाऊँ।

(छ) 1. पिता जी आ रहे हैं। पिताजी आते होंगे।
2. लता गीत गा रही है। लता गीत गाती होगी।
3. बच्चे पतंग उड़ा रहे हैं। बच्चे पतंग उड़ाते होंगे।
4. वह खेल रहा है। वह खेलता होगा।
5. हम मेला देखने जा रहे हैं। हम मेला देखते होंगे।

17. अव्यय या अविकारी शब्द

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब) 6. (स)

(ख) 1. कालवाचक 2. स्थानवाचक 3. संबंधबोधक 4. रीतिवाचक 5. विस्मयादिबोधक

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

(घ) 1. जिस अव्यय से क्रिया की विशेषता जानी है, उसे क्रियाविशेषण कहते हैं। 2. जो अव्यय संज्ञा या सर्वनाम के बाद आकर उनका संबंध वाक्य में प्रयुक्त अन्य शब्दों के साथ प्रकट करते हैं, उन्हें संबंधबोधक अव्यय कहते हैं। 3. जो अव्यय दो शब्दों, दो उपवाक्यों अथवा दो वाक्यों को जोड़ने का कार्य करते हैं वो समुच्चयबोधक अव्यय कहलाते हैं। 4. वाक्य में प्रयुक्त जिन शब्दों के द्वारा हर्ष, विवाद, शोक, घृणा आदि भाववेग प्रकट होते हैं, वे विस्मयादिबोधक कहलाते हैं।

(ङ) 1. जो क्रियाविशेषण क्रिया के होने के समय का बोध कराते हैं कालवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं, जैसे- सुरेश **कल** आएगा। आप **अब** जा सकते हैं। 2. जो क्रियाविशेषण क्रिया के होने के स्थान या ..... दूर, निकट आदि। 3. जिन शब्दों द्वारा क्रिया के ..... परिमाणवाचक क्रियाविशेषण हैं। 4. जिन क्रियाविशेषण शब्दों ..... अत: ये रीतिवाचक क्रियाविशेषण हैं। 5. रूप-रचना के आधार पर संबंधबोधक ..... के पश्चात् आदि। 6. अर्थ के आधार पर संबंधबोधक ..... की खातिर, के निमित्त आदि। 7. समानाधिकरण समुच्चयबोधक के चार भेद ..... चाहे, अन्यथा आदि। 8. कुछ प्रमुख विस्मयादिबोधक शब्द- हर्षबोधक- वाह, ... ओह, हाय आदि।

(च) 1. क्रियाविशेषण के निम्नलिखित कार्य हैं- . ..... क्रिया की दिशा का बोध कराते हैं। 2. जो समुच्चयबोधक समान स्थिति वाले अर्थात् .... समुच्चयबोधक हैं। विरोधक- ये वे शब्द हैं जो पहले ..... क्योंकि इस कारण आदि। 3. ये वे शब्द हैं, जो एक या अधिक ..... इस कारण आदि। स्वरूपबोधक - ये अव्यय पहले के ..... यहाँ तक कि आदि।

(छ) 1. तेज 2. धीरे-धीरे 3. अच्छा 4. कल 5. तो

(ज) 1. बिना 2. के ऊपर 3. के सहारे 4. के पास 5. के मारे 6. के भीतर 7. की ओर

(झ) 1. या (समानाधिकरण) 2. परंतु (समानाधिकरण) 3. तो (व्यधिकरण) 4. अपितु (समानाधिकरण) 5. और (समानाधिकरण) 6. बल्कि (व्यधिकरण) 7. क्योंकि (व्यधिकरण) 8. या (समानाधिकरण)

(ञ) 1. क्रियाविशेषण 2. संबंधबोधक 3. संबंधबोधक 4. संबंधबोधक 5. क्रियाविशेषण 6. संबंधबोधक

(ट) 1. धिक् 2. अहा 3. हाय 4. अरे 5. हाँ-हाँ 6. छि: छि: 7. हाय

18. वाक्य-प्रकरण

(क) 1. (स) 2. (स) 3. (अ) 4. (अ) 5. (स) 6. (अ) 7. (स)

(ख) 1. सरल 2. प्रश्नवाचक 3. आज्ञावाचक 4. सरल 5. मिश्र

(ग) 1. उसने (चार छक्के लगाए) 2. अविनाश (ईमानदार लड़का है) 3. लड़के (शोर मचाते हैं) 4. वह (किसी से झगड़ा नहीं करता) 5. सूर्य (संसार को गर्मी देता है) 6. जनता (ने मंत्रीजी का स्वागत किया) 7. ठंडी हवा (चल रही थी) 8. तुम्हारे माता-पिता (कहाँ गए हैं?)

(घ) 1. प्रश्नवाचक वाक्य 2. आज्ञावाचक वाक्य 3. इच्छासूचक वाक्य 4. संकेतवाचक वाक्य 5. विधानवाचक वाक्य 6. संदेहवाचक वाक्य

7. नकारात्मक वाक्य 8. विस्मयादिबोधक

(ङ) 1. मिश्र वाक्य 2. संयुक्त वाक्य 3. मिश्र वाक्य 4. संयुक्त वाक्य 5. सरल वाक्य 6. मिश्र वाक्य 7. मिश्र वाक्य 8. मिश्र वाक्य 9. संयुक्त वाक्य 10. सरल वाक्य

(च) 1. सार्थक शब्दों का व्यवस्थित समूह वाक्य कहलाता है। 2. वाक्य में सार्थकता, योग्यता, आकांक्षा, आसक्ति या निकटता, पदक्रम और अन्वय आवश्यक तत्व हैं। 3. वाक्य में सार्थक शब्दों का प्रयोग सार्थकता है। 4. सार्थक शब्द प्रसंग के अनुसार अर्थ देने के भी योग्य हो, यही योग्यता है।

(छ) 1. वाक्य में जिसके बारे में कुछ बताया जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं। जैसे बच्चे खेलते हैं। इस वाक्य में बच्चे उद्देश्य हैं। 2. वाक्य में उद्देश्य के बारे में कुछ बताया जाता है, वह विधेय कहलाता है; जैसे- 'लड़के शोर मचाते हैं।' -यहाँ 'शोर मचाते हैं' विधेय है। 3. आकांक्षा का अर्थ है-इच्छा। वाक्य ..... शब्द समूह है, वाक्य नहीं। 4. दो या दो से अधिक साधारण ..... प्रयोग किया जाता है।

(ज) 1. सरल (साधारण) वाक्य- जिन वाक्यों में एक ..... का प्रयोग किया जाता है। मिश्र वाक्य- जिस वाक्य ..... ज्यों-ज्यों, त्यों-त्यों आदि। 2. अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं- ..... रात होगी तो तारे आसमान में निकलेंगे।

(झ) 1. चोर को कोई आश्रय नहीं देगा। 2. सचमुच! वह बहुत उदार है। 3. मैं क्या जानूँ कि तुम कौन हो। 4. जो संतुष्ट है वही सुखी रहता है। 5. यह घड़ी मैंने कल खरीदी थी। 6. वह तुम्हें नहीं जानता। 7. जब सिपाही ने देखा तो चोर भाग गया। 8. उसे सब्जी लेनी थी इसलिए वह बाजार गया। 9. किन पशुओं से सब घबराते हैं? 10. बच्चे ने दूध पिया और सो गया।

20. विराम-चिह्नों का प्रयोग

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब)

(ख)

योजक	उपविराम
संक्षेपक	विवरण चिह्न
उद्धहरण	प्रश्नसूचक
विस्मयादिबोधक	त्रुटिपूरक

(ग) 1. निधि, नम्रता, और नीरा सो गईं। माला, ममता और मीना पढ़ रहीं हैं। 2. सुबह हुई; सूरज निकला; लोग उठ गए। चार बजे; घंटी बजी; छुट्टी हो गई। 3. हाय! इतनी बडी दुर्घटना हो गई। उफ्! बड़ी गर्मी है। 4. चाय, चावल चीनी आँवला भिजवा दीजिए। दूसरों का हित चिंतन करने वाले महापुरूष कहलाते हैं।

(घ) 1. वाक्य के पूर्ण हो जाने पर लगने वाला चिह्न पूर्ण विराम है। 2. जहाँ पूर्ण विराम की अपेक्षा कम रुकना होता है, वहाँ अर्द्धविराम चिह्न लगाया जाता है। 3. वाक्य में प्रश्नसूचक चिह्न प्रश्न के बाद लगाया जाता है। 4. दो शब्दों को जोड़ने के लिए बीच में योजक चिन्ह का प्रयोग करते हैं जैसे- भाई-बहन, घर-द्वार आदि।

(ङ) 1. जहाँ किसी विचार को विभक्त कर बीच में उदाहरण दिए जाते हैं, ... मैं तुम्हें आजादी दूँगा।" 2. विस्मय, हर्ष, शोक, घृणा आदि . ..... हाय! मैं लुट गया।

(च) 1. उदाहरण या निम्नांकित का संकेत करने के लिए इसका प्रयोग करते हैं; जैसे-संज्ञा शब्दों .... एक सामाजिक कलंक आदि। कोष्ठक चिह्नों का प्रयोग ..... व्यतीत करते थे। 2. ऊपर की पंक्ति में लिखे शब्दों को नीचे .... हिन्दी के महान कवि हुए हैं।

(छ) 1. शिष्य: क्या यह दुनिया दुखों का जाल ही बनी रहेगी?

गुरु: दुख तो मानव ने स्वयं पैदा किए हैं।

शिष्य : आखिर उचित मार्ग क्या है?

2. शिष्य ने पूछा-यह क्या हो गया महाराज?

3. व्युत्पत्ति के अनुसार शब्द के तीन भेद हैं- रूढ़, यौगिक व योगरूढ़। 4. इस देश में सभी धर्मों कों मानने वाले लोग रहते हैं। वैसे यहाँ हिन्दुओं की

संख्या सबसे अधिक है परंतु मुसलमान, ईसाई, पारसी, सिक्ख आदि सभी धर्मों के लोग एक साथ रहते हैं। 5. भारतवर्ष में सामाजिक, सांस्कृतिक व राष्ट्रीय पर्व बड़ी धूमधाम से मनाए जाते हैं। 6. दीपावली पर बच्चे बम, पटाखे, फुलझड़ियाँ, अनार बम, आतिशबाजी छुड़ाकर अपनी खुशी प्रकट करते हैं।

21 मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (स) 5. (ब) 6. (अ)

(ख) 1. आँखों का काँटा 2. दाल 3. नाक में दम 4. अठखेलियाँ 5. बगुला

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓ 6. ✗

(घ) 1. इसका अर्थ है सुख के दिन नहीं रहते 2. इसका अर्थ है- प्रभाव स्वीकार करना 3. अर्थ है- गरीबी में विपत्ति आना। 4. अर्थ है सभी ओर से विपत्ति आना।

(ङ) 1. 'मुहावरा' शब्द का अर्थ है ..... स्वतंत्र रूप से नहीं। उदाहरण : अक्ल का दुश्मन - मूर्ख 2. लोकोक्ति (लोक + उक्ति) का सामान्य .... कहावत भी कहा जाता है। उदाहरण : अपनी करनी पार उतरनी - जैसा काम, वैसा फल।

(च) 1. लोकोक्ति (लोक + उक्ति) का सामान्य .. .. कहावत भी कहा जाता है। 2. लोकोक्ति लोक में प्रचलित वह उक्ति ..... स्पष्ट करता है।

(छ) 1. (अक्ल पर पत्थर पड़ना) मेरी अक्ल पर पत्थर पड़े थे जो मैं बिना ताला लगाए घर से बाहर चला गया 2. (चौकन्ना रहना) चौकन्ने रहो, किसी भी वक्त सीमा से बुलावा आ सकता है। 3. (आम के आम गुठलियों के दाम) अखबारों से समाचार भी पढ़ने को मिलते हैं और रद्दी के पैसे भी। है न आम के आम गुठलीयों के दाम 4. (अँगुली उठाना) दूसरों पर अँगुली उठाने से पहले स्वयं को देखना चाहिए। 5. (अपना उल्लू सीधा करना) अपना उल्लू सीधा करने के लिए लोग बड़ा छल करते हैं। 6. (बाल भी बांका न होना) ईश्वर का नाम लेकर जाओ, कोई तुम्हारा बाल भी बांका नहीं कर सकेगा। 7. (आसमान से तारे तोड़ लाना) तुम्हारे लिए आसमान से तारे तोड़ लाने की बात करने वालों को परखना आवश्यक है।

(ज) 1. सब कहते थे मॉल से सामान लाओ। मैंने पर्स लिया पर आते ही चैन टूट गई। 2. अपने पिता का पैसा इधर-उधर देकर राहुल ने ईंट का घर मिट्टी कर दिया। 3. दिनेश मजदूरों में बी.ए. पास है। वही अंधों में काना राजा है। 4. अब बिजली अधिक देने से क्या लाभ परीक्षा में तो पावर कट लगते रहे।

22. मौखिक रचना

1. कविता पाठ- कविता पाठ में समुचित लय, गति ..... प्राणवान हो उठती है। 2. कथा-कहानी- ..... उपयोगी कोष है। 3. घटना-वर्णन .... विशेष प्रभाव डालती है। 4. समाचार-पाठ- मौखिक भाव-प्रकाशन ..... जा सकते हैं। 5. यह भाषा रचना का उत्कृष्ट रूप है ..... याद कर लेना चाहिए। 6. वार्तालाप एवं परिचर्चा- इसके ..... से बचना चाहिए। 7. चुटकुले - जीवन ..... सुनाया जाना चाहिए। 8. संवाद और अभिनय- सवांद का अर्थ ..... कुशलता के माध्यम है।

व्याकरण मेदिनी-7

1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (ब) 4. (स) 5. (स)

(ख) 1. पद्य 2. गद्य 3. लिपि 4. बोली 5. सीमित

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗

(घ) 1. भाषा विचारों के आदान-प्रदान का वह साधन है, जिसे लिखने या बोलने के प्रयोग में लाया जाता है।

2. भाषा जिसे बालक अपने परिवार से अपनाता व सीखता है, मातृभाषा कहलाती है।

3. भाषा को लिखने की विधि लिपि कहलाती है।

4. व्याकरण वह शास्त्र है, जिसके द्वारा किसी भाषा

के नियमों और व्यवस्थाओं का ज्ञान प्राप्त होता है।

5. हिन्दी-देवनागरी, संस्कृत-देवनागरी, अंग्रेजी-रोमन

(ङ) 1. भाषा के दो भेद होते हैं–(1) मौखिक भाषा (2) लिखित भाषा

2. भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं। देश की विभिन्न बोलियाँ–अवधी, ब्रज, भोजपुरी, मैथिली, बुंदेली, कुमाऊँनी, गढ़वाली, मारवाड़ी।

3. बालक जिस परिवार में जन्म लेता है, उस परिवार के सदस्यों द्वारा बोले जाने वाली भाषा सबसे पहले सीखता है। यह भाषा मातृभाषा कहलाती है।

4. वह भाषा जो देश के सरकारी कार्यालयों व राज-काज में प्रयोग में लाई जाती है, राजभाषा कहलाती है। भारत में अंग्रेजी व हिन्दी दोनों भाषाएँ राजकार्य में प्रयोग में लाई जाती हैं। ब्रिटेन व अमेरिका की राजभाषा अंग्रेजी है।

5. जिस भाषा को अधिकांश देश विचारों व सूचनाओं के परस्पर आदान-प्रदान में लाते हैं, वह अंतर्राष्ट्रीय भाषा का स्थान प्राप्त कर लेती है। अंग्रेजी को अंतर्राष्ट्रीय भाषा का स्थान प्राप्त है।

6. भारतीय संविधान में 22 भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है। ये हैं–हिन्दी, उर्दू, पंजाबी, असमिया, बंगला, डोगरी, बोडो, नेपाली, गुजराती, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयालम, मराठी, मणिपुरी, उड़िया, संस्कृत, संथाली, सिंधी, तमिल व तेलगु।

(च) 1. वर्तमान युग में सभ्य समाज भाषा के माध्यम से ..... कर प्रकट करता है। मुख से बोलकर जो विचार ..... ध्वनियों का प्रयोग होता है।

2. भाषा के दो रूप होते हैं ..... प्रयोग किया जाता है। भाषा के क्षेत्रीय रूप को ..... विस्तृत तथा व्यापक होता है।

3. किसी प्रदेश में जनसामान्य द्वारा प्रमुख रूप से बोली जाने वाली भाषा प्रादेशिक भाषा कहलाती है। वह भाषा ..... राष्ट्रभाषाएँ हैं।

वह भाषा जो देश ..... राजभाषा कहलाती है।

4. किसी देश के ..... ठंड (मानक रूप)

5. किसी भाषा ..... रूप प्रदान करता है।

2. वर्ण-विचार

(क) 1. (अ) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ) 5. (ब)

(ख) 1. महाप्राण 2. अघोष 3. अल्पप्राण 4. ह्रस्व 5. संधि

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

(घ) ऊँट–अनुनासिक, पंख–अनुस्वार, पाँच–अनुनासिक, बाँसुरी–अनुनासिक, दंत–अनुस्वार, अंतर–अनुस्वार, साँप–अनुनासिक, संशय–अनुस्वार, ताँगा–अनुनासिक, गाँव–अनुनासिक

(ङ) 1. वर्ण लिखित भाषा की सबसे छोटी इकाई है, इसके और टुकड़े नहीं किए जा सकते।

2. जिन वर्णों का उच्चारण करते समय किसी अन्य वर्ण की सहायता की आवश्यकता नहीं पड़ती उन्हें स्वर वर्ण कहते हैं। जैसे–अ, आ, इ आदि।

3. जिन वर्णों के उच्चारण में स्वर सहायक होते हैं, उन्हें व्यंजन वर्ण कहते हैं, जैसे–क, ख, च, छ आदि।

4. अं और अः ये दो ऐसी ध्वनियाँ हैं, जो न स्वर हैं और न ही व्यंजन हैं। अतः इन्हें अयोगवाह कहते हैं। अयोगवाह का अर्थ है–जो जुड़ा न हो परंतु साथ लेकर चले।

5. प्रयत्न का अर्थ है ..... यत्न प्रयत्न कहलाता है।

6. स्वरों के दो भेद हैं–(1) उच्चारण की दृष्टि से (2) बनावट की दृष्टि से

7. (1) स्पर्श व्यंजन (2) अंतःस्थ व्यंजन (3) ऊष्म व्यंजन

(च) 1. हिन्दी में कुछ ..... कहते हैं। ड़, ढ़ स्वनिम ध्वनियाँ हैं। ये दोनों ड और ढ से विकसित हुई हैं उच्चारण के समय ड और ढ ध्वनियाँ शब्द के शुरू में तथा शब्द के बीच में संयुक्त व्यंजनों के रूप में आती हैं।

2. हिन्दी में ऐसी ध्वनियाँ जो पहले प्रयोग में नहीं

थी, अरबी, फारसी, अंग्रेजी आदि शब्दों के कारण प्रयोग में आने लगी हैं। इन्हें आगत ध्वनियाँ कहते हैं।
3. अनुस्वार और विसर्ग दोनों ध्वनियाँ न स्वर हैं और न व्यंजन; जैसे–अत:, अंत:, करण आदि। इनका दोनों (स्वर तथा व्यंजन) के साथ योग नहीं है। इसीलिए यह अयोगवाह कहलाती हैं। ये हैं- अं और अत:। विसर्ग का चिह्न : है।
4. दो या दो से अधिक.....तल्लीन, गल्ला।
5. मूल स्वर ..... अ + ओ = औ
(छ) 1. उच्चारण की ..... प्लुत स्वर कहते हैं।
2. व्यंजनों की तीन ..... श, ष, स, ह।
3. बाह्य प्रयत्न ..... श, ष, स, ह महाप्राण हैं।
4. उच्चारण-स्थान के आधार पर वर्णों के भेद निम्नलिखित हैं–कंठ्य वर्ण ..... ये हैं–व और फ़।
5. 'र' व्यंजन को अन्य व्यंजनों ..... श्रम श्रेष्ठ श्रीमती
(ज)
अध्ययन–अ + ध् + य् + अ + य् + अ + न् + अ
अनुकूल–अ + न् + उ + क् + ऊ + ल् + अ
प्रतिकूल–प् + र् + इ + त् + अ + क् + ऊ + ल्+अ
आजकल–आ + ज् + अ + क् + अ + ल् + अ
सत्यभाष–स् + अ + त् + य् + अ + भ् + आ+ष्+अ
(झ) टमाटर, उच्चारण, स्वार्थी, बनावट, रणभूमि, समझदार

3. शब्द-विचार

(क) 1. (ब) 2. (ब) 3. (ब) 4. (स) 5. (अ)
(ख) 1. अपरिवर्तनीय 2. परिवर्तनीय 3. योगरुढ़ 4. तत्सम 5. यौगिक
(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓
(घ) 1. एक अथवा अनेक वर्णों के संयोग से बने सार्थक ध्वनि-समूह को शब्द कहते हैं।
2. वाक्य में प्रयुक्त शब्द के व्यावहारिक रुप को पद कहते हैं।
3. वे शब्द जो बिना किसी परिवर्तन के ज्यों-के त्यों संस्कृत भाषा से हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं।
4. जिन शब्दों का प्रयोग केवल एक ही अर्थ में किया जाता है, वे एकार्थी शब्द कहलाते हैं जैसे–रोटी, कुत्ता, लोहा आदि।
5. भाषा में कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है जिनके अनेक अर्थ होते हैं उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं; जैसे–पत्र, कर आदि।
(ङ) 1. वे शब्द जो संस्कृत भाषा से हिंदी भाषा में बिना किसी बदलाव के लिए गए हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं; जैसे–जिह्वा, क्षेत्र, कार्य आदि। जो शब्द संस्कृत भाषा से थोड़े बदलाव के साथ हिन्दी में आए हैं वे तद्भव शब्द कहलाते हैं; जैसे–अंधकार–अँधेरा।
2. जो शब्द देश के विभिन्न प्रदेशों में प्रचलित आम बोल-चाल की भाषा से हिन्दी में आ गए हैं वे देशज शब्द कहलाते हैं; जैसे–पेड़, चूहा, लोटा आदि।
3. वे शब्द जो अन्य शब्दों ..... रूढ़ शब्द कहलाते हैं। उदाहरण : घर, हाथी, आदमी, आदि।
4. दो भाषाओं के मेल से बने शब्द संकर शब्द कहलाते हैं; जैसे–रेलगाड़ी–रेल (अंग्रेजी) + गाड़ी (हिंदी), घड़ीसाज–घड़ी (हिन्दी) + साज (अरबी) आदि।
(च) 1. अनेकार्थी शब्द ..... नहीं कहा जा सकता।
2. योगिक शब्द ..... योगरूढ़ शब्द हैं।
3. विकारी शब्द ..... विस्मयादिबोधक।
(छ) यौगिक शब्द–राजकुमार, पुस्तकालय, पानवाला; **रूढ़ शब्द**–घर, हाथी, आदमी; **योगरूढ़ शब्द**–नीलकंठ, चारपाई, पंकज; **संकर शब्द**–रेलगाड़ी, घड़ीसाज; **विकारी शब्द**–लड़का, वह, अच्छा ; **अविकारी शब्द**–आज, धीरे-धीरे, अभी
(ज) पत्ता–पत्र, नाक–नासिका, शक्कर–शर्करा, हाथ–हस्त, आँख–अक्षि, जीभ–जिह्वा, बूँद–बिंदु, गाय–धेनु, गधा–गर्दभ, धुआँ–धूम्र, कछुआ–कच्छप, उजला–उज्जवल, सूत–सूत्र, भाप–वाष्प, छेद–छिद्र, चूरन–चूर्ण, आठ–अष्ट, घंटी–घंटिका

4. शब्द-रचना

(क) 1. (ब) 2. (ब) 3. (स) 4. (स) 5. (स) 6. (ब)

(ख) 1. (ब) 2. (अ) 3. (स) 4. (ब) 5. (अ) 6. (स) 7. (ब)

(ग) 1. आवा 2. आना 3. वान 4. बे 5. आई

(घ) 1. अलग, अटल, अचेत, अज्ञान 2. परामर्श, पराजय, पराधीन, पराभव 3. खुशदिल, खुशनसीबी, खुशकिस्मत 4. चतुराई, बुराई, ठकुराई 5. डूबता, चलता, रोता

(ङ) 1. कर्ता का बोध कराने वाले प्रत्यय कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं।

2. कर्म का बोध कराने वाले प्रत्यय कर्मवाचक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं।

3. करण अर्थात् साधन का बोध कराने वाले प्रत्यय करणवाचक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं।

4. क्रिया के व्यापार या भाव का बोध कराने वाले प्रत्यय भाववाचक कृत प्रत्यय कहलाते हैं।

5. क्रियाविशेषण, संज्ञा, अव्यय अथवा विशेष प्रकार के क्रिया शब्दों का बोध कराने वाले प्रत्यय क्रियार्थक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं।

(च) 1. 'उपसर्ग' वे शब्दांश हैं, जो किसी शब्द के पहले जुड़कर उसके अर्थ में विशेषता उत्पन्न कर देते हैं अथवा उसके अर्थ को बदल देते हैं; जैसे–माता = माँ, विमाता = सौतेली माँ (उपसर्ग + मूल - शब्द); अशांति (उपसर्ग + मूलशब्द)। यहाँ उपसर्ग के प्रयोग द्वारा शब्दों का अर्थ बदल गया है।

अति	बहुत	अत्यंत, अत्यधिक, अत्याचार
अनु	पीछे, समानता	अनुराग, अनुकरण, अनुशासन
अव	बुरा	अवकाश, अवगुण, अवशेष

2. शब्दों के अंत में जुड़कर उनके अर्थ में विशेषता अथवा परिवर्तन लाने वाले शब्दांश प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे–पंकज (पंक + कीचड़, ज + जन्म लेने वाला) जिन प्रत्ययों को संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण के अंत में लगाने से नए शब्द बनते हैं उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं; जैसे–पाठ + क = पाठक, चाचा + एरा = चचेरा

5. संधि

(क) 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ) 5. (अ)

(ख) 1. दीर्घ 2. यण 3. गुण 4. यण 5. वृद्धि

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓

(घ) 1. एक ही जाति के स्वरों के निकट आने पर उनके मेल से उसी जाति का दीर्घ स्वर बन जाता है। इस मेल को दीर्घ संधि कहते हैं।

(अ + अ = आ) धर्म + अर्थ = धर्मार्थ

(अ + आ = आ) परम + आत्मा = परमात्मा

2. किसी स्वर के बाद यदि 'छ' वर्ण आ जाए, तो 'छ्' से पहले 'च्' वर्ण जोड़ दिया जाता है; जैसे–आ + छादन = आच्छादन, वि + छेद = विच्छेद

3. यदि विसर्ग से पहले 'अ' हो और विसर्ग के बाद 'क' या 'प' हो, तो विसर्ग का लोप नहीं होता।

4. विसर्ग के बाद यदि 'श, ष' या 'स' हो, तो विसर्ग का क्रमशः श्, ष् या स् हो जाता है; जैसे–

निः + संदेह = निःसंदेह या निस्संदेह

दुः + शासन = दुःशासन या दुस्शासन

(ङ) 1. निकटवर्ती वर्णों के मेल से होने वाले परिवर्तन को संधि कहते हैं। 'संधि' का अर्थ है 'मेल'। निम्नलिखित शब्दों पर ध्यान दीजिए–

(राम + अवतार) = रामावतार

(सुर + ईश) = सुरेश

2. संधि के नियमों के अनुसार मिले हुए वर्णों को यदि फिर से अलग-अलग कर दें, तो उसे संधि-विच्छेद कहा जाता है; जैसे–विद्यालय का संधि-विच्छेद होगा–विद्या + आलय।

3. जब मिलने वाले दो शब्दों में से पहले शब्द के अंत में स्वर होता है और दूसरे शब्द के प्रारम्भ में भी स्वर होता है, तब वहाँ स्वर संधि होती है। उदाहरण–विद्या + आलय = विद्यालय।

4. जब परस्पर मिलने वाले दो शब्दों में से पहले शब्द के अंत में कोई व्यंजन और दूसरे शब्द के प्रारंभ में कोई स्वर या व्यंजन हो, तो उनके बीच होने वाले मेल को व्यंजन संधि कहते हैं।

दिक् + दर्शन = दिग्दर्शन

जगत् + ईश = जगदीश

(च) 1. **दीर्घ संधि**–एक ही जाति के स्वरों के निकट आने पर उनके मेल से उसी जाति का दीर्घ स्वर बन जाता है। इस मेल को दीर्घ संधि कहते हैं।

(अ + अ = आ) धर्म + अर्थ = धर्मार्थ

(अ + आ = आ) परम + आत्मा = परमात्मा

गुण संधि–यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' हो, तो दोनों के स्थान पर 'ए'; यदि 'उ' या 'ऊ' हो तो दोनों के स्थान पर 'ओ' और यदि 'ऋ' हो तो 'अर्' तो जाता है। इसे गुण संधि कहते हैं।

(अ + इ = ए) देव + इन्द्र = देवेन्द्र

(अ + ई = ए) नर + ईश = नरेश

2. **वृद्धि संधि**–जब 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' हो, तो दोनों के स्थान पर 'ऐ'; यदि 'ओ' या 'औ' हो तो दोनों के स्थान पर 'औ' हो जाता है। इस मेल को वृद्धि संधि कहते हैं।

(अ + ए = ऐ) एक + एक = एकैक

(अ + ऐ = ऐ) मत + ऐक्य = मतैक्य

यण संधि–'इ' या 'ई' के बाद इससे भिन्न कोई स्वर हो, तो 'इ' या 'ई' का 'य' हो जाता है। 'उ' या 'ऊ' के पश्चात् इससे भिन्न कोई स्वर हो, तो 'उ' या 'ऊ' का 'व्' हो जाता है और 'ऋ' के पश्चात् 'ऋ' को छोड़ कोई अन्य स्वर हो, तो ऋ कर 'र' हो जाता है। इस मेल को यण संधि कहते हैं।

(इ + अ = य) यदि + अपि = यद्यपि

(इ + आ = या) परि + आवरण =पर्यावरण

अयादि संधि–यदि ए, ऐ, ओ, औ के आगे कोई विजातीय (असमान) स्वर आ जाए, तो ए का 'अय्', 'ऐ' का 'आय', ओ का 'अव्' तथा 'औ' का 'आव्' हो जाता है। इसे अयादि संधि के नाम से जाना जाता है।

(ए का 'अय्') ने + अन = नयन

(ऐ का 'आय्') गै + अन = गायन

3. पहले वर्गीय वर्ण ..... उद्धरण

4. विसर्ग के बाद यदि ..... नीरव

(छ) सूर्योदय, निष्कपट, गायक, जगतच्छाया, अभिषेक, यथेष्ट, शिक्षालय, परमौज, इत्यादि, मनोयोग, विषम, अनुच्छेद, रेखांकित, स्वेच्छा, यथेष्ट, मदोन्नत, भावार्थ, निष्ठुर

(ज) गंगा + उदक, देव + इंद्र, मातृ + आज्ञा, धर्म + अर्थ, नि + ऊन, अति + अधिक, मनः + रथ, सत् + जन, पो + इत्र, चे + अन, दुः + गुण, तत् + भव

6. समास

(क) 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (अ) 5. (स)

(ख) 1. अपादान 2. अधिकरण 3. संप्रदान 4. कर्म 5. संबंध

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(घ) 1. चौराहा 2. नीलकंठ 3. पीतांबर 4. लंबोदर 5. महात्मा

(ङ) 1. परस्पर संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं।

2. ''संधि में वर्णों का और समास में शब्दों का मेल होता है।'' संधि में वर्णों के योग से वर्ण-परिवर्तन भी होता है जबकि समास में दो या अधिक शब्द मिलकर एक नया शब्द बनाते हैं।

3. समासयुक्त पद को समस्तपद कहते हैं। विग्रह करने पर समस्तपद के दो पद बन जाते हैं–पूर्वपद और उत्तरपद।

4. दो शब्दों के बीच आई विभक्ति का लोप न होना अलुक् तत्पुरुष समास कहलाता है जैसे–खेचर–खे (गगन में) चर

5. जिस समस्तपद में पहला पद निषेधात्मक हो उसे 'नञ् तत्पुरुष' कहते हैं।

6. जिस समस्तपद के दोनों पदों के बीच में कोई पद लुप्त हो उसे 'मध्यमपदलोपी तत्पुरुष' कहते हैं; जैसे–बैलगाड़ी-बैलों से खींची जाने वाली गाड़ी।

(च) 1. (1) कर्म तत्पुरुष–रथ चालक-रथ को चलाने वाला (2) करण तत्पुरुष-गुणयुक्त-गुणों से युक्त (3) संप्रदान तत्पुरुष-डाकगाड़ी-डाक के लिए गाड़ी (4) अपादान तत्पुरुष-गुणहीन-गुणों से

हीन (5) संबंध तत्पुरुष-सेनापति-सेना का पति (6) अधिकरण तत्पुरुष-आपबीती-आप पर बीती

2. कर्मधारय समास ..... भला-बुरा आदि।

3. द्विगु समास ..... आठ सिद्धियों का समूह

बहुव्रीहि समास ..... (कृष्ण)

4. द्विगु समास ..... (श्रीकृष्ण)

5. द्वंद्व समास ..... समास कहलाता है।

(छ) वन का वासी (तत्पुरुष समास), नर और नारी (द्वन्द समास), चार भुजाओं वाला (बहुव्रीहि समास), जोब और खर्च (द्वन्द समास), ऋण से मुक्त (तत्पुरुष समास), सीता और राम (द्वन्द समास) चक्र धारण किया है जिसने (बहुव्रीहि समास), पथ से भ्रष्ट (तत्पुरुष समास), नीली है जो गाय (कर्मधारय समास), राजा का कुमार (तत्पुरुष समास), तील लोचन हैं जिसके (बहुव्रीहि समास), शक्ति के अनुसार (अव्ययीभाव समास)

(ज) दोषयुक्त–तत्पुरुष समास, पति-पत्नी–द्वन्द समास, नरभक्षी–तत्पुरुष समास, दोराहा–द्विगु समास, पाप-पुण्य - द्वन्द्व समास, त्रिफला - द्विगु समास, काली मिर्च–कर्मधारय समास, धनहीन–तत्पुरूष समास।

7. संज्ञा

(क) 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (अ) 5. (अ)

(ख) 1. भाववाचक 2. जातिवाचक 3. भाववाचक भाववाचक 4. भाववाचक 5. सेवा

(ग) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(घ) 1. क्रिया से 2. विशेषण से 3. सर्वनाम से 4. जातिवाचक संज्ञा से 5. विशेषण से

(ङ) 1. लालकिला, दिल्ली–व्यक्तिवाचक संज्ञा

2. अपूर्व–व्यक्तिवाचक संज्ञा 3. महाराष्ट्र–व्यक्तिवाचक संज्ञा 4. विभीषणों-जातिवाचक संज्ञा 5. सुंदरता–भाववाचक संज्ञा, ताजमहल–व्यक्तिवाचक संज्ञा 6. गोस्वामी, रामचरितमानस–व्यक्तिवाचक संज्ञा 7. अशोक, तक्षशिला–व्यक्तिवाचक संज्ञा 8. गन्ना–जातिवाचक संज्ञा, मिठास–भाववाचक संज्ञा 9. हिमालय–व्यक्तिवाचक संज्ञा 10. दलों– समूहवाचक संज्ञा 11. दूध–जातिवाचक संज्ञा 12. लोमड़ी–जातिवाचक संज्ञा, अंगूर के गुच्छे– समूहवाचक संज्ञा

(च) 1. कक्षा, गुच्छा, समूह, मण्डल, सभा आदि।

2. गरीबों के लिए राशन कार्ड पर तेल मिल रहा है।

(छ) 1. किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, गुण, अथवा भाव आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं। उदाहरण : राम, कृष्ण, मीराबाई, स्त्री आदि।

2. जिस शब्द से किसी विशेष प्राणी, वस्तु, स्थान या पदार्थ का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–राम, दीपावली, मेरठ आदि।

3. जिस शब्द से किसी वर्ग या जाति के पदार्थों, वस्तुओं या प्राणियों का बोध हो उसे जातिवचाक संज्ञा कहते हैं। जैसे - बालक, पुस्तक, बिजली, आम आदि।

4. जिस शब्द से किसी व्यक्ति स्थान या वस्तु के गुण, दशा, भाव या स्थिति का बोध हो, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे - सुख, दु:ख, अपमान, जवानी आदि।

5. जिस संज्ञा शब्द से किसी पदार्थ का बोध हो, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–सोना, चाँदी, लोहा, तांबा आदि।

6. जिस संज्ञा शब्द से वस्तु अथवा व्यक्ति के समूह का बोध हो उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–कक्षा, छल, गुच्छा, मंडल आदि।

(ज) 1. भाववाचक संज्ञाओं ..... धिक्कार

2. व्यक्तिवाचक और भाववाचक संज्ञाएँ एकवचन . ..... ये शब्द व्यक्तिवाचक हैं।

8. लिंग

(क) 1. (अ) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (स)

(ख) 1. दीमक–नर दीमक, विधवा-विधुर, अभिनेत्री–अभिनेता, क्षत्राणी–क्षत्रिय, आयुष्मति–आयुष्मान, बीवी–मियाँ, भेड़–नर भेड़,

चील–नर चील, मक्खी–नर मक्खी, कर्त्री–कर्ता, नेत्री–नेता, निवेदिका–निवेदन

(ग) रुद्र–रुद्राणी, इंद्र–इंद्राणी, खरगोश–मादा खरगोश, कौआ–मादा कौआ, कर्ता–कर्त्री, वृद्ध–वृद्धा, बिच्छू–मादा बिच्छू, मच्छर–मादा मच्छर, बुद्धिमान–बुद्धिमती, सुधारक–सुधारिका, भेड़िया–मादा भेड़िया, मर्द–औरत

(घ) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

(ङ) 1. पुल्लिंग 2. पुल्लिंग 3. पुल्लिंग, स्त्रीलिंग 4. पुल्लिंग

(च) 1. शब्द के जिस रूप से पुरुष अथवा स्त्री जाति के होने का बोध हो, उसे लिंग कहते हैं। पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्दों को पुल्लिंग कहा जाता है। जैसे–बालक, घोड़ा आदि। स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्दों को स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे–बालिका, गाय आदि।

2. पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्दों को पुल्लिंग कहते हैं; जैसे–बालक, घोड़ा।

3. स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्दों को स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे–बालिका, पैन्सिल, गाय आदि।

(छ) 1. नर्स, सती, धाय, सौत, सुहागिन, संतान, कोयल, चील, लोमड़ी, गिलहरी, दीमक, मैना, मक्खी, मछली, मकड़ी, छिपकली, भेड़, बुलबुल आदि सदा स्त्रीलिंग रहने वाले शब्द हैं।

2. (1) नदियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे–गंगा, यमुना, कावेरी, गोदावरी, नर्मदा आदि।

(2) तिथियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे–पंचमी, नवमी, एकादशी, अमावस्या आदि।

(3) नक्षत्रों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे–रोहिणी, चित्रा, कृतिका, भरणी आदि।

(4) शरीर के कुछ अंगों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे–आँख, जीभ, नाक, टाँग, अँगुली, छाती आदि।

(5) भोजन-मसालों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे–मिर्च, हल्दी, सब्जी, रोटी, पूरी, जलेबी आदि।

3. नित्य पुल्लिंग शब्द–तोता, कौआ, पक्षी, उल्लू, पशु, मच्छर, कीड़ा, भेड़िया, गैंडा, बाज, गरुड़, खरगोश, बिच्छू, चीता आदि शब्द पुल्लिंग माने जाते हैं। पुल्लिंग की पहचान - 1. जिन शब्दों के अंत में ..... मंडल, परिवार, समाज आदि।

(ज) 1. भारत में अनेक महान सम्राज्ञी हुई हैं।

2. धोबिन रानी के वस्त्र धोया करती थी।

3. कर्वायत्री मंच पर आई और रोचक कविताएँ सुनाई।

9. वचन

(क) 1. (अ) 2. (स) 3. (अ) 4. (अ) 5. (अ)

(ख) 1. गायकवृंद 2. गए थे 3. प्रजाजन 4. पाठकवर्ग 5. ऋतुएँ

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗

(घ) 1. वचन शब्द का मूल अर्थ है–कहना या बताना।

2. व्याकरण में संख्या वचन को संक्षेप में वचन कहा जाता है।

(ङ) 1. (1) श्री राम बड़े वीर थे। (2) महात्मा बुद्ध महान थे।

2. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रुप से उनके एक या अनेक का बोध होता है उसे वचन कहते हैं। (1) घोड़ा दौड़ रहा है–घोड़े दौड़ रहे हैं। (2) मैंने कविता सुनाई–हमने कविताएँ सुनाई।

3. पदार्थसूचक शब्दों ..... है; जैसे-(1) वह सारा पानी पी गया। (2) दूध बहुत मीठा था।

(च) 1. कुछ संज्ञा शब्दों का प्रयोग सदा बहुवचन में होता है; जैसे–आँसू, दर्शन, प्राण, बाल, लोग, हस्ताक्षर (1) दु:खद समाचार सुनते ही उसके आँसू निकल पड़े। (2) आप जैसे महापुरुष के दर्शन बड़े दुर्लभ हैं। (3) भय से तो जैसे उसके प्राण ही निकल गए थे। (4) उसके बाल उड़ गए हैं। (5) लोग तो प्राय: सुनी सुनाई बात पर विश्वास कर लेते हैं।

2. कुछ एकवचन संज्ञा शब्दों के साथ 'लोग, वर्ग ... . काम पर आ गए हैं।

(छ) लड़का–एकवचन, रात–एकवचन, पंखे–बहुवचन, गरीब लोग–बहुवचन, कथाएँ–बहुवचन, मक्खियाँ–बहुवचन, दिन–एकवचन, वस्तु–एकवचन, धेनुएँ–बहुवचन, ऋषि समाज–बहुवचन

(ज) पक्षी–पक्षीवृंद, सखियाँ–सखी, विधियाँ–विधि, बहू–बहुएँ, प्रजा–प्रजाजन, पाठक–पाठकवृंद, रीतियाँ–रीति, श्रोता–श्रोतागण, नायिका–नायक, शिलाएँ–शिला

(झ) 1. बहुवचन 2. एकवचन 3. एकवचन 4. एकवचन 5. बहुवचन

(ञ) 1. बच्चे पुस्तक से कहानियाँ पढ़ रहे थे।

2. गर्मी में रात छोटी होती है।

3. रजत ने बिल्ली और तोते पाल रखे हैं।

4. अपनी शिष्या का नाम बताओ।

5. लताएँ वृक्ष पर फैल गईं।

(ट) 1. तुम्हारे केश बहुत घने हैं।

2. सोना मूल्यवान धातु है।

3. रोगी के प्राण निकल गये।

4. आपके दर्शन दुर्लभ हो गये हैं।

10. कारक

(क) 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ) 5. (ब)

(ख) 1. (ब) 2. (द) 3. (अ) 4. (ब)

(ग) 1. संप्रदान 2. अपादान 3. कर्म 4. संबंध 5. संबोधन

(घ) 1. को 2. की 3. के 4. से 5. में, में 6. को 7. को 8. को

(ङ) 1. **राम** ने रावण को मारा। 2. **गोपाल** को दूध दो। 3. राम **कमरे** में सो रहा है।

(च) 1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप और कार्य से उसका संबंध वाक्य में क्रिया या अन्य संज्ञा या सर्वनाम शब्दों से जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं। 2. कर्ता का अर्थ है- काम को करने ..... कर्ता कारक कहते हैं (1) राम ने रावण को मारा। (2) राजा ने गरीबों को कंबल दिए। 3. क्रिया के कार्य का फल ..... कर्म कारक कहलाता है। (1) श्वेता ने अपूर्वा को देखा (2) उसने पुत्र को पत्र द्वासरा सूचित किया। 4. जिस शब्द से क्रिया के साधन का बोध होता है, उसे करण कारक कहते हैं। (1) गोपाल गेंद से खेलता है। (2) वह कार द्वारा दिल्ली पहुँचा। 5. जिसके लिए कार्य किया जाए, उसका बोध कराने वाला शब्द सम्प्रदान कारक कहलाता है। जैसे–(1) बच्चे के लिए दूध लाओ (2) मैं पूजा के लिए फूल लाया हूँ।

(छ) 1. कर्ता कारक विभक्ति रहित-वर्तमान काल और भविष्यत् काल की क्रिया होने पर परसर्ग 'ने' का प्रयोग नहीं होता; जैसे–बालक पत्र लिखता है, मैं चाय पिऊँगा। कर्ता कारक विभक्ति सहित-'ने' का प्रयोग भूतकाल में क्रिया के सकर्मक होने पर होता है; जैसे–बालक ने पत्र लिखा, मैंने चाय पी।

2. संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप जिससे पृथकता को बोध हो, उसे अपादान कारक कहते हैं; जैसे–रवि ने डाल से फूल तोड़ा। करण कारक तथा अपादान कारक दोनों का विभक्ति चिह्न से है, परंतु करण कारक में से किसी साधन से काम करने का सूचक होता है जबकि अपादान कारक में से अलग होने का सूचक होता है; जैसे–(1) पेड़ से पत्ते गिरते हैं। (अपादान कारक) (2) मैं पैन से पत्र लिखता हूँ। (करण कारक)

3. आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द रूप 'बालिका ..... हे बालिकाओ!

4. ईकारांत पुल्लिंग शब्द-रूप 'हाथी ..... हे गुरूओ!

5. संज्ञा अथवा सर्वनाम को क्रिया से जोड़ने वाले चिह्न कारक कहलाते हैं।

क्रम	**कारक**	**विभक्ति चिह्न**
(1)	कर्ता कारक	ने
(2)	कर्म कारक	को
(3)	करण कारक	से, के द्वारा
(4)	संप्रदान कारक	के लिए, को
(5)	अपादान कारक	से (अलग होना)
(6)	संबंध कारक	का, की, के, रा, री, रे

(7) अधिकरण कारक में, पर
(8) संबोधन कारक हे, अरे, ओ

(ज) 1. संबंध कारक 2. अधिकरण कारक 3. संबंध 4. अधिकरण कारक 5. अपादान कारक 6. करण कारक 7. कर्ता कारक 8. अपादान कारक 9. करण कारक

11. सर्वनाम

(क) 1. (ब) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (ब)

(ख) 1. तीन 2. उत्तम 3. मध्यम 4. अन्य 5. निश्चयवाचक

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

(घ) रचित की मम्मी डॉक्टर है तथा रचित के पिता अध्यापक हैं। वह अपने माता-पिता का बहुत आदर करता है। वह कभी किसी से सहायता नहीं लेता। उसने कभी झूठ नहीं बोला। उसकी सभी प्रशंसा करते हैं। उसके जैसा बालक सबको प्रिय होता है।

(ङ) 1. संज्ञा के स्थान पर आने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। 2. जो करता है सो भरता है। 3. नहीं, सर्वनामों में लिंग के कारण कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

(च) 1. जो सर्वनाम प्रश्न पूछने के लिए प्रयुक्त होते हैं, वे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे–तुमसे किसने कहा? कौन आया है?

2. जिन सर्वनामों का प्रयोग अपनेपन का बोध कराने के लिए किया जाता है, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–मैं अपना काम स्वयं कर लूँगा।

3. सर्वनाम विकारी शब्द हैं। वचन (एकवचन, बहुवचन) और संबंध (रा, री, रे, का, की, के) के कारण ही सर्वनाम शब्द का रूप बदलता है; जैसे–मैं, मेरा, हम, हमारा आदि।

4. जिन सर्वनाम शब्दों का संबंध दूसरे सर्वनाम शब्दों से होता है उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–जो जागेगा सो पावेगा।

(छ) 1. पुरुषवाचक सर्वनाम ..... वे सब आदि।
2. निश्चयवाचक सर्वनाम ..... कोई आ रहा है।

(ज) 1. वह-पुरुषवाचक सर्वनाम, कहाँ-प्रश्नवाचक सर्वनाम 2. अपना–निजवाचक सर्वनाम 3. स्वयं–निजवाचक सर्वनाम 4. क्या–प्रश्नवाचक सर्वनाम 5. कौन–प्रश्नवाचक सर्वनाम 6. कोई–अनिश्चयवाचक सर्वनाम, वह–पुरुषवाचक सर्वनाम 7. जो, सो–संबंधवाचक सर्वनाम

(झ) 1. मुझे आज जाना है। 2. वह वहाँ तुझे मिलेगा। 3. मैं वहाँ गया था। 4. किस आदमी का घर इस गली में है ?

(ञ) 1. उत्तम पुरुष, एकवचन, कर्ता
2. अन्य पुरुष, बहुवचन, संबंध
3. मध्यम पुरुष, बहुवचन, कर्म
4. अन्य पुरुष, एकवचन, कर्ता

(ट) 1. वह, अन्य पुरुष 2. तुमने, मध्यम पुरुष 3. तू, मध्यम पुरुष 4. आप, मध्यम पुरुष 5. तू, मध्यम पुरुष

(ठ) 1. जो 2. तुझे, बे 3. तुम, वे 4. आप, कुछ 5. मेरा, तेरा

12. विशेषण

(क) 1. (ब) 2. (ब) 3. (अ) 4. (स) 5. (ब)

(ख) 1. जापान, जापानी 2. निश्चित 3. विशेष्य 4. तीन 5. वैज्ञानिक

(ग) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗

(घ) 1. बहुत 2. ज्यादा 3. एकदम 4. बहुत 5. अत्यंत

(ङ) 1. पचास, दर्शक 2. मैले, वस्त्र 3. सुंदर, कमला 4. गंदे, दाँत 5. निर्धन, राम-लखन 6. पाँच, स्त्रियाँ 7. झूठ, लड़का 8. कुछ, लोग 9. दो मीटर, कपड़ा 10. प्रसन्न, आदमी

(च) 1. थोड़ी, परिमाणवाचक विशेषण 2. तीन दिन, संख्यावाचक विशेषण 3. अनेक, अनिश्चितवाचक विशेषण 4. गरम, गुणवाचक विशेषण 5. हट्टा-कट्टा, गुणवाचक विशेषण

(छ) कम–कमतर, कमतरीन; बुद्धिमान–अधिक बुद्धिमान, सबसे अधिक बुद्धिमान; विशाल–विशालतर, विशालतम; योग्य–योग्यतर, योग्यतम; बद–बदतर, बदतरीन

(ज) 1. थोड़े 2. शुद्ध 3. अच्छी 4. पहली 5. हरे भरे 6. काला

(झ) 1. वे कहाँ जा रहे हैं?, वे लोग कहाँ जा रहे हैं? 2. सर्वनाम - देखो, वे आ रहे हैं। 3. ये राधेलाल का मकान है।, यह मकान राधेलाल का है। 4. मैं कल घर आऊँगा। 5. यह मेरी पुस्तक है।, यह पुस्तक मेरी है।

(ञ) 1. जो शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताते हैं उन्हें विशेषण कहा जाता है। 2. विशेषण जिन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताते हैं उन्हें विशेष्य कहते हैं। 3. कुछ विशेषण शब्द विशेषणों की विशेषता बताते हैं उन्हें प्रविशेषण कहते हैं। 4. (1) गुणवाचक विशेषण (2) संख्यावाचक विशेषण (3) परिमाणवाचक विशेषण (4) सार्वनामिक विशेषण (5) व्यक्तिवाचक विशेषण

(ट) (अ) 1. गिलास में गरम दूध है। 2. माताजी ने सफेद साड़ी पहनी है। 3. मीठा आप सभी को अच्छा लगता है। (ब) 1. नेहा ने दो पुस्तकें खरीदीं। 2. मेरे घर में पाँच कमरे हैं। 3. चार गिलास पानी लाओ।

(स) 1. थोड़े बादाम गिलास में डाल दो। 2. उपवन में कुछ फूल खिले हैं। 3. सभी लड़के बाहर आ जाओ।

(ठ) 1. जो शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, रंग व आकार आदि का बोध कराता है, वह गुणवाचक विशेषण कहलाता है; जैसे–(1) गिलास में गरम दूध है। (2) मूर्ख लड़का कुछ नहीं समझता। (3) मीठा आम सभी को अच्छा लगता है। 2. दो व्यक्ति ..... सबसे अच्छा लड़का है।

13. क्रिया एवं वाच्य

(क) 1. (ब) 2. (ब) 3. (अ) 4. (स) 5. (स)

(ख) 1. दो 2. लिखवाया 3. खेलकर 4. मँगवाई 5. खिंचवाया

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

(घ) 1. जिन शब्दों से किसी कार्य के करने या होने का बोध हो, उन्हें क्रिया कहते हैं।

2. जिस मूल शब्द से क्रिया बनती है उसे धातु कहते हैं; जैसे–लिख, पढ़, जा, आ आदि।

3. जिन क्रियाओं में कर्म प्रयुक्त होता है वे सकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं।

4. जिस क्रिया में कर्म की आवश्यकता नहीं होती, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।

(ङ) 1. मूल धातु को छोड़कर अन्य शब्दों (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि) में प्रत्यय लगाकर बनने वाली क्रिया नामधातु क्रिया कहलाती है; जैसे–हाथ से हथियाना, बात से बतियाना।

2. जिस क्रिया शब्द (पद) से यह पता चले कि कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी अन्य को उसे करने की प्रेरणा देता है, अर्थात् कार्य को किसी अन्य से करवाता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं; जैसे–अध्यापक ने छात्र से पत्र लिखवाया। इस वाक्य में 'लिखवाया' प्रेरणार्थक क्रिया है।

3. जब पहली क्रिया के तुरंत बाद मुख्य क्रिया होती है तो पहली क्रिया को तात्कालिक क्रिया कहते हैं; जैसे–वह विद्यालय से आते ही सो गया।

4. वाक्य में जहाँ केवल एक क्रिया का प्रयोग हो, वह सामान्य क्रिया कहलाती है। जैसे–वह आया, विनोद गया।

5. जब कोई क्रिया मुख्य क्रिया से जुड़ती है, तो वह अपना अर्थ खोकर मुख्य क्रिया के अर्थ में नवीनता लाती है। ऐसी क्रियाओं को रंजक क्रिया कहते हैं; जैसे–रंजक क्रिया-सकना, वाक्य-क्या तुम मुझे अपनी पुस्तक दे सकोगे?

6. क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म है अथवा भाव उसे वाच्य कहते हैं। उदाहरण : लड़का पढ़ता है। शीला खेलती है।

(च) 1. कर्म के आधार पर क्रिया-भेद .... 'मंत्री', 'पुरस्कार' हैं।

2. जहाँ दो या दो से अधिक धातुओं से बनी क्रियाओं का साथ-साथ प्रयोग हो, वह संयुक्त क्रिया कहलाती है; जैसे–मैंने खाना खा लिया था। जब पहली क्रिया के तुरंत बाद मुख्य क्रिया होती है, तो

पहली क्रिया को तात्कालिक क्रिया कहते हैं; जैसे–वह विद्यालय से आते ही सो गया।

3. वाक्य में क्रिया के पुरूष, लिंग ..... मीरा से गाया जाता है।

4. कर्तृवाच्य ..... उनसे नहाया नहीं गया।

5. कर्मवाच्य का प्रयोग प्रमुख ..... बजे प्रस्तुत किया जाएगा।

(छ) 1. देखता, देख 2. लिख लिया, लिख 3. जाओगे, जा 4. बनाती, बना 5. जाता, जा 6. हँसता, हँस

(ज) 1. सकर्मक 2. अकर्मक 3. अकर्मक 4. सकर्मक 5. सकर्मक

(झ) 1. हुआ 2. हुई 3. पड़ी 4. पी 5. हुई 6. घटी

(ट) 1. प्रेरणार्थक 2. पूर्वकालिक 3. पूर्वकालिक क्रिया 4. प्रेरणार्थक

(ठ) कर्तरि–माली फूल तोड़ता है।

कर्मणि–श्वेता ने गीत गाया।

भाव–मुझसे चला नहीं जाता।

(ड) अपना–अपनाना, बात–बतियाना, बात–बतियाना, रंग–रंगवाना, लालच–ललचाना, चक्कर–चकराना, हाथ–हथियाना, शर्म–शर्माना

(ढ) 1. भिजवाया 2. बनवाए 3. लिखवाया 4. कटवा 5. कटवाए

(ण) 1. वह विद्यालय से आते ही सो गया।

2. वह खाने खाते ही गाड़ी में बैठ गई।

(त) 1. भाववाच्य 2. कर्तवाच्य 3. कर्मवाच्य 4. भाववाच्य 5. कर्मवाच्य

(थ) 1. हमारे द्वारा फल खाए जाएँगे। 2. बालक पत्र लिखता है। 3. चोर कल तक पुलिस द्वारा पकड़े जाएँगे। 4. भीड़ पर पुलिस ने गोलियाँ चलाई। 5. क्या उनसे बोला जाएगा? 6. दादी द्वारा कहानी सुनाई जाती थी।

14. काल

(क) 1. (अ) 2. (अ) 3. (स) 4. (अ) 5. (स)

(ख) 1. भूतकाल 2. वर्तमान 3. अपूर्णभूत 4. भविष्यत् 5. संभाव्य भविष्यत्

(ग) 1. बच्चा सो गया। 2. वह आता होगा। रुचिका पढ़ रही होगी। 3. शायद मेहमान कल आ जाएँ। हो सकता है कल वर्षा हो। 4. छात्र खेल रहे हैं। 5. शायद मेहमान कल आ जाएँ। हो सकता है कल वर्षा हो।

(घ) 1. क्रिया के रूप से कार्य के करने, होने या न होने के समय का बोध होता है। इस समय को ही व्याकरण में काल कहते हैं।

2. क्रिया के जिस रूप से उसका बीते समय में होना प्रकट हो उसे भूतकाल कहते हैं; जैसे–राम ने रावण को मारा।

3. जो समय चल रहा है उसे वर्तमान काल कहते हैं; जैसे–रवि प्रातः शीघ्र ही उठ जाता है।

4. क्रिया के जिस रुप से यह बोध हो कि कार्य आने वाले समय में होगा, वह भविष्यत् काल कहलाता है; जैसे–कल परीक्षा होगी।

(ङ) 1. भूतकाल के निम्नलिखित छह भेद होते हैं. ..... फसल अच्छी होती।

2. जो समय चल रहा है ..... क्रियाएँ कहलाती हैं।

3. क्रिया के जिस रूप से ..... भविष्यत् काल में है।

(च) 1. सामान्य भूतकाल 2. सामान्य भविष्यत् 3. संदिग्ध वर्तमान 4. हेतुहेतुमद् भूत 5. सामान्य भूत 6. अपूर्ण भूत 7. संदिग्ध भूत 8. संभाव्य भविष्यत काल 9. संदिग्ध वर्तमान 10. अपूर्ण भूत

15. अविकारी शब्द

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (ब) 4. (ब) 5. (ब) 6. (अ)

(ख) 1. हाथों हाथ 2. बहुत 3. थोड़ा 4. खूब 5. खटपट

(ग) 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (स) 5. (ब)

(घ) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(ङ) 1. जिन शब्दों पर लिंग, वचन, काल, कारक आदि के प्रभाव से कोई विकार उत्पन्न नहीं होता, वे

शब्द अव्यय कहलाते हैं।

2. आज, कल, तेज, धीरे-धीरे, ओह, किंतु, पर ताकि आदि शब्द अव्यय माने जाते हैं।

3. क्रियाविशेषण दूसरे क्रियाविशेषण की विशेषता बताते हैं।

(च) 1. क्रिया की विशेषता बताने वाले अव्यय शब्द क्रिया विशेषण कहलाते हैं; जैसे–(1) सुनीता धीरे-धीरे चल रही है। (2) वह दिनभर पढ़ता रहता है।

2. जो अव्यय संज्ञा या सर्वनाम के बाद आकर उनका संबंध वाक्य में प्रयुक्त अन्य शब्दों के साथ प्रकट करते हैं, संबंधबोधक अव्यय कहलाते हैं; (1) उसके साथ मत खेलो। (2) मेरे घर के आगे एक पेड़ है।

3. दो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को परस्पर मिलने वाले शब्द समुच्चयबोधक कहलाते हैं; जैसे–(1) राम और श्याम (2) वह मेहनत करता है इसलिए सफल हो गया।

4. जो शब्द घृणा, विस्मय, शोक, हर्ष, भय आदि भावों का बोध कराते हैं, उन्हें विस्मायादिबोधक अव्यय कहा जाता है; जैसे–(1) हाय! मैं लुट गया (2) अरे! आप आ गए।

(छ) 1. क्रियाविशेषण के निम्नलिखित ..... का बोध होता है।

2. कालवाचक क्रियाविशेषण ..... प्रतिवर्ष आदि।
स्थानवाचक क्रियाविशेषण ..... नीचे आदि।

3. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण ..... बारी-बारी आदि।
रीतिवाचक क्रियाविशेषण ..... ले, ही आदि।

4. जो अव्यय संज्ञा या सर्वनाम के बाद आकर उनका संबंध वाक्य में प्रयुक्त अन्य शब्दों के साथ प्रकट करते हैं उन्हें संबंधबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे–(1) आज धन के बिना कोई नहीं पूछता। (2) मेरे घर के आगे एक पेड़ है।
संबंधबोधक अव्यय के दो भेद हैं ..... पर्यंत आदि।

5. समानाधिकरण समुच्चयबोधक ..... पकड़ा गया।

6. व्यधिकरण समुच्चयबोधक ..... ताकि आदि।

(ज) 1. अब–कालवाचक क्रियाविशेषण 2. प्रतिदिन–कालवाचक क्रियाविशेषण 3. इधर-उधर–दिशावाचक क्रियाविशेषण 4. आज–कालवाचक क्रियाविशेषण 5. थोड़ा–परिमाणवाचक क्रियाविशेषण 6. कल–कालवाचक क्रियाविशेषण 7. एकाएक–रीतिवाचक क्रियाविशेषण 8. मधुर–रीतिवाचक क्रियाविशेषण 9. यथासमय, कालवाचक क्रियाविशेषण 10. आजकल–कालवाचक क्रियाविशेषण

(झ) 1. ऊपर–क्रियाविशेषण 2. के भीतर–संबंधबोधक 3. से पहले–संबंधबोधक 4. के बाद–संबंधबोधक 5. ऊपर-नीचे–क्रियाविशेषण 6. पहले–क्रियाविशेषण 7. साथ–संबंधबोधक 8. जोर से–क्रियाविशेषण 9. अब तक–क्रियाविशेषण 10. पहले, क्रियाविशेषण **(ञ)** 1. कि–व्यधिकरण 2. या–समानाधिकरण 3. और–समानाधिकरण 4. बल्कि–समानाधिकरण 5. किन्तु–समानाधिकरण 6. अपितु-व्यधिकरण 7. तो–व्यधिकरण 8. क्योंकि–व्यधिकरण

(ट) भय–बाप रे बाप! इतना भीषण भूकंप।
हर्ष–वाह! तुमसे ऐसी ही आशा थी।
घृणा–छि:! मुझे ऐसे कामों से घृणा है।
स्वीकृति–हाँ! बच्चे, जरा मेरी भी सुनना।
आशीर्वाद–ईश्वर आपके बच्चों को स्वस्थ और निरोगी रखे, दीर्घायु हो!

(ठ) होशियार, खबरदार–सावधानी बोधक; नमस्ते–अभिवादन बोधक; ठीक, जी हाँ–स्वीकृति बोधक; छि:छि:–घृणा व ग्लानिबोधक; बाप रे–भयबोधक; चुप, जा-जा–क्रोधबोधक; सुखी रहो–आशीर्वाद बोधक; वाह, धन्य–हर्षबोधक; अरे–विस्मयादिबोधक; हाय–शोकबोधक

(ड) 1. वाह 2. जीते रहो 3. हे राम 4. ऐ 5. छि: 6. सावधान 7. शाबाश 8. अहा

16. वाक्य-विचार

(क) 1. (अ) 2. (स) 3. (स) 4. (अ) 5.

(ब) 6. (स) 7. (अ) 8. (ब) 9. (स) 10. (स)

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ 6. ✓ 7. ✗

(ग) 1. सार्थक शब्दों का वह समूह जो व्यवस्थित हो और कोई अर्थ देता हो, वाक्य कहलाता है।

2. वाक्य के प्रमुख अंग हैं (1) उद्देश्य (2) विधेय

3. वाक्यों का वर्गीकरण करने के दो आधार हैं- (1) रचना के आधार पर वाक्य-भेद (2) अर्थ के आधार पर वाक्य भेद

4. (1) सरल वाक्य (2) संयुक्त वाक्य (3) मिश्र वाक्य

(घ) 1. जिन वाक्यों में एक मुख्य क्रिया और एक ही उद्देश्य हो, उन्हें सरल वाक्य कहते हैं; जैसे–मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।

2. संयुक्त वाक्य में दो या दो से अधिक समान स्तर के साधारण वाक्य होते हैं जो समानाधिकरण समुच्चयबोधक से जुड़े होते हैं; जैसे–अशोक कल गया और आज चला गया।

3. जब दो ऐसे वाक्य मिलें जिनमें एक मुख्य उपवाक्य तथा एक गौण अथवा आश्रित उपवाक्य हो, तब मिश्र वाक्य बनता है; जैसे–मेरा दृढ़ विश्वास है कि भारत जीतेगा।

4. वाक्य में कर्ता या उसके विस्तार अथवा जिस व्यक्ति या वस्तु के बारे में कहा जाए उसे उद्देश्य कहते हैं; जैसे–सविता गीत गा रही है। यहाँ सविता के विषय में कहा गया है। अत: सविता वाक्य का उद्देश्य है।

5. वाक्य में कर्ता या उद्देश्य के बारे में जो कुछ भी कहा जाए उसे विधेय कहते हैं; जैसे सविता गीत गा रही है। यहाँ गीत गा रही है में उद्देश्य के विषय में बताया गया है। अत: यही वाक्य का विधेय है।

(ङ) 1. सार्थकता ..... माना जा सकता।

2. आसक्ति या निकटता ..... अशुद्ध हो जाता है।

3. विधानवाचक वाक्य ..... फसल न सूखती।

(च) 1. वह–पुस्तकें खरीदने बाजार गया 2. पनवाड़ी–पान लगा रहा है 3. नौकर–कमरा साफ कर दिया 4. मैं - चाहता हूँ, तुम - परिश्रम करो 5. उसने–सफेद शेर देखा

(छ) 1. विधानवाचक वाक्य 2. प्रश्नवाचक वाक्य 3. आज्ञावाचक वाक्य 4. नकारात्मक वाक्य 5. संदेहवाचक वाक्य 6. इच्छासूचक वाक्य 7. विस्मयादिबोधक वाक्य 8. संकेतवाचक वाक्य

(ज) 1. सरल वाक्य 2. सरल वाक्य 3. मिश्र वाक्य 4. संयुक्त वाक्य 5. मिश्र वाक्य

(झ) 1. मैंने उसे गीत नहीं सुनाया। 2. यदि कल मौसम ठीक रहा तो मैं दिल्ली जाऊँगा। 3. कक्षा से बाहर जाओ। 4. ईश्वर तुम्हें दीर्घायु प्रदान करे। 5. क्या उसने परीक्षा दी?

17. विराम-चिह्नों का प्रयोग

(क) 1. (ब) 2. (स) 3. (स) 4. (स) 5. (ब) 6. (स)

(ख) 1. कृ० पृ० उ० कृपया पृष्ठ उलटिए। 2. क्या तुम मेरे साथ चलोगे ? 3. भवन निर्माण की सामग्री (ईंट, सीमेंट, लोहा, रोड़ी आदि) बहुत महँगी हो गई है। 4. सुबह जल्दी उठो, कसरत करो, अच्छी खुराक लो, स्वास्थ्य कैसे न सुधरेगा। 5. अहा! हम जीत गए। 6. सुख-दुख तो जीवन में लगे ही रहते हैं। 7. श्रीमान अवध किशोर

" नरेन्द्र कुमार 8. क्रिया दो प्रकार की होती है: (1) सकर्मक क्रिया (2) अकर्मक क्रिया 9. उपर्युक्त भेदों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है : 10. छात्रों, आज का पाठ कुछ कठिन है। 11. काल के तीन भेद हैं– 12. तुलसीदास ने रामचरितमानस में लिखा है–''रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्राण जाहिं पर वचन न जाई''।

(ग) 1. यह किसी कथन के पूर्ण होने पर, अप्रत्यक्ष प्रश्नों के अंत में तथा कविता में छंद के चरण के अंत में आता है; जैसे–सदा सत्य बोलो।

2. जिस वाक्य में कोई प्रश्न पूछा गया हो उसके अंत में यह चिह्न लगाया जाता है; जैसे–क्या तुम मेरे साथ चलोगे?

3. वाक्य में जहाँ पूर्णविराम से कम रुकने की आवश्यकता हो वहाँ अर्धविराम का प्रयोग होता है; जैसे–रमेश, सुरेश, दिनेश और गोपी आए थे; ये सब अब वहाँ जाएँगे।

4. जब कुछ लिखने से छूट जाता है, तब इस चिह्न का प्रयोग होता है; जैसे–सुख-दुख तो जीवन में लगे ही रहते हैं।

5. यह एक छोटी-सी रेखा है जिसका उपयोग दो शब्दों को जोड़ने में होता है; जैसे–रोने चिल्लाने से क्या होता है। मनुष्य को हँसते-हँसते जीना चाहिए।

(घ) 1. विराम का अर्थ है रुकना। लिखते समय विराम-चिह्नों का प्रयोग आवश्यक है। इनका प्रयोग न होने से वाक्य का अर्थ बदल जाता है।

अल्प विराम ..... वहाँ नहीं जाऊँगा।

2. उपविराम ..... लोकमान्य तिलक।

(ङ) 1. (स) 2. (ब) 3. (ब) 4. (ब)

(च) 1. नेहरु जी ने कहा था, ''आराम हराम है।'' 2. वह खीझ कर बोला, क्यों हट जाऊँ? 3. छी:! चोरी करते हो क्या तुम्हें संस्कारों में यही सब मिला है। 4. अरे! मोहन गया, जब मैं मिला था तब वह कुछ नहीं बोला। 5. कर्म के आधार पर क्रिया दो प्रकार की होती है–(क) अकर्मक (ख) सकर्मक 6. बस हो गया; रहने दीजिए। 7. मनुष्य को उत्सव प्रिय है, क्योंकि वह आनंदप्रद है। 8. सुखदेव, राजगुरु, भगतसिंह तथा चंद्रशेखर आजाद ने देश की रक्षा के लिए अपने प्राण दे दिए। 9. मैंने डॉ० मंजुला का निबंध पढ़ा, ''दहेज एक अभिशाप''। 10. हाय! मेरे भाग्य में यही बढ़ा था मैं नमन, प्रवीण तथा रोशन में से किसी को भी अपना न बना सका। 11. अध्यापक–भारत के प्रथम प्रधानमंत्री कौन थे ? छात्र–जवाहर लाल नेहरु 12. दिल्ली में जंतर-मंतर, बंगला साहिब गुरुद्वारा, बिड़ला मंदिर आदि भी दर्शनीय हैं। 13. मनुष्य का मन सदैव गतिशील रहता है, ऐसा होता है कि विरोधी शक्तियाँ उसे अपनी ओर खींचती हैं। 14. नहीं, मैं ऐसा कदापि नहीं कर सकता।

18. शब्द-भंडार

(क) 1. (ब) 2. (ब) 3. (स) 4. (अ) 5. (अ) 6. (द) 7. (स)

(ख) 1. कनिष्ठ-ज्येष्ठ, जय-विजय, घृणा-प्रेम 2. आय-व्यय, इष्ट-अनिष्ट 3. चर-अचर, अर्थ-अनर्थ 4. आचार-अनाचार, आलसी-परिश्रमी 5. पंडित-मूर्ख, सम-विषम

(ग) 1. पैर 2. धनी 3. श्रेष्ठ 4. चिह्न 5. झरना 6. नक्षत्र 7. आकाश

(घ) 1. सोना, धतूरा, गेहूँ 2. नासिका, स्वर्ग 3. पंख, तरफ, दो सप्ताह 4. टैक्स, हाथ, करना 5. दिन, आक्रमण, अवसर 6. संसार, उत्पत्ति, शंकर 7. ईश्वर, आकाश, विष्णु 8. मकान, कुल, कार्यालय 9. वायु, प्राण, जल 10. सार, आनंद, स्वाद

(ङ) 1. कूल, कुल 2. अनिल, अनल 3. परिमाण, परिणाम 4. चिंता, चिता 5. जलद, जलज

(च) 1. (अ) 2. (ब) 3. (द) 4. (ब) 5. (अ)

(छ) 1. निष्पाप 2. परोक्ष 3. उदारमना 4. कवयित्री 5. साप्ताहिक 6. अस्पृश्य 7.असीम 8. निर्दोष 9. धर्मात्मा 10. प्रतिभावान 11. निराकार 12. भ्रष्ट 13. सुपाठ्य 14. सर्वज्ञ 15. आजीवन 16. निर्लज्ज

(ज) 1. जिसने बहुत कुछ सुना हो। 2. जिस स्थान पर अभिनेता अपना वेश विन्यास करते हैं। 3. नष्ट हो जाने वाला। 4. वर्षा की अति होना। 5. जिसका मन उदार है।

(झ) 1. अपराध 2. साहस 3. आवश्यक 4. असफल

(ञ) 1. स्वतंत्र–हमारा देश भारत 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हुआ।

स्वच्छंद–लंगूर स्वच्छंद प्रकृति का जानवर होता है।

2. उपयोग–गाय का दूध और घी उपयोग करने के पदार्थ हैं।

उपभोग–हमें पौष्टिक और संतुलित भोजन उपभोग करना चाहिए।

3. अपराध–कानून तोड़ना अपराध है।

पाप–झूठ बोलना पाप है।

4. अधिक–अधिकतर माता-पिता बच्चों को नियंत्रण में रखने के बजाय अधिक छूट देते हैं।
पर्याप्त–हमें पर्याप्त भोजन करना चाहिए।
5. शत्रु–शत्रु को सदैव प्यार से जीता जा सकता है।
विरोधी–मनुष्य का मन सदैव गतिशील रहता है ऐसा होता है क्योंकि विरोधी शक्तियाँ उसे अपनी ओर खींचती हैं।
6. निवेदन–आपसे विनम्र निवेदन है कि यहाँ एक बड़े कूड़ेदान का निर्माण करवाएँ।
आवेदन–नौकरी के लिए मैंने आवेदन किया है।

20. मुहावरे और लोकोक्तियाँ

(क) 1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (स) 5. (स)
(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗
(ग) 1. खून खौल 2. कान कतरता 3. खिल्ली उड़ाना 4. खाक में मिल 5. गिरगिट की तरह रंग 6. घोड़े बेचकर 7. काला अक्षर भैंस 8. आँखें खुली
(घ) 1. गागर में सागर भरना 2. गिरगिट की तरह रंग बदलना 3. खून खौलना 4. खून पसीना एक करना 5. घोड़े बेचकर सोना
(ङ) 1. एक पंथ दो काज 2. जल में रहकर मगर से बैर 3. चोर की दाढ़ी में तिनका 4. जिसकी लाठी, उसकी भैंस 5. चोर-चोर मौसेरे भाई
(च) 1. ईश्वर न करे हमें किसी के सामने हाथ फैलाना पड़े। 2. माता-पिता को अपनी संतानों को एक आँख से देखना चाहिए। 3. सैनिक रणभूमि हेतु प्रस्थान के लिए कमर कस चुके हैं। 4. अपंग को देखकर खिल्ली उड़ाना भले लोगों का काम नहीं। 5. यदि एक आदमी ईमानदार है, तो वह बेईमानी खत्म नहीं कर सकता। अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। 6. उसके बेटे ने चोरी की ओर पुलिस के हाथ नहीं आया। पुलिस बाप को पकड़कर ले गई। इसे कहते हैं–गेहूँ के साथ घुन भी पिसता है।
(छ) 1. शक्तिशाली की ही जीत होती है। 2. बुरी संगति का प्रभाव अवश्य पड़ता है। 3. धोखा एक बार ही खाया जा सकता है। 4. एक बुराई के साथ दूसरी बुराई भी आ जाना। 5. जरूरत से बहुत कम।
(ज) 1. आश्रय देने वाले से बैर करना–तुम सेठ जी की नौकरी करते हो और उन्हीं के विरुद्ध बोलते हो। याद रखो जल में रहकर मगर से बैर करना ठीक नहीं।
2. बहुत कंजूस होना–पहाड़ी लाल बीमार है पर किसी चिकित्सक के पास जाकर इलाज नहीं करवाता। उस पर तो यही कहावत चरितार्थ होती है चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए।
3. प्रयत्न बहुत अधिक लाभ बहुत कम–व्यापार शुरु किया, पर केवल पाँच सौ रुपये मासिक का मुनाफा हुआ। इसे कहते हैं खोदा पहाड़ निकली चुहिया।
4. अपराधी के साथ निरपराध भी दंडित होता है–उसके बेटे ने चोरी की और पुलिस के हाथ नहीं आया। पुलिस बाप को पकड़कर ले गई। इसे कहते हैं–गेहूँ के साथ घुन भी पिसता है।
(झ) 1. ऐसा वाक्यांश जो सामान्य से भिन्न किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीति कराए और शाब्दिक अर्थ से भिन्न किसी अन्य में रुढ़ हो जाए उसे मुहावरा कहते हैं। मुहावरों का प्रयोग वाक्य के प्रसंग में होता है, अलग से नहीं। यदि कहा जाए कि नौ और दो ग्यारह होते हैं, तो यह सामान्य कथन ही होगा, मुहावरा नहीं। परंतु प्रसंगवश कहा जाए कि 'चोर साइकिल लेकर नौ दो ग्यारह हो गया।' तो यहाँ यह मुहावरा होगा।
2. लोकोक्ति का अर्थ है लोक में प्रचलित उक्ति। लोकोक्तियाँ सामान्यत: पूर्ण वाक्यों के रूप में होती हैं जिन में समाज का चिर-संचित अनुभव रहता है। ये ऐसी तीखी उक्तियाँ होती हैं जो श्रोता के हृदय पर सीधा एवं गहरा प्रभाव डालती हैं। लोकोक्तियाँ भूतकाल के लोक-अनुभवों का परिणाम होती हैं तथा वाक्य के रूप में प्रयुक्त होती है। इन्हें साधारण बोलचाल की भाषा में 'कहावत' भी कहा जाता है।
मुहावरे तथा लोकोक्तियों ..... होते हैं।

21. मौखिक रचना

(क) 1. (अ) 2. (ब) 3. (ब) 4. (ब)
(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. मौखिक रचना के अनेक रूप हैं, उनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं–(1) कविता सुपाठ व अंत्याक्षरी (2) समाचार वाचन (3) कथा-कहानी (4) घटना-वर्णन (5) वार्तालाप एवं परिचर्चा (6) चुटकुले (7) भाषण, एवं (8) संवाद और अभिनय।

2. भाषा का सर्वाधिक व्यापक रूप मौखिक अभिव्यक्ति के रूप में पाया जाता है। समाज में सभी व्यक्ति पढ़े-लिखे नहीं पाए जाते, अत: उनके लिए तो भाषा का मौखिक रूप अपरिहार्य है ही, दैनिक जीवन में भी मौखिक रूप ही सर्वाधिक सुलभ होता है। हमारे अधिकांश कार्य भाषा के मौखिक रूप के आधार पर ही संपन्न किए जाते हैं।

3. इसके लिए आवश्यक है शुद्ध उच्चारण, भाषा की शुद्धता तथा सरल व प्रभावी भाषा।

(घ) 1. अंत्याक्षरी से छात्रों की मौखिक-रचना की प्रतिभा का विकास होता है। इससे उन्हें कविताएँ, छंद, दोहे आदि कंठस्थ करने की प्रेरणा मिलती है। अंत्याक्षरी के लिए उच्चकोटि की भावपूर्ण कविताएँ कंठस्थ करनी चाहिए।

2. भाषा की मौखिक अभिव्यक्ति में उच्चारण की शुद्धता आवश्यक है। इसके अभाव में वर्ण, शब्द अथवा वाक्य का सही रूप अभिव्यक्त न होने पर विचार पूर्ण व सही रूप में अभिव्यक्त नहीं हो सकते, क्योंकि अभिव्यक्ति का यही मुख्य साधन है। अत: उच्चारण की शुद्धता अपरिहार्य है।

3. संवाद का अर्थ है–बातचीत या वार्तालाप। इससे मौखिक अभिव्यक्ति की कुशलता बढ़ती है। इसी प्रकार अभिनय के माध्यम से आत्मविश्वास, अंग-संचालन, संकेत तथा उचित भाव-भंगिमाओं से अपनी मनोदशाओं का चित्रण करने की कुशलता का विकास होता है। संवाद और अभिनय दोनों ही सामाजिक मनोविनोद तथा मौखिक अभिव्यक्ति की कुशलता के माध्यम हैं।

(ङ) 1. कविता सुपाठ ..... सार्थक हो पाता है। समाचार-पाठ .....जा सकते हैं।

2. वार्तालाप एवं परिचर्चा ..... प्रक्रिया अपनाई जाती है। भाषण ..... भाषण रुचिकर नहीं होता।

व्याकरण मेदिनी-8

1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (ब) 5. (अ) 6. (ब)

(ख) 1. बोली 2. सिंधु 3. संस्कृत 4. ध्वनि 5. ब्राह्मी

(ग) 1. अंग्रजी-रोमन, संस्कृत-देवनागरी, उर्दू-फारसी, हिन्दी- देवनागरी, पंजाबी-गुरुमुखी।

(घ) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(ङ) 1. ध्वनि भाषा का आधार होती है। 2. भाषा शब्द संस्कृत की भाष् धातु से बना है; जिसका अर्थ है बोलना। इस भाष् से ही भाषा शब्द अस्तित्व में आया। 3. भारत के दक्षिणी भाग में बोली जाने वाली हिन्दी भाषा 'दक्षिणी हिन्दी' कहलाती है। 4. मैथिली, भोजपुरी और मगही इस वर्ग की उपभाषाएँ हैं।

(च) 1. भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर, सुनकर, लिखकर व पढ़कर अपने मन के भावों या विचारों का आदान-प्रदान करता है।

2. भाषा के दो रूप हैं-1. मौखिक 2. लिखित।

लिखित भाषा: मन के भावों तथा विचारों को जब लिखकर प्रकट किया जाता है तो भाषा का लिखित रूप कहलाता है। लिखित भाषा में कुछ ध्वनि-चिह्न प्रयोग में लाए जाते हैं। 3. भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं। हरियाणवी, राजस्थानी, भोजपुरी, मैथिली, कन्नौजी, छत्तीसगढ़ी आदि बोलियाँ हैं।

4. मौखिक ध्वनियों को लिखित रूप में प्रकट करने के लिए जिस रीति का प्रयोग किया जाता है वह लिपि है। संसार की विभिन्न भाषाओं को लिखने के लिए अनेक लिपियाँ प्रचलित हैं। हिन्दी और संस्कृत ..... गुरुमुखी लिपि कहलाती है।

5. किसी भाषा को शुद्ध रूपेण प्रयोग करने की विधि बताने वाली नियमावली को उसका व्याकरण

कहते हैं। व्याकरण हमें भाषा के संबंध में जो ज्ञान कराता है, उसके ..... विचार किया जाता है। 6. ध्वनि- ध्वनि भाषा का मूल है। किसी भाषा में प्रयुक्त होने पर ध्वनि, वर्णों तथा शब्दों का ज्ञान करवाकर भाषा का रूप ..... 'भगवान के अवतार के अनेक कारण हुआ करते हैं।'

(छ) 1. अपने मन के भावों और विचारों को बोलकर या लिखकर प्रकट करने के साधन को भाषा कहते हैं। वर्तमान युग में सभ्य समाज ध्वनि ... . 'भाषा' बन गया। 2. भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं। भाषा तथा बोली में प्रमुख रूप से निम्नलिखित अंतर पाए जाते हैं– 1. बोलियाँ किसी एक ही भाषा ..... की रचना भाषा में होती है। 3. भाषा निम्न रूपों में पाई जाती है– मातृभाषा- बालक अपने परिवार अथवा माता से जो भाषा सीखता है ..... हिन्दी देश में संपर्क भाषा का कार्य करती है। 4. हिन्दी भाषा की कुछ प्रमुख विशेषताएँ ..... करोड़ शब्दों से भी अधिक है। 5. बोली का विकास होने पर उसका क्षेत्र बढ़ जाता है। ऐसे में पढ़ा-लिखा वर्ग भी उसे प्रयोग में लाने लगता है और उसमें ..... उपभाषा बन गई हैं। हिन्दी की उपभाषाएँ- .... उपभाषाएँ इस वर्ग में आती हैं। 6. भाषा विशेष का प्रयोग विस्तृत भू-भाग पर होने के कारण उसमें उसकी बोलियों और उपभाषाओं के प्रयोग होने लगते हैं तथा भौगोलिक भिन्नता ..... मानक रूप कहलाता है।

(ज) 1. हिन्दी 2. असमिया 3. बंगाली 4. गुजराती 5. बोड़ो 6. डोगरी 7. कन्नड़ 8. कश्मीरी 9. कोंकणी 10. पंजाबी 11. उर्दू 12. मैथिली 13. मलयालम 14. मणिपुरी 15. मराठी 16. नेपाली 17. उड़िया 18. संस्कृत 19. तमिल 20. तेलुगू 21. संथाली 22. सिंधी

2. वर्ण-विचार

(क) 1. (ब) 2. (अ) 3. (स) 4. (स) 5. (स) 6. (स) 7. (ब) 8. (ब) 9. (स) 10. (ब)

(ख) 1. (ब) 2. (अ) 3. (अ) 4. (अ) 5. (ब)

(ग) 1. श्र 2. सबसे छोटी 3. अंत: स्थ 4. स्पर्श 5. समान व्यंजनों

(घ) अशुद्ध – अ + श् + उ + द् + ध् + अ

अमावस्या – अ + म् + आ + व् + अ + स् + य् + आ

स्त्री – स् + त् + र + ई

औरत – औ + र् + अ + त् + अ

अत्यन्त – अ + त् + य् + अ + न् + त् + अ

संध्या – स् + अ + न् + ध् + य् + आ

(ङ) श्रावण, श्री। विद्या-गद्य। ट्रक-राष्ट्र। स्रोत-सहस्र।

(च) अनुस्वार, अनुस्वार, अनुनासिक, अनुनासिक, अनुस्वार, अनुस्वार, अनुस्वार, अनुनासिक, अनुनासिक, अनुनासिक

(छ) त-अघोष, य-अल्पप्राण, द-अल्पप्राण, म-अल्पप्राण, ह – महाप्राण, ज-अल्पप्राण।

(ज) प-ओष्ठ, श-तालु, क-कंठ, व-दंत, ठ-मूर्धा, च-तालु, स-दंत, ख-कंठ, ई-तालु, ज-तालु, ब – ओष्ठ, घ- कंठ।

(झ) 1. मौखिक भाषा में जिसे ध्वनि कहते हैं, लिखित भाषा में वही ध्वनि वर्ण कहलाती है। 2. (1) स्वर (2) व्यंजन। 3. अ, इ, उ, ऋ 4. आ (अ + अ), ई (इ+इ), ऊ (उ + उ), ए (अ+इ) ऐ, (अ+ए), ओ (अ+उ), औ (अ+ओ)

5. क़ ख़ ग़ ज़ फ़ आदि।

(ञ) 1. जिन स्वरों के उच्चारण में बहुत कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। इसकी संख्या चार है- अ, इ, उ, ऋ।

2. जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व से दुगना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। इनकी संख्या सात है- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

3. प्लुत स्वर- जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ स्वर से भी अधिक समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। प्लुत रूप का निर्देश करने के लिए स्वर के आगे '३' का अंक लिखने की परंपरा रही है; जैसे-

ओ३म्। परंतु हिन्दी में इस प्रकार का प्रचलन नहीं है।

4. दो या दो से अधिक व्यंजनों के संयोग से बचने वाले व्यंजन संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं जैसे- क्ष= क+क्ष+अ (क्षत्रिय), त्र = त्+र्+अ (त्राण)

5. जो व्यंजन दो समान व्यंजनों के संयोग से बनते हैं, वे द्वित्व व्यंजन कहलाते हैं। जैसे- क्क = क्+क = मक्का, चक्कर।

6. वर्णों के परस्पर मेल को वर्ण संयोग कहते हैं। उदाहरण के लिए जल शब्द ज् + अ + ल् + अ आदि वर्णों के संयोग से बना है।

7. जिन व्यंजनों में पाई (ा) होती है, उनकी पाई हटा दी जाती है और अगले व्यंजन को उससे मिलाकर लिखते हैं; जैसे- ख ख ख्याति ख्याल।

(ट) 1. हिन्दी वर्णमाला में स्वरों और व्यंजनों के अतिरिक्त दो अन्य वर्ण भी हैं- अं तथा अः। इन दोनों का प्रयोग स्वरों के बाद ..... इसलिए इन्हें अयोगवाह कहा जाता है। अनुस्वार ..... प्रातः, नमः आदि।

2. जिन वर्णों का उच्चारण करते समय मुख से निकलने वाली वायु रुकावट के साथ बाहर निकलती है और उनके स्पष्ट उच्चारण में स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं। .... इनकी संख्या चार है- श्, ष्, स्, ह्।

3. भाषाई ध्वनियों का उच्चारण मुख से होता है; किंतु ध्वनियों के उच्चारण-स्थान मुख के भीतर भी अलग-अलग हैं। मुख के जिस भाग से जो वर्ण बोला जाता है, वही उस वर्ण का उच्चारण-स्थान कहलाता है। ..... उन्हें दंतोष्ठ्य वर्ण कहते हैं। ये हैं- व और फ।

4. प्रयत्न का अर्थ है- कोशिश या चेष्टा। ध्वनियों (वर्णों) के उच्चारण में होने वाली चेष्टा को प्रयत्न कहा जाता है। प्रयत्न दो प्रकार का होता है- (क) आभ्यंतर प्रयत्न (ख) बाह्य प्रयत्न ..... इस प्रयतन के अंतर्गत 'य, र, ल, व' वर्ण आते हैं।

5. बाह्य प्रयत्न- वर्णों का बोलते हुए अंत में किए गए प्रयत्न को बाह्य प्रयत्न कहते हैं। इसके दो भेद हैं- ..... तथा श, ष, स वर्ण अघोष हैं। इनकी संख्या तेरह है।

6. अल्पप्राण- जिन वर्णों के उच्चारण में श्वासवायु कम मात्रा में बाहर निकलती है ..... और श, ष, स, ह् महाप्राण हैं।

7. बोलते समय किसी अक्षर या शब्द पर जो बल दिया जाता है, उसे बलाघात कहते हैं। ..... मोहन ने सुरेश को पुस्तक दी। (केवल पुस्तक ही दी, कुछ और नहीं।)

(ठ) 1. (ब) 2. (अ) 3. (ब) 4. (ब) 5. (अ) 6. (ब) 7. (ब) 8. (स) 9. (अ) 10. (ब)

3. शब्द-विचार

(क) 1. (ब) 2. (अ) 3. (ब) 4. (अ) 5. (स) 6. (अ) 7. (स)

(ख) 1. ऊँचा 2. शब्द 3. पद 4. यौगिक 5. क्रियाविशेषण।

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

(घ) गर्दभ-गधा, दधि-दही, मेघ-बादल, नृत्य-नाच, कर्ण-कान, धेनु-गाय, क्षीर-खीर, घंटिका-घंटी, दंश-दाँत, बिंदु-बूँद, सप्त- सात, हस्त-हाथ, अश्रु-आँसू, हस्ती-हाथी, क्षेत्र-खेत, तेल-तैल

(ङ) सूरज-सूर्य, फूल-पुष्प, दुबला-दुर्बल, रात-रात्रि, मोर-मयूर, कुम्हार-कुंभकार, दिन-दिवस, बादल-मेघ, सूत-सूत्र, जीभ-जिह्वा, आग-अग्नि

(च) सत्य-रुढ़, नीरज-योगरुढ़, भोजनालय-यौगिक, जन्मभूमि-यौगिक, रसोईघर-यौगिक, सूर्य-रुढ़, पीतांबर-योगरूढ़, पंकज-योगरूढ़, मृगनयनी-यौगिक, कमल-रुढ़, जलज-योगरूढ़, नीलकंठ- यौगिक।

(छ) 1. एक अथवा अनेक वर्णों के संयोग से बने सार्थक एवं स्वतंत्र ध्वनि-समूह को शब्द कहते हैं।

2. वाक्य में प्रयुक्त हो जाने पर शब्द की स्वतंत्रता समाप्त हो जाती है। और वह व्याकरण के नियमों (लिंग, वचन, कारक आदि) से बँध जाता है। इससे उसका रूप भी बदल जाता है। इस स्थिति में वह शब्द न रहकर पद बन जाता है।

3. 1. तत्सम 2. तद्भव 3. देशज 4. विदेशी 5. संकर

4. 1. रुढ़ शब्द 2. यौगिक 3. योगरुढ़

5. 1. एकार्थी 2. अनेकार्थी 3. पर्यायवाची 4. विलोम शब्द

(ज) 1. संस्कृत के ऐसे शब्द जो इसी रूप में हिंदी में प्रयुक्त होते हैं, तत्सम कहलाते हैं। जैसे- कूप, पक्षी, पत्र, अंग, कलश आदि।

2. हिंदी में अनेक ऐसे शब्द प्रयोग में लाए जाते हैं जिनका जन्म संस्कृत शब्दों से हुआ। हिंदी में इनका रूप बदला गया है। इन्हें तद्भव कहते हैं।

3. ये हिंदी के अपने शब्द हैं। ऐसे शब्द जो आवश्यकतानुसार हिंदी में जन्म लेते चले गए हैं देशज शब्द कहलाते हैं जैसे- खिड़की, पेड़, आटा, लोटा आदि।

4. दो भाषाओं के मेल से ..... घर (हिन्दी) आदि।

5. दो भाषाओं के मेल से बने शब्द संकर शब्द कहलाते हैं; जैसे रेलगाड़ी- रेल (अंग्रेजी) + गाड़ी (हिंदी)

(झ) 1. रूढ़ शब्द- जिन शब्दों के खंड किए जाने पर उनका ..... होने से ये योगरूढ़ कहलाते हैं।

2. एकार्थी शब्द- जिन शब्दों का प्रयोग केवल एक ही अर्थ में किया जाता है, वे ..... नर-नारी, मित्र-शत्रु आदि।

(ञ) एकार्थी- कुत्ता, हाथी, घोड़ा
पर्यायवाची- सदन, भवन, घर
अनेकार्थी- सोना, कुल, पत्र
रूढ़-पैर, घोड़ा, घर
योगरूढ़- नीरज, चारपाई, जलद
यौगिक- डाकघर, विद्यालय, सब्जीमंडी
विकारी- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण
अविकारी-क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, विस्मयादिबोधक
विदेशी- लालटेन, स्टेशन, साइकिल।

4. उपसर्ग व प्रत्यय

(क) 1. (ब) 2. (स) 3. (द) 4. (ब) 5. (ब) 6. (अ) 7. (ब) 8. (द)

(ख) 1. (स) 2. (स) 3. (अ) 4. (स) 5. (अ) 6. (स) 7. (द)

(ग) परि- परिणाम, परिचय। अप- अपमान, अपयश। बिन- बिनमाँगा, बिनखाया। अ- अभाव, अज्ञान। प्रति- प्रमिकूल, प्रतिध्वनि। अव- अवकाश, अवतार। बद- बदनाम, बदचलन। अन- अनमोल, अनपढ़।

(घ) त- बचत, रूपत। ती- गिनती, चलती। ई- घुड़की, धमकी। आवट- बनावट, सजावट। दार- दुकानदार, देनदार। ता- बहता, मरता। बाज- चालबाज, धोखेबाज। दान- पानदान, रोशनदान। कार- कलाकार, साहित्यकार। वाला- टोपीवाला, घरवाला। साज- जालसाज, घड़ीसाज।

(ङ) वियोग-वि, प्रतिक्षण-प्रति, बनाम-ब, परदादा-पर, दुर्लभ-दुर्, हर वक्त- हर, विकार-वि, हर तरफ-हर, निर्धन-निर्, उत्तम-उत्, प्रयत्न-प्र, निवास-नि, उपवनव-उप, दुराचार-दुर्।

(च) बोली-ई, चटनी-नी, बैठा-आ, गवैया-ऐया, सोया-या, खपत-त, पढाई-आई, सूँघनी-नी घेरा-एरा, पालनहार-हार, हँसी-ई, निंदनीय-ईय, खाऊ-ऊ, खाया-या, कमेरा-एरा।

(छ) चार ऐसे शब्द लिखिए जिनमें दो-दो प्रत्यय और उपसर्ग, दोनों का प्रयोग हुआ हो-
स + फल + ता = सफलता। सु + गंध + इत = सुगंधित। बद + चलन + ई = बदचलनी। अप + मान + इत = अपमानित

(ज) 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (अ)

(झ) 1. अनु 2. अति 3. पुनर् 4. कर 5. एरा

(ञ) 1. भाषा में यौगिक शब्दों की रचना निरंतर होती रहती है। 2. वे शब्दांश जो आगे जुड़कर उनके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन ला देते हैं या उनके अर्थ को बदल देते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं।

3. जो शबदांश मूल शब्दों के अंत में जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता ला देते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं।

(ट) 1. (1) प्र - प्रगति, प्रबल (2) वि - विनाश, विदेश (3) अ - अलग, अटल

2. (1) उन - उनसठ, उनचास, उनहत्तर (2) बिन- बिनमाँगे, बिनब्याहा, बिनबात (3) अध - अधपका, अधजला, अधमरा (4) पर - परदादा, परनाना, परपोता

3. (1) बे- बेघर, बेहोश, बेरहम (2) हर- हर एक, हर तरफ, हर रोज (3) कम- कमजोर, कमउम्र, कमबख्त (4) सर- सरपंच, सरताज, सरकार

(ठ) 1. कृत प्रत्यय- जो प्रत्यय क्रिया के मूल धातु-रूप के साथ जुड़कर संज्ञा और विशेषण का निर्माण करते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं; जैसे-

पढ़ + आई = पढ़ाई, गिर + ना = गिरना।

तद्धित प्रत्यय- जो प्रत्यय संज्ञा ..... के साथ मिलकर नया शब्द बना रहा है।

2. कर्तृवाचक कृत प्रत्यय ..... सूँघनी, चटनी, मथनी।

3. जो शब्दांश शब्दों के पहले जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता लाते हैं, उन्हें उपसर्ग तथा जो शब्दांश शब्द के अंत में जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन लाते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं।

उपसर्ग का प्रयोग- अ + ज्ञान = अज्ञान

प्रत्यय का प्रयोग- शेर + नी = शेरनी।

5. समास

(क) 1. (अ) 2. (ब) 3. (ब) 4. (स) 5. (स)

(ख) 1. (स) 2. (अ) 3. (अ) 4. (अ)

(ग)

समस्तपद	**समास का नाम**
नील गगन	कर्मधारय समास
स्वर्गगत	कर्म तत्पुरुष
गंगातट	संबंध तत्पुरुष
कार्यकुशल	अधिकरण तत्पुरुष
यथासमय	अव्ययीभाव समास
दोराहा	द्विगु समास
मुनिवर	कर्मधारय समास
गुण-दोष	द्वंद्व समास

(घ) पंचरत्न (बहुव्रीहि) - पाँच रत्नों वाला

पंचरत्न (द्विगु)- पाँच रत्न

चतुर्भुज (बहुव्रीहि)-चार भुजाएँ हैं जिसकी (विष्णु)

चतुर्भुज (द्विगु)-चार भुजाओं से युक्त

त्रिनेत्र (बहुव्रीहि)-तीन नेत्र हैं जिसके (शिव)

त्रिनेत्र (द्विगु)- तीन नेत्रों का समूह

(ङ) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(च) 1. आपबीती- आप पर बीती (अधिकरण तत्पुरुष) 2. गंगाजल - गंगा का जल (संबंध तत्पुरुष)

3. पंचवटी - पाँच हैं जो वट (कर्मधारय)

4. गुणहीन - गुणों से हीन (अपादान तत्पुरुष)

5. यशप्राप्त - यश को प्राप्त (कर्म तत्पुरुष)

6. देशभक्ति - देश के लिए भक्ति (सम्प्रदान तत्पुरुष) 7. डाकगाड़ी- डाक के लिए गाड़ी (सम्प्रदान तत्पुरुष)

(छ) 1. दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर एक कर देना या दो से अधिक सार्थक शब्दों से मिलकर बने हुए एक नए सार्थक शब्द को समास कहते हैं। जैसे- रसोई के लिए घर-रसोईघर।

2. 1. संधि में वर्णों का मेल होता है, जबकि समास में शब्दों का। 2. संधि में वर्णों के योग से वर्ण-परिवर्तन भी होता है, जबकि समास में प्राय: ऐसा नहीं होता। 3. समास में बहुत-से पदों के बीच के परसर्गों का लोप हो जाता है।

3. जिस समस्तपद का पहला पद संख्यावाचक विशेषण हो और किसी समूह का बोध कराता हो, उसे द्विगु समास कहते हैं। जैसे दोराहा- दो राहों का समाहार।

4. जिस समस्तपद में दोनों पद प्रधान हों और विग्रह करने पर 'एवं और तथा' आदि योजक शब्द लगते हों उसे द्वंद्व समास कहते हैं। जैसे:- हार-जीत हार और जीत

5. कर्मधारय समास में समस्तपद का एक पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है। जैसे - त्रिलोक - तीन लोको का समूह

6. जिस समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता बल्कि कोई अन्य ही प्रधान होता है, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं, जैसे- नीलकंठ- नीला है कंठ जिसका।

(ज) 1. अव्ययीभाव समास- जिस समस्तपद का पहला पद अव्यय हो तथा वही प्रधान हो और उसके योग से सारा समस्तपद ही अव्यय बन पाए, वह अव्ययीभाव समास कहलाता है। अव्ययीभाव समास में मुख्य रूप से आ, अन, यथा, नि, भर, बे, बा, प्रति आदि अव्ययों का प्रयोग होता है; जैसे- आजन्म -जन्मभर, आजीवन -जीवनपर्यंत, निडर-बिना डर, यथासमय-ठीक समय पर, बेशक-शक के बिना, प्रतिदिन - दिन-दिन, भरपेट-पेट भरकर, अनजाने-जाने बिना।

2. कर्मधारय समास में एक पद विशेषण या उपमानस तथा दूसरा पद विशेष्य या उपमेय होता है; जैसे- पीतांबर में पीत (विशेषण) और अंबर (विशेष्य) या घनश्याम में ..... है जो (श्रीकृष्ण)।

3. कर्मधारय समास में समस्तपद का एक पद विशेषण और दूसरा ..... जैसे- नीलगगन (नीला है जो गगन), नवग्रह (नौ ग्रहों का समूह), काली मिर्च (काली है जो मिर्च), सप्ताह (सात दिनों का समूह)

4. तत्पुरुष समास- जिस समास में दूसरा पद प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास ..... उसका नाम पड़ जाता है।

समस्तपद	**विग्रह**
यशप्राप्त	यश को प्राप्त
परलोकगमन	परलोक को गमन
गुणयुक्त	गुण से युक्त
स्वरचित	स्व के द्वारा रचित
डाकगाड़ी	डाक के लिए गाड़ी
बलिपशु	बलि के लिए पशु

6. संधि

(क) 1. (ब) 2. (स) 3. (स) 4. (अ) 5. (ब) 6. (स) 7. (अ)

(ख) 1. (ब) 2. (स) 3. (स) 4. (ब) 5. (स) 6. (अ) 7. (ब)।

(ग) 1. नर + इंद्र = (अ + इ) = नरेंद्र

पो + इत्र = (ओ + इ) = पवित्र

पा + वक = (आ + अ) = पावक

सु + अल्प = (उ + अ) = स्वल्प

कवि + इंद्र = (इ + इ) = कवींद्र

परम + इंद्र = (अ + इ) = परमेन्द्र

मन: + हर = (अ: + अ) = मनोहर

उत् + चारण = (त् + च) = उच्चारण

ऋ + न = (ऋ + न) = ऋण

नि: चय = (अ: + च) = निश्चय

(घ) वि: + छेद = विच्छेद (व्यंजन संधि)

नि: + चय = निश्चय (विसर्ग संधि)

जगत् + नाथ = जगन्नाथ (व्यंजन संधि)

दिक् + गज = दिग्गज (व्यंजन संधि)

गै + अक = गायक (अयादि)

चित् + मय = चिन्मय (व्यंजन संधि)

भर + न = भरण (व्यंजन)

परम् + तू = परन्तु (व्यंजन संधि)

सत् + जन = सज्जन (व्यंजन संधि)

पर + उपकार = परोपकार (गुण संधि)

(ङ) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(च) 1. मेल 2. वर्णों 3. विसर्ग 4. स्वर 5. द्

(छ) 1. भू + ऊर्जा = भूर्जा, सु + उक्ति = सूक्ति

कवि + इन्द्र = कवीन्द्र।

2. नर + इन्द्र = नरेन्द्र, गण + ईश = गणेश, पर + उपकार = परोपकार

3. एक + एक = एकैक, सदा + एव = सदैव, तथा + एव = तथैव।

4. नि + ऊन = न्यून, यदि + अपि = यद्यपि, अति + उत्तम = अत्युत्तम

5. ने + अन = नयन, पो + अन = पवन, पौ + अक = पावक।

(ज) 1. परिभाषा- निकटवर्ती वर्णों के मेल से होने

वाले परिवर्तन को संधि कहते हैं।

संधि का महत्त्व- संधि करने व संधि-विच्छेद की क्रिया का ज्ञान होने पर बड़े जटिल शब्दों के अर्थ समझने में सहायता मिलती है।

2. दो स्वरों के मेल से उत्पन्न विकार अथवा रूप-परिवर्तन को स्वर संधि कहते हैं। इसके अंतर्गत पहले शब्द का अंतिम वर्ण तथा दूसरे शब्द का प्रथम वर्ण स्वर होते हैं और ये परस्पर मिलकर नया रूप धारण करते हैं; जैसे- राजा + ईश (आ + ई = ए) राजेश।

3. किसी वर्ग के पहले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) .... तत् + भव = तद्भव

4. विसर्ग से पहले कोई स्वर ..... धनुः + टंकार = धनुष्टंकार।

5. संधि के नियमों के अनुसार मिले हुए वर्णों को यदि अलग-अलग कर दिया जाए, तो यह प्रक्रिया संधि-विच्छेद कहलाती है; जैसे- पुस्तकालय का संधि-विच्छेद होगा- पुस्तक + आलय।

(झ) 1. स्वर-संधि के उपभेदों के सामान्य नियम निम्न प्रकार हैं-

(1) दीर्घ संधि-एक ही जाति के स्वरों के निकट आने पर उनके मेल से उसी जाति का दीर्घ स्वर बन जाता है। इसे दीर्घ संधि कहते हैं। (अ + अ = आ) - कोण + अर्क = कोणार्क

(2) गुण संधि- यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' हो, तो दोनों के स्थान पर 'ए'; यदि 'उ' या 'ऊ' हो, तो दोनों के स्थान पर 'ओ' और यदि 'ऋ' हो, तो 'अर्' हो जाता है। इसे गुण संधि कहते हैं। (अ + इ = ए) - नर + इन्द्र = नरेन्द्र।

(3) वृद्धि संधि- जब 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' हो, तो दोनों के स्थान पर 'ऐ'; यदि 'ओ' या 'औ' हो, तो दोनों के स्थान पर 'औ' हो जाता है। इस मेल को वृद्धि संधि कहते हैं।

(अ+ए=ऐ) - एक + एक = एकैक

लोक + एषण = लोकैषण।

2. वर्ग के पहले वर्ण का पाँचवें वर्ण में परिवर्तन- यदि किसी वर्ग के पहले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) ... .षट् + मास = षण्मास।

'त्' के संबंध में विशेष नियम- (क) 'त्' के बाद कोई स्वर या 'ग, घ, द, ध, ब, भ, म, र' या 'व' वर्ण हो, तो 'त' का 'द' हो जाता है- सत् + गति = सद्गति।

'छ' के संबंध में विशेष नियम- किसी स्वर के बाद यदि 'छ' वर्ण आ जाए, तो 'छ' से पहले 'च्' जोड़ दिया जाता है; जैसे- परि + छेद = परिच्छेद

आ + छादन = आच्छादन।

'म' के संबंध में विशेष नियम-यदि म् के बाद 'क' से 'म' तक कोई व्यंजन हो, म् उसी वर्ग के अंतिम वर्ण (ङ, ञ्, ण्, म्) अथवा अनुस्वार (ं) में बदल जाता है - परम् + तू = परन्तु, परंतु, सम् + ध्या = संध्या, सन्ध्या

3. विसर्ग के बाद यदि 'श' या 'स' हो, तो विसर्ग ज्यों-का-त्यों बना रहता है या उसकी जगह क्रमशः 'श्, ष्, या 'स्' हो जाता है- ..... तो विसर्ग का लोप हो जाता है- अतः + एव = अतएव।

7. शब्द-भंडार

(क) 1. (अ) 2. (ब) 3. (ब) 4. (स) 5. (अ) 6. (स) 7. (ब)

(ख) रात्रि- रात, निशा, रजनी।

बादल- मेघ, घन, जलधर।

पृथ्वी- भू, धरा, भूमि।

कोयल- कोकिला, पिक, वनप्रिय।

पुष्प- फूल, सुमन, कुसुम।

हाथी- गज, नाग, हस्ती।

किरण- रश्मि, कर, अंशु।

भौंरा- मधुकर, भँवर, अलि

(ग) 1. (ब) 2. (अ) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब) 6. (अ) 7. (ब)

(घ) दृढ़-विचलित, दूषित-स्वच्छ, गगन-धरा, इहलोक-परलोक, विजय-पराजय, कुसुम-कटार, चर-अचर, आज्ञा-अवज्ञा, जड़- चेतन, उदय-अस्त, एकता-अनेकता, चंचल-स्थिर, अमृत-विष, कठिन-सरल, चल-अचल, आर्य-अनार्य,

कर्कश-मृदु, घृणा-प्रेम, आदि-अंत, एकमुखी-बहुमुखी, गणतंत्र-राजतंत्र, कनिष्ठ-ज्येष्ठ आवश्यक-अनावश्यक।

(ङ) 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (स) 5. (अ) 6. (स) 7. (ब)

(च) कर- हाथ, टैक्स, किरण।

उत्तर- जवाब, एक दिशा का नाम, बाद का।

पक्ष- पंख, तरफ, सहायक।

विधि- कानून, तरीका, भाग्य।

अक्षर- वर्ण, ईश्वर, मोक्ष।

(छ) 1. कोष 2. परिमाण, परिणाम 3. कूल, कुल 4. अमूल्य 5. इच्छा 6. प्रयोग।

(ज) 1. **गज** चिड़ियाघर में हमने एक गज को देखा। **गज़** दो गज़ सूती कपड़ा ले आओ।

2. **गिरि** हिमालय गिरि आकाश को छूने वाली दिखाई देती है।

गिरी खरबूजे की गिरि बहुत उपयोगी होती है।

3. **चिता** संत महापुरुषों ने कहा है, चिंता चिता के समान होती है।

चीता चीता बिल्कुल शेर की तरह ही प्रतीत होता है।

4. **वदन** हमें दिन में तीन बार वदन धोना चाहिए।

बदन गर्मियों के दिनों में अक्सर बदन में घिमोरियाँ निकल आती हैं।

5. **डोर** सभी भक्तों की डोर ईश्वर के हाथ में होती है। ढोर गाँव में ढोर खूँटे से बाँधे जाते हैं।

(झ) 1. मुमुक्षु 2. यशस्वी 3. आलोचक 4. हस्तलिखित 5. कलाकार 6. अवैतनिक 7. युधिष्ठिर 8. विश्वसनीय 9. कटुभाषी 10. मृदुभाषी 11. अजेय 12. अगम्य

(ञ) 1. वैज्ञानिक 2. शास्त्रज्ञ 3. वाचाल 4. दुर्बोध 5. अदृश्य 6. आलोचक 7. अकल्पनीय 8. विश्वसनीय

(ट) 1. कटुभाषी आदर नहीं पाता।

2. वाचाल से सावधान रहना चाहिए।

3. परमार्थी का जीवन सफल होता है।

4. इस संस्था में सभी अवैतनिक हैं।

5. इस बार दीपावली पर अभूतपूर्व दृश्य उपस्थित हुआ था।

6. मेरे चाचा जी सेना में भूतपूर्व कर्नल थे।

(ठ) 1. व्यय- साधारण खर्च।

अपव्यय- फिजूल खर्च।

2. दया - दुख से द्रवित होना।

कृपा- दुख दूर करने की सामर्थ्ययुक्त दया।

3. अर्चना- धूप, दीप, फल इत्यादि से देवता की पूजा।

पूजा- बिना किसी सामग्री के भी भक्तिभाव से प्रार्थना।

4. उपयोग-सुंदर ढ़ंग से काम में लाना।

प्रयोग- किसी वस्तु को सामान्य रूप से काम में लाना।

5. स्वागत- किसी के आगमन पर सम्मान।

अभिनंदन- किसी महान व्यक्ति का विधिवत् सम्मान।

6. अध्यक्ष- किसी संस्था का स्थायी प्रधान।

सभापति- कुछ काल तक होने वाली किसी सभा का प्रधान।

(ड) 1. विपरीत अर्थ प्रकट करने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं।

2. अधिकांश पर्यायवाची शब्द एकार्थक न होकर मिलते-जुलते अर्थ वाले होते हैं। एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्दों के अर्थ में सूक्ष्म भेद होता है।

(ढ) 1. वह प्रयुक्त शब्द जो वाक्यांश अथवा अनेक संबद्ध शब्दों के लिए शीर्षक का कार्य करता है वाक्यांश के लिए एक शब्द कहलाता है। जैसे जो सदा रहे- अमर।

2. हिन्दी में अनेक ऐसे शब्द हैं, जो उच्चारण की दृष्टि से प्राय: समान पाए जाते हैं परंतु उनके अर्थ में पर्याप्त भिन्नता होती है। उच्चारण या प्रयोग में तनिक-सी असावधानी होने पर वाक्य के अर्थ में परिवर्तन हो जाता है और पूरा वाक्य ही गड़बड़ा जाता है ऐसे शब्दों को समश्रुति (सुनने में समान

लगने वाले) भिन्नार्थक (अर्थ में भिन्नता वाले) शब्द कहा जाता है। उदाहरण:- कृती - कुशल, कृति - कार्य

(ण) 1. समान अर्थ देने वाले शब्द ..... पर्यायवाची मान लिया गया है। उदाहरण : आग, अनल, ज्वाला, पावक, शिखी आदि। 2. अनेकार्थी शब्द- कुछ शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं; जैसे- 'अंबर' के दो अर्थ हैं- वस्त्र और आकाश। ऐसे शब्दों को अनेकार्थी शब्द कहते हैं। हिन्दी में अनेक शब्द ऐसे होते हैं, जो उच्चारण की दृष्टि से प्राय: समान पाए जाते हैं परंतु उनके अर्थ में पर्याप्त भिन्नता होती है। उच्चारण या प्रयोग में तनिक-सी असावधानी होने पर वाक्य के अर्थ में परिवर्तन हो जाता है और पूरा वाक्य ही गड़बड़ा जाता है। ऐसे शब्दों को समश्रुति (सुनने में समान लगने वाले) भिन्नार्थक (अर्थ में भिन्नता वाले) शब्द कहा जाता है।

8. संज्ञा

(क) 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (ब) 5. (ब) 6. (स) 7. (ब) 8. (ब)।

(ख) 1. पुरुषत्व 2. बुढापा 3. पारिवारिक 4. गिरावट 5. मिठास।

(ग)

प्रसन्नता	कर्तृत्व	गरीबी
कालिमा	ठंडक	चोरी
डाका	गिरावट	प्रभुता
ऊँचाई	शीघ्रता	चिल्लाहट
परायापन	स्वत्व	राष्ट्रीयता
समीपता	थकान	प्यास
चालाकी	नेतृत्व	आपा
दूरी	गान	शिष्टता
सेवा	मनाही	निजता

(घ) अच्छाई- भाववाचक संज्ञा, उड़ान- भाववाचक संज्ञा, गोदावरी- व्यक्तिवाचक संज्ञा, लखनऊ- व्यक्तिवाचक संज्ञा, गुच्छा- समूहवाचक संज्ञा, लड़ाई-भाववाचक संज्ञा, पीतल- द्रव्यवाचक संज्ञा, सर्दी- भाववाचक संज्ञा, नगर- जातिवाचक संज्ञा, हिंसा - भाववाचक संज्ञा, खेल - भाववाचक संज्ञा, हिमालय- व्यक्तिवाचक संज्ञा, घोड़ा- व्यक्तिवाचक संज्ञा, वर्षा- जातिवाचक संज्ञा, घाटी - जातिवाचक संज्ञा, दूध- द्रव्यवाचक संज्ञा, नेपाल- व्यक्तिवाचक संज्ञा, चिल्लाहट- भाववाचक संज्ञा, मेला- समूहवाचक संज्ञा, उर्मिला- व्यक्तिवाचक संज्ञा, कंजूसी- भाववाचक संज्ञा, सेना- समूहवाचक संज्ञा, गिरोह- समूहवाचक संज्ञा, मिठाई- व्यक्तिवाचक संज्ञा।

(ङ) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ 6. ✗

(च) 1. अशोक, तक्षशिला- व्यक्तिवाचक

2. ताजमहल- व्यक्तिवाचक

3. अपूर्व- व्यक्तिवाचक

4. तुलसीदास, रामचरितमानस- व्यक्तिवाचक

5. विभीषणों- जातिवाचक

6. महाराष्ट्र- व्यक्तिवाचक

7. आँखों, आँसू- जातिवाचक संज्ञा

8. भारतवर्ष, गाँधी, नेहरू- व्यक्तिवाचक

9. उदारता- भाववाचक संज्ञा

10. सच्चाई- भाववाचक

(छ) 1. कलकत्ता, यमुना, रामचरितमानस, महेश, कृष्ण

2. शिक्षक, मित्र, सेवक, सज्जन, चोर

3. सोना, गेहूँ, चावल, जल, दूध

4. इस अभागे सूरदास की मदद करो। वह तो विभीषण निकला, अपनों को ही धोखा दे गया।

(ज) 1. परिभाषा- किसी प्राणी, वस्तु, गुण, भाव, स्थिति या अवस्था के नाम को संज्ञा कहते हैं। उदाहरण ..... नदी, हवा, वन आदि।

2. व्यक्तिवाचक संज्ञा- जो संज्ञा शब्द किसी विशेष नाम के व्यक्ति, प्राणी, वस्तु या स्थान का बोध कराएँ, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे- ....नाम व्यक्तिवाचक संज्ञा होते हैं।

3. जातिवाचक संज्ञा- जब कोई संज्ञा शब्द एक ही प्रकार के सभी प्राणियों, वस्तुओं तथा स्थानों आदि का बोध कराता है, तो इनसे पूरी जाति का बोध होता

है। इसलिए ऐसे संज्ञा शब्द जातिवाचक संज्ञा कहलाते हैं; जैसे- लड़का, स्त्री, पुरुष, कुत्ता, गाँव, देश, पर्वत, नदी, अध्यापक, वर्षा, चिकित्सक आदि।

4. भाववाचक संज्ञा- जिन शब्दों से संज्ञा के गुण, दोष, भाव, अवस्था, स्थिति आदि का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे- सुख, दुख, बचपन, जवानी, बुढ़ापा, मित्रता, शत्रुता, खटास, मिठास, गर्मी, सर्दी, चौड़ाई, लंबाई, ऊँचाई आदि।

5. द्रव्यवाचक संज्ञा- जिन संज्ञा शब्दों से विभिन्न पदार्थों का बोध होता है, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे- लोहा, चाँदी, सोना, पीतल, गेहूँ, चावल, जल, दूध, तेल आदि।

6. जिन शब्दों से संज्ञा के समूह का बोध हो, उन्हें समूहवाचक संज्ञा कहते हैं, जैसे कक्षा, सेना, भीड़, गुच्छा, सभा, गिरोह आदि।

(झ) 1. भाववाचक संज्ञाओं को दो वर्गों में रखा जा सकता है। कुछ संज्ञाएँ अपने मूल रूप में भाववाचक..... अव्यय शब्दों से।

उदाहरण- जातिवाचक से भाववाचक

(1)	भाई	भाईचारा
	देव	देवत्व
	मजदूर	मजदूरी
(2)	सर्वनामों से भाववाचक	
	आप	आपा
	निज	निजता
	मम	ममत्व
(3)	विशेषणों से भाववाचक	
	उदास	उदासी
	हिंसक	हिंसा
	सर्द	सर्दी
(4)	क्रियाओं से भाववाचक	
	खोजना	खोज
	गिरना	गिरावट
	सीना	सिलाई
(5)	अव्यय शब्दों से भाववाचक	
	दूर	दूरी
	मना	मनाही
	नीचे	निचाई

2. व्यक्तिवाचक और भाववाचक संज्ञाओं का जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग- व्यक्तिवाचक और भाववाचक संज्ञाएँ एकवचन में प्रयुक्त होती हैं; किंतु जब विशेष स्थितियों, ... यह देश गाँधी और नेहरू का है। (महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू)

9. लिंग

(क) 1. (अ) 2. (स) 3. (स) 4. (स) 5. (ब) 6. (स)

(ख) प्यास- स्त्रीलिंग, भूख- स्त्रीलिंग, प्यासा- पुल्लिंग, बालू-स्त्रीलिंग, भलाई-स्त्रीलिंग, भूखा-पुल्लिंग, गुर्राहट-स्त्रीलिंग, पुजापा- पुल्लिंग, मक्का- स्त्रीलिंग, गरमाहट- स्त्रीलिंग, संतरा- पुल्लिंग, दूध-पुल्लिंग, मलाई- स्त्रीलिंग, चाँदी- स्त्रीलिंग, बुढ़ापा-पुल्लिंग, हड्डी- स्त्रीलिंग।

(ग)	डिबिया	नाली	तेलिन
	धोबिन	चोरनी	यशस्विनी
	कवयित्री	बाला	मादा मगरमच्छ
	गाय	दादी	मादा भालू
	बाघिन	मादा	मादा तोता
	लुटिया	शिष्या	गुणवती
	मजदूरनी	चिड़िया	सुधारिका
(घ)	पति	नौकर	नर मछली
	रुद्र	बाघ	युवक
	लोटा	अध्यापक	नर चील
	बैल	मियाँ	नर गिलहरी
	नर चील	हंस	नर मकड़ी
	बलवान	पुत्र	महान
	डिब्बा	भाई	निवेदक

(ङ) 1. स्त्रीलिंग 2. स्त्रीलिंग 3. पुल्लिंग 4. पुल्लिंग 5. पुल्लिंग।

(च) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

(छ) 1. स्त्रीलिंग, पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग 3. स्त्रीलिंग, पुल्लिंग 4. स्त्रीलिंग, पुल्लिंग

(ज) 1. फिल्म की नायिका एक सीधी-सादी युवती है। 2. उसने फेरी वाले से स्टील का एक कटोरा खरीदा। 3. पंडिताइन की दीन दशा मुझसे देखी न गई। 4. कवि सम्मेलन में एक कवयित्री को आमंत्रित किया गया।

(झ) 1. खेत, खेल, नाच, संसार, मन, बालक, पहाड़, खोज। 2. जाटनी, हंसनी, चोरनी, सिंहनी, ऊँटनी, रीछनी, भाटनी, भीलनी। 3. **नित्य पुल्लिंग-** भेड़िया, भालू, कौआ, कीड़ा मच्छर। **नित्य स्त्रीलिंग-** कोयल, मक्खी, लोमड़ी, भेड़, मकड़ी।

(ञ) 1. शब्द के जिस रूप से पुरुष से स्त्री जाति का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं। 2. शब्द के जिस रूप से पुरुष जाति का बोध होता है, उसे पुल्लिंग कहते हैं। जैसे- मोटा, लोटा, छाता, सोना, लोहा। 3. शब्द के जिस रूप से स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं। जैसे - बेटी, चाची, गाय, शेरनी आदि।

(ट) 1. **आई-** खटाई, चटाई, मिठाई, भलाई, बुनाई, लड़ाई आदि। **इमा-** नीलिमा, कालिमा, लालिमा, गरिमा, महिमा आदि। **आस-** खटास, मिठास, भड़ास, प्यास आदि। **आवट-** सजावट, रूकावट, बुनावट आदि। **आहट-** चिकनाहट, गरमाहट, कड़वाहट, मुस्कुराहट, गुर्राहट, सकपकाहट आदि।

2. **आर-** लुहार, सुनार, विचार, चित्रकार, आदि।

ना- टहलना, सोना, सजाना, लिखना आदि।

त्व- कवित्व, पुरुषत्व, बंधुत्व, अपनत्व, लघुत्व, ममत्व आदि।

पन- लड़कपन, बचपन, पागलपन, छुटपन, बड़प्पन, आदि।

अक- लेखक, शिक्षक, चालक, गायक, नायक, चिंतक, सुधारक, पालक आदि।

3. नित्य पुल्लिंग शब्द- कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनका प्रयोग सदा पुल्लिंग में ही किया जाता है। जैसे: कौआ, उल्लू, खटमल, तोता, मच्छर, पशु, गैंडा, पक्षी आदि।

नित्य स्त्रीलिंग शब्द- कुछ शब्दों का प्रयोग सदा स्त्रीलिंग में ही किया जाता है; जैसे: मैना, मछली, कोयल, मक्खी, चील, भेड़, बुलबुल आदि।

10. वचन

(क) 1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (अ) 5. (स) 6. (स)

(ख) 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (अ) 5. (ब)

(ग) आँख- एकवचन, गायें-बहुवचन, विद्वज्जन- बहुवचन, सड़कें- बहुवचन, लू- एकवचन, बहुएँ- बहुवचन, कलाएँ- बहुवचन, गरीबलोग- बहुवचन, प्रजाजन- बहुवचन, घर- एकवचन, धोती-एकवचन तालियाँ- बहुवचन, मुनि- एकवचन, कथाएँ- बहुवचन, छात्रगण- बहुवचन, डिबिया- एकवचन, कुटियाँ- बहुवचन, आप- एकवचन।

(घ)

धेनुएँ	ऋषिसमाज	आपलोग
चाबियाँ	कन्याऐं	मित्रगण
मशीनें	चिड़ियाँ	शाखाएँ
छतें	पाठकवृंद	गौएँ
लेखिकाएँ	कलाएँ	विद्यार्थीगण

(ङ) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(च) 1. पत्तियों 2. छात्रगण 3. मोरों 4. मुसाफिरों 5. बालिकाओं

(छ) 1. बहुवचन, बहुवचन, 2. बहुवचन, बहुवचन 3. बहुवचन 4. एकवचन 5. एकवचन।

(ज) 1. मेरी घड़ियाँ खराब हैं। 2. लुएँ चल रही हैं। 3. आचार्यों ने हमें अच्छी बातें बताईं। 4. डाकू माल लूटकर फरार हो गये। 5. पुत्रों को पिता की सेवा करनी चाहिए।

(झ) 1. तुम्हारे केश बहुत घने हैं। 2. रोते-रोते उसने प्राण त्याग दिए। 3. कृपया अपने आँसू पोंछ डालिए। 4. सर्दियों में रातें लंबी होती हैं। 5. आज एक महीने बाद बेटे के दर्शन हुए।

(ञ) पदार्थसूचक शब्दों (दूध, घी, पानी ..... होता है: जैसे-1. बच्चे को गर्म दूध दो। मुझे ठंडा पानी दो।

2. कुछ एकवचन संज्ञा शब्दों के साथ 'वर्ग, जन, लोग, वृंद, गण' आदि शब्द जोड़कर उनका प्रयोग बहुवचन में किया जाता है; जैसे- ..... आज सभी मजदूर अवकाश पर हैं।

3. वचन की पहचान संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की रूप-रचना द्वारा हो जाती है; जैसे- ..... सर्वनाम एकवचन तथा ब वर्ग के बहुवचन हैं।

(ट) 1. (1) आपलोग दूसरे रास्ते से आ जाइए। (2) आज सभी मजदूर लोग छुट्टी पर हैं। (3) गुरुजन ने हमें अच्छी बातें बताई। (4) अध्यापक वृंद स्कूल के कार्यालय में उपस्थित थे। (5) नेतागण बहुत बड़े मैदान में उपस्थित थे।

2. कुछ संज्ञा शब्दों का प्रयोग सदा बहुवचन में होता है-

दर्शन- मैं आपके दर्शन करने आया था।

आँसू- उसका दु:ख देखकर मेरे आँसू निकल पड़े।

हस्ताक्षर - मैंने पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए हैं।

बाल- उसके बाल लंबे हैं।

प्राण- रोते-रोते उसने प्राण त्याग दिए।

लोग- लोग तो प्राय: सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास कर लेते हैं।

दाम- इस कुर्सी के सही दाम बताओ।

11. कारक

(क) 1. (ब) 2. (स) 3. (स) 4. (अ) 5. (स) 6. (स)।

(ख) 1. कर्ता 2. अपादान 3. अधिकरण 4. संबोधन 5. करण 6. कर्म 7. संबंध

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓ 6. ✗ 7. ✓

(घ) 1. अधिकरण कारक 2. करण कारक 3. अपादान कारक 4. कर्ताकारक 5. कर्म कारक 6. संप्रदान कारक 7. संप्रदान कारक 8. संबंध कारक।

(ङ) 1. ने, को 2. में 3. पर 4. से 5. ने, को 6. से 7. ने, को 8. ने, से

(च) 1. अपादान कारक 2. करण कारक 3. अपादान कारक 4. करण कारक 5. अपादान कारक

(छ) 1. नेहा मिठाई खाती है। 2. मैं पुस्तक पढ़ता हूँ। 3. मैंने चाकू से फल काटा। 4. चिड़िया पेड़ पर बैठी है। 5. मैंने प्रवीण को पुस्तक दी। निर्धनों के वास्ते सभी दान दो। दीपक ने कमला के लिए घड़ी खरीदी।

(ज) 1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप और कार्य से उसका संबंध वाक्य में क्रिया या अन्य संज्ञा या सर्वनाम पदों से जाना जाए, उसे कारक कहते हैं। उदाहरण :- माँ ने बेटे को समझाया। हरि घर पर सो रहा है।

2. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के करने वाले का ज्ञान हो वह कर्ता कारक कहलाता है। जैसे- शीला ने खाना खाया। 3. जिस पर क्रिया के कार्य का फल पड़ता है, वह कार्य कारक कहलाता है जैसे- अध्यापक ने बच्चों को पढ़ाया।

4. शब्द के जिस रूप से किसी को बुलाने या सचेत करने का भाव प्रकट हो, उसे संबोधन कारक कहते हैं। उदाहरण : ऐ! कहाँ जा रहे हो? 5. संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप, जिससे एक वस्तु का दूसरी के साथ संबंध ज्ञात हो, संबंध कारक कहलाता है। जैसे : ये मेरे मित्र हैं।

(झ) 1. करण कारक ..... हमारा कर्तव्य है। अपादान कारक ..... किलोमीटर दूर है। (दूरी) करण कारक तथा अपादान कारक दोनों का विभक्ति-चिह्न 'से' है, परंतु करण कारक में 'से' किसी साधन या सहायक का सूचक होता है, जबकि अपादान कारक में 'से' अलग होने का सूचक होता है।

करण कारक	**अपादान कारक**
1 मैंने पेन से पत्र लिखा।	मेरे हाथ से पेन छूट गया।
2 मोहन गाड़ी से आया।	पेड़ से पत्ते गिरते हैं।

2. अकारांत पुल्लिंग शब्द-रूप 'बालक'

कारक	एकवचन	बहुवचन
.....	हे बालको!	

आकारांत पुल्लिंग शब्द रूप 'लड़का'

कारक	एकवचन	बहुवचन
.....	हे लड़को!	

इकारांत पुल्लिंग शब्द-रूप 'कवि'

कारक	एकवचन	बहुवचन
.....	हे कवियों!	

3. उकारांत पुल्लिंग शब्द-रूप 'गुरू'

कारक	एकवचन	बहुवचन
गुरु, गुरु ने	..... हे गुरुओ!	

ऊकारांत पुल्लिंग शब्द-रूप 'बाबू'

कारक	एकवचन	बहुवचन
बाबू, बाबू ने	..... हे बाबुओ!	

(ञ) 1. मैं शाम को आऊँगा। 2. वह रमेश का घर नहीं है। 3. परीक्षा मार्च में होगी। 4. सचिन को स्कूल जाना है। 5. रेशमा ने चाकू से फल काटा।

(ट) की- षष्ठी, संबंध कारक। से- तृतीया, करण कारक। में- सप्तमी, अधिकरण कारक। के लिए - चतुर्थी, संप्रदान कारक। पर - सप्तमी, अधिकरण कारक। का- षष्ठी, संबंध कारक। रा- पष्ठी, संबंध कारक। को- द्वितिया, कर्म कारक। के द्वारा- तृतीया, करण कारक

12. सर्वनाम

(क) 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब)

(ख) 1. वह 2. वो 3. कुछ 4. स्वयं 5. जिसकी, उसकी।

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗

(घ) 1. वह (पुरुषवाचक सर्वनाम) 2. कौन (प्रश्नवाचक सर्वनाम) 3. कुछ (अनिश्चय-वाचक) 4. मेरे (उत्तम पुरुषवाचक), कौन-सा (प्रश्नवाचक) 5. कहाँ (प्रश्नवाचक) 6. कोई, क्या (अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक) 7. अपना (निजवाचक सर्वनाम) 8. जैसा तथा वैसा (संबंधवाचक) 9. उसने (अन्य पुरूषवाचक सर्वनाम) 10. हमारा (उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम)

(ङ) 1. वे अन्य पुरुष 2. तू मध्यम पुरुष 3. तुम मध्यम पुरुष 4. वह अन्य पुरुष 5. मैं उत्तम पुरुष

(च) 1. मैं आपको अपना पता दूँगा। 2. मुझे आज जाना है। 3. मुझे अपने से प्यार है। 4. वह वहाँ गया था। 5. किसी आदमी का नाम मुझे पता नहीं। 6. जिस आदमी ने नल लगाया था वह आया है।

(छ) 1. संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं। जैसे- मैं, तुम, वह, हम, आप, यह, जो, कोई, कुछ, कौन, आदि।

2. (1) पुरुषवाचक सर्वनाम (2) निश्चयवाचक सर्वनाम (3) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (4) संबंधवाचक सर्वनाम (5) प्रश्नवाचक सर्वनाम (6) निजवाचक सर्वनाम

3. जिन सर्वनामों से किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध हो, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहा जाता है। जैसे- यह, वह, वे आदि।

4. जिस सर्वनाम शब्द से किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध न हो, वह अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाता है। जैसे- कुछ, कोई, आदि।

5. जो सर्वनाम शब्द वाक्य में किसी दूसरे सर्वनाम से संबंध बताता है, वह संबंधवाचक सर्वनाम कहलाता है। जैसे- जो, जैसे आदि।

(ज) 1. निजवाचक सर्वनाम ..... दोनों वचनों में होता है।

2. पुरुषवाचक सर्वनाम- बोलने वाले, लिखने वाले, सुनने वाले, पढ़ने वाले या किसी अन्य व्यक्ति के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है, वे पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। ..... जैसे;- वह, वे, वे लोग, वे सब, उसे, उन्हें, आदि।

3. निश्चयवाचक सर्वनाम यह के रूप .... किनमें, किन पर।

13. विशेषण

(क) 1. (अ) 2. (ब) 3. (ब) 4. (स) 5. (स)

(ख) 1. विषैला 2. सुखी 3. कमाऊ 4. राष्ट्रीय 5. ऊनी।

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(घ) 1. चालीस-छात्र 2. ये-पुस्तकें 3. दो किलो-पहलवान 4. बुद्धिमान-मनुष्य 5. निरा मूर्ख-लड़का

(ङ) 1. बहुत-अनिश्चित संख्यावाचक 2. खिन्न मन-गुणवाचक 3. महान-गुणवाचक 4. बहुत

देर–प्रविशेषण 5. कुछ–संख्यावाचक 6. उपयोगी–गुणवाचक 7. बहुत मैले– प्रविशेषण।

(च) 1. सबसे अधिक– उत्तमावस्था 2. घनिष्ठ–मूलावस्था 3. अधिकतम– उत्तमावस्था 4. मधुर–मूलावस्था 5. सुंदर– मूलावस्था 6. बदतर–उत्तरावस्था 7. वृहत्तर– उत्तरावस्था

(छ) 1. तेज– बहुत 2. भोली– बड़ी 3. तीव्र–अत्यंत 4. उत्तेजक– बहुत।

(ज) 1. वे – वे 2. वे – लोग 3. वह – छात्र 4. कोई – घर 5. इस – कहाँ 6. यह – लड़का 7. कुछ – कुछ।

(झ) 1. एक लीटर (परिमाणवाचक) 2. कुछ केले (संख्यावाचक) 3. प्रथम (परिमाणवाचक) 4. सारा परिवार (संख्यावाचक)

(ञ) 1. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।

2. विशेषण जिस शब्द की विशेषता बतलाता है उसे विशेष्य कहा जाता है।

3. जो शब्द विशेषणों की विशेषता बताते हैं, प्रविशेषण कहते हैं।

4. दो प्राणियों या वस्तुओं के गुणों अवगुणों के मिलान को तुलना कहते हैं।

5. (1) मूलावस्था (2) उत्तरावस्था (3) उत्तमावस्था

(ट) 1. कुछ शब्द मूल रूप में ही विशेषण होते हैं; जैसे– काला, गोरा, मोटा, पतला आदि।

2. यौगिक विशेषण– कुछ शब्दों (जैसे– संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया आदि) में उपसर्ग अथवा प्रत्यय लगाकर विशेषणों की रचना की जाती है। ऐसे विशेषण यौगिक विशेषण कहलाते हैं; जैसे– वर्ष से वार्षिक, इतिहास से ऐतिहासिक, पुष्प से पुष्पित, रस से रसीला आदि।

3. इसमें किसी व्यक्ति या वस्तु की सामान्य विशेषता बताई जाती है; जैसे– गरिमा लंबी है।

4. इसमें दो प्राणियों या वस्तुओं की परस्पर तुलना में एक की अधिकता तथा दूसरे की न्यूनता बताई जाती है; जैसे– गरिमा सरिता से अधिक लंबी है।

5. इसमें दो से अधिक प्राणियों या वस्तुओं की तुलना करके किसी एक को सबसे अधिक या न्यून बताया जाता है; जैसे गगन सब से अच्छा लड़का है।

(ठ) 1. गुणवाचक विशेषण– जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, दशा, अवस्था, रंग, आकार आदि का बोध कराते हैं, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं। ..... तीखा, नमकीन, मधुर आदि।

2. संख्यावाचक विशेषण– जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की संख्या या क्रम को बोध ..... संख्या का बोध नहीं होता। जैसे– कुछ लोग, अनेक वृक्ष, बीसियों, सैकड़ों, बहुत सारे आदि।

3. जो विशेषण किसी वस्तु की माप या तौल संबंधी विशेषता बताते हैं ..... घड़ों पानी, थोड़े फल आदि।

4. सार्वनामिक विशेषण– जो सर्वनाम संज्ञा की विशेषता बताने के लिए प्रयुक्त होते हैं, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहा ..... मध्यम पुरुष (तू, तुम) विशेषण के रूप में प्रयुक्त नहीं होते।

14. क्रिया

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (अ) 4. (स) 5. (स)

(ख) 1. लिखवाया 2. बनवाए 3. बजवाया 4. बुलवाया 5. खिंचवाई

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(घ) 1. खेलता है (खेल) 2. लिखूँगा (लिख) 3. गया (जा) 4. सुनते (सुन) 5. देखता (देख)

(ङ)

अपनाना	गठियाना	शर्माना
ललचाना	हथियाना	चकराना
बतियाना	झुठलाना	लतियाना

(च) 1. सकर्मक 2. अकर्मक 3. सकर्मक 4. सकर्मक 5. सकर्मक

(छ) 1. रवि, मोहन के साथ क्रिकेट खेलता है।

2. नानी बच्चों को कहानी सुना रही थी।

3. अध्यापक छात्रों को पढ़ाते हैं।

(ज) 1. रोना 2. सोना 3. खाना 4. पढ़ना

(झ) 1. भूतकाल (सामान्य भूत) 2. भविष्यत् (संभाव्य भविष्यत्) 3. भविष्यत् (संभाव्य भविष्यत्) 4. भूतकाल (हेतुहेतुमद् भूत) 5. भविष्यत् (सामान्य भविष्यत्) 6. भूतकाल (अपूर्ण भूतकाल)

(ञ) 1. (अ) मीरा गीत गाती है। (ब) बच्चे मेला देखने गए। (स) रेशमा पुस्तक लिख रही है। (द) वे सब मंदिर गए होंगे।

2. (अ) कर्तृवाच्य (ब) कर्तृवाच्य (स) कर्तृवाच्य (द) कर्मवाच्य (य) भाववाच्य (र) भाववाच्य (ल) कर्मवाच्य (व) भाववाच्य

(ट) 1. जिन शब्दों से किसी कार्य के करने या होने का बोध हो, उन्हें क्रिया कहते हैं। जैसे- पिताजी अखबार पढ़ते हैं।

2. जिन क्रियाओं का कर्म नहीं होता तथा क्रिया का फल सीधे कर्ता पर पड़ता है, उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं जैसे- रजनीश सो रहा है। 3. जिन क्रियाओं का कर्म होता है और क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है, उन्हें सकर्मक क्रिया कहते हैं जैसे- रवि पुस्तक पढ़ रहा है।

4. जिन क्रियाओं का एक कर्म होता है उन्हें एककर्मक क्रिया कहते हैं जैसे- सिद्धार्थ गेंद से खेलता है।

5. जिन क्रियाओं के दो कर्म हों, उन्हें द्विकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे- बहन भाई को कहानी पढ़ाना सिखाती है।

6. जब वाक्य में एक ही क्रिया हो तो उसे सामान्य क्रिया कहते हैं। जैसे- चोर भागा, राकेश गया।

7. जब वाक्य में एक साथ जुड़कर दो क्रियाएँ प्रयोग होती हैं, उन्हें संयुक्त क्रिया कहते हैं। जैसे- सीटी बज गई, माँ को देखते ही बच्चा रो पड़ा।

8. संज्ञा, सर्वनाम तथा एक विशेषणादि शब्दों से बनने वाली क्रियाएँ नामधातु क्रियाएँ कहलाती हैं। जैसे- पैसे पड़े देख ललचाना स्वाभाविक ही है।

(ठ) 1. प्रेरणार्थक क्रिया- जिस क्रिया शब्द (पद) से यह पता चले कि कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी अन्य को उसे करने की प्रेरणा देता है ..... माता अध्यापिका से मीरा को पढ़वाती है।

पूर्वकलिका क्रिया- मुख्य क्रिया से पहले आने वाली क्रिया पूर्वकलिका क्रिया कहलाती हैं; .... 'ते' प्रत्यय तथा 'ही' जोड़कर बनाई जाती है।

2. वाक्य में क्रिया के पुरूष, लिंग ..... मीरा से गाया जाता है।

3. भूतकाल के निम्नलिखित छह भेद होते हैं- .... यदि वर्षा हो जाती तो फसल अच्छी होती।

4. वर्तमान काल- जो समय चल रहा है, उसे वर्तमान काल ..... वर्तमान काल की क्रियाएँ कहलाती हैं। भविष्यत् काल- क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि कार्य आने वाले समय में होगा ..... अत: ये भविष्यत् काल में हैं।

5. क्रिया के जिस रूप से पता चले कि क्रिया का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म है अथवा भाव उसे वाच्य कहते हैं।

6. कर्तृवाच्य - ऐसे वाक्यों ..... सो लिया जाए। कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तन ..... उठो जरा टहला जाए।

7. मूल धातु के अंत में 'आ' जोड़ने से प्रथम प्रेरणार्थक तथा 'वा' जोड़ने से द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया की रचना होती है; जैसे- जीना जिलाना जिलवाना

15. अविकारी शब्द

(क) 1. (ब) 2. (ब) 3. (ब) 4. (ब) 5. (स) 6. (ब)

(ख) 1. रात भर 2. प्रतिदिन 3. धीरे 4. बाहर 5. जोर-से 6. खूब

(ग) 1. (अ) 2. (अ) 3. (स) 4. (स) 5. (ब)

(घ) 1. पीछे (स्थानवाचक) 2. कम, ज्यादा (परिमाणवाचक) 3. यहाँ (स्थानवाचक क्रियाविशेषण) 4. उतना, जितना (परिमाणवाचक) 5. आगे, पीछे (स्थानवाचक) 6. अब (कालवाचक)

(ङ) 1. के साथ 2. की तरह 3. की ओर 4. के खिलाफ 5. के समान 6. के कारण

(च) 1. के पीछे (संबंधबोधक) 2. भीतर (संबंधबोधक) 3. के भीतर (क्रियाविशेषण) 4. कब (क्रियाविशेषण) 5. का (संबंधबोधक) 6. के/पीछे (संबंधबोधक)

(छ) 1. समानाधिकरण 2. समानाधिकरण 3. व्यधिकरण 4. व्यधिकरण 5. समानाधिकरण

(ज) 1. हर्षबोधक 2. शोकसूचक 3. तिरस्कार बोधक 4. हर्षबोधक 5. सावधानी बोधक

(झ) 1. कि 2. इसलिए 3. नहीं तो 4. ताकि 5. यद्यपि, लेकिन 6. इसलिए 7. क्योंकि

(ञ) 1. खबरदार 2. हाय 3. शाबाश 4. छि: 5. सावधान 6. उफ् 7. ओह

(ट) तुरंत- घायल व्यक्ति को तुरंत अस्पताल ले जाया गया।

कदापि- उस पर कदापि विश्वास न करना वह गिरगिट की तरह रंग बदलता है।

अत्यंत- तुम्हारा पत्र पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता हुई।

धीरे-धीरे - वायु धीरे-धीरे बह रही है।

एकाएक- मुझे देखकर वह एकाएक चौंक गया।

(ठ) 1. अविकारी शब्द ऐसे शब्दों को कहते हैं जिनकी रूप-रचना पर काल, लिंग, वचन और कारक आदि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, जैसे- तेजी से, धीरे-धीरे, ही भर आदि।

2. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं, परंतु जो शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं, उस क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को क्रिया विशेषण कहते हैं।

3. जो अव्यय शब्द संज्ञा या सर्वनाम के बाद आकर उनका वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ सम्बन्ध प्रकट करते हैं उन्हें सम्बन्धबोधक अव्यय कहा जाता है।

4. जो शब्द हर्ष, शोक, आश्चर्य, घृणा आदि भावों को प्रकट करते हैं उन्हें विस्मयादिबोधक कहते हैं।

5. जो क्रियाविशेषण किसी अन्य शब्द अथवा प्रत्यय के योग के बिना ही प्रयोग में लाए जाते हैं, वे मूल क्रियाविशेषण कहलाए जाते हैं; जैसे- आज, कल, यहाँ, वहाँ, ऊपर, नीचे, अब, तब आदि।

6. ऐसे क्रियाविशेषणों जो अन्य शब्दों में प्रत्यय लगाकर या समास द्वारा बनते हैं वे यौगिक क्रियाविशेषण कहलाते हैं; जैसे- रात-दिन, आजकल, क्षणभर, पहले-पहले, प्रेमपूर्वक आदि।

7. रूढ़-से, ने, को, का ..... के पश्चात् आदि।

(ड) 1. मीरा बहुत खाती है। वह खूब हँसा। ..... ये शब्द क्रियाविशेषण हैं।

2. परिभाषा- जो अव्यय संज्ञा या सर्वनाम के बाद आकर उनका संबंध वाक्य में प्रयुक्त अन्य शब्दों के साथ प्रकट करते हैं, ... अत: ये संबंधबोधक अव्यय हैं।

3. समानाधिकरण समुच्चयबोधक- जो समुच्चय-बोधक समान स्थिति वाले अर्थात् स्वतंत्र पदों, वाक्यांशों या ..... मेहनत करो ताकि उत्तीर्ण हो सको।

4. व्यधिकरण समुच्चयबोधक- जो अव्यय शब्द एक प्रधान उपवाक्य में एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्यों ..... ये प्रमुख हैं इसलिए कि, जिससे कि, ताकि आदि।

5. कालवाचक क्रियाविशेषण- जो शब्द क्रिया की काल संबंधी विशेषता प्रकट करते हैं, कालवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं। ..... दिशावाचक - चारों ओर, इधर, उधर, जिधर, किधर, सामने, उस ओर, उस तरफ, ऊपर, नीचे आदि।

6. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण- जो क्रियाविशेषण क्रिया का परिमाण या मात्रा बताते हैं, उन्हें परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

उदाहरण- ..... आवृत्तिबोधक- धड़ाधड़, चुपचाप, फटाफट, सरासर, खुल्लमखुल्ला आदि।

16. पद-परिचय, पदबंध तथा वाक्य

(क) 1. (1) (अ) (2) (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (स)

(ख) उद्देश्य	**विधेय**
1. भिखारी	सड़क पर खड़ा है।
2. मेरा भाई	प्रश्न हल कर रहा है।

3.	स्वावलंबी व्यक्ति	सदा सुखी रहता है।
4.	रामचरितमानस	तुलसीदास की सर्वश्रेष्ठ कृति है
5.	मैं	नित्य हनुमान चालीसा का पाठ करता हूँ।

(ग) 1. पदों 2. सार्थक 3. प्रतिप्रश्न 4. पदक्रम 5. मिश्र 6. संयुक्त 7. मिश्र

(घ) 1. पदक्रम 2. पदक्रम 3. अन्वय 4. पदक्रम 5. पदक्रम।

(ङ) 1. बड़ी डींगे हाँकने वाला वह (सर्वनाम पदबंध) 2. मीठे सपने देखने वाले लोग (विशेषण पदबंध) 3. वह पहले की अपेक्षा (क्रियाविशेषण पदबंध) 4. खेलकर सो गया। (क्रिया पदबंध) 5. न्यूजीलैंड से आए खिलाड़ी (विशेषण पदबंध)।

(च) 1. प्रश्नवाचक वाक्य 2. आज्ञावाचक वाक्य 3. प्रश्नवाचक वाक्य 4. संदेहवाचक वाक्य 5. इच्छा- सूचक वाक्य 6. नकारात्मक वाक्य 7. संकेतवाचक वाक्य 8. इच्छासूचक वाक्य

(छ) 1. संयुक्त वाक्य 2. सरल वाक्य 3. संयुक्त वाक्य 4. संयुक्त वाक्य 5. मिश्र वाक्य 6. संयुक्त वाक्य 7. संयुक्त वाक्य 8. मिश्रवाक्य 9. संयुक्त वाक्य 10. संयुक्त वाक्य

(ज) 1. वह यहाँ आकर चला गया। 2. बालक रोया और चुप हो गया। 3. वह बाजार गया और दूध लाया। 4. बालक शोर मचाकर भाग गए। 5. पिता ने पुत्र से कहा कि गुणों का सभी आदर करते हैं। 6. जब रोगी ने दवाई पी, तो उसने उल्टी कर दी। 7. वह हर वस्तु खरीद सकता है क्योंकि हैं क्योंकि वह धनी है।

(झ) 1. किसान एक बैल खरीदना चाहता था।
2. मेरे आँगन में हरी घास नहीं है।
3. क्या घर में मेहमान आ गए हैं?
4. तुम्हारी गाय काली है।
5. अरे! तुम कब आए?

(ञ) 1. जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक ही विधेय हो, उसे सरल वाक्य कहा जाता है; जैसे सविता गीत गा रही है।

2. वाक्य में प्रयुक्त हो जाने पर शब्द पद कहलाता है।

3. वाक्य के ऐसे अंश जो कई पदों से बना एक समूह होने पर भी एक ही पद का काम करता है, उसे पदबंध कहते हैं।

4. जब कोई पद-समूह वाक्य में संज्ञा का कार्य करता है, तो उसे संज्ञा पदबंध कहते हैं।

5. वाक्य में सर्वनाम का कार्य करने वाले पदबंध सर्वनाम पदबंध कहलाते हैं।

6. वाक्य में विशेषण का कार्य करने वाले पदबंध विशेषण पदबंध कहलाते हैं।

7. जब वाक्य में एक से अधिक क्रियापद एक साथ मिलकर एक समूह बनाते हैं, तो वह क्रिया पदबंध कहलाता है।

8. वाक्य में क्रियाविशेषण का कार्य करने वाले पदबंध क्रियाविशेषण पदबंध कहलाते हैं।

(ट) 1. वाक्य में कर्ता या उसके विस्तार अथवा जिस व्यक्ति या वस्तु के बारे में कुछ कहा जाए, उसे उद्देश्य कहते हैं। जैसे- रेशमा गीत गा रही है।

2. वाक्य में कर्ता या उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाए, उसे विधेय कहते हैं। जैसे सविता गीत गा रही है। यहाँ गीत गा रही है में उद्देश्य के विषय में बताया है।

3. जिस वाक्य में दो स्वतंत्र उपवाक्य किसी समानाधिकरण समुच्चयबोधक द्वारा परस्पर जुड़े हुए हों, वह संयुक्त वाक्य होता है जैसे- वह बाजार गया था और उसने फल खरीदे।

4. जिस वाक्य में एक मुख्य उपवाक्य और शेष आश्रित उपवाक्य हों, उसे मिश्र वाक्य कहा जाता है। जैसे- प्रधानाचार्य ने कहा कि कल छुट्टी होगी।

5. रचना की दृष्टि से पदबंध में तीन बातें आवश्यक होती हैं- (1) इसमें एक से अधिक पद होते हैं।
(2) ये पद परस्पर इस प्रकार संबद्ध होते हैं कि उनसे एक व्यधिकरण इकाई बन जाती है।
(3) पदबंध किसी वाक्य का अंश होता है।

(ठ) 1. सार्थकता- सार्थक शब्दों का प्रयोग वाक्य की प्रथम आवश्यकता होती है। निरर्थक शब्दों का समूह वाक्य-संरचना नहीं कर सकता। ऐसे शब्द वाक्य में सार्थक शब्दों के साथ तभी प्रयोग किए जा सकते हैं, जब ..... की शर्त पूरी न करने के कारण नहीं माना जा सकता।

2. आसक्ति या निकटता- वाक्य के पद एक-दूसरे के समीप रहने चाहिए। यह तभी संभव है, जब पूरे वाक्य का एक साथ उच्चारण हो। यदि कुछ ठहराव या बलाघात दिखाना हो, तो .....नाम संदेश प्रसारित करेंगे।'

3. प्रधान उपवाक्य- किसी वाक्य का जो उपवाक्य स्वतंत्र होता है, दूसरे उपवाक्य पर निर्भर..... आश्रित उपवाक्य हैं।

4. अर्थ के आधार पर वाक्य-भेद- अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं.....यदि वर्षा होती, तो फसल न सूखती।

17. विराम-चिह्नों का प्रयोग

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (ब) 4. (ब) 5. (ब) 6. (ब) 7. (अ)

(ख) 1. (स) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) 5. (अ)

(ग) 1. जो काम में आज पूरा नहीं कर सका;

2. कृ०पृ०उ० कृपया पृष्ठ उलटिए।

3. वचन के दो भेद होते हैं-1. एकवचन 2. बहुवचन

4. इस बच्चे को कहाँ ले जा रहे हो?

5. क्रिया दो प्रकार की होती हैं:- सकर्मक क्रिया और अकर्मक क्रिया

6. शराब पीने से $\overset{\text{शरीर}}{\lambda}$ में अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं।

7. वह दूर की सोचने वाला (दूरदर्शी) है।

8. श्रीमान कमल भार्गव
" हरीश कुमार

9. वह परिश्रमी, ईमानदार, स्वस्थ और सुंदर है।

10. तुलसी ने कहा है, "परहित सरिस धरम नहिं भाई।"

(घ) 1. यह किसी कथन के पूर्ण होने पर, अप्रत्यक्ष प्रश्नों के अंत में तथा कविता में छंद के चरण के अंत में आता है; जैसे- "सदा सत्य बोलो" परहित सरिस धरम नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अंधमाई।

2. ऊपर की पंक्ति में लिए शब्दों को नीचे की पंक्ति में भी लिखना हो तो शब्द न लिखकर अवतारक चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे- श्रीमान अवध किशोर
" नरेन्द्र कुमार

3. किसी बड़े तथा प्रसिद्ध शब्द को संक्षेप में लिखने के लिए उस शब्द का पहला अक्षर लिखकर उसे आगे (०) लगा देते हैं। यह शून्य ही लाघव चिह्न कहलाता है; जैसे- डॉक्टर का लाघव- चिह्न डॉ०

4. वाक्य के बीच में आए शब्दों अथवा पदों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए कोष्ठक का प्रयोग किया जाता है; जैसे- लता मंगेशकर भारत की कोकिला (मीठा गाने वाली) हैं।

(ङ) 1. भाषा के लिखित रूप में रुकने के लिए जिन संकेत-चिह्नों को प्रयोग किया जाता है, उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं। प्रश्नसूचक-चिह्न- वाक्य में प्रश्न पूछने के लिए सदैव प्रश्नसूचक-चिह्न लगाया जाता है; जैसे- ..... संबोधन के लिए-गोपाल! यहाँ आओ।

निर्देशक- उदाहरण की ओर संकेत करने वाला अथवा वाक्य ..... मैं तुम्हें आजादी दूँगा।"

2. पूर्ण विराम- यह किसी कथन के पूर्ण होने पर, अप्रत्यक्ष प्रश्नों के अंत में तथा कविता में छंद के चरण ..... मुझे मिल गई है।

3. कोष्ठक- कोष्ठक-चिह्नों का प्रयोग प्रमुख रूप से निम्नलिखित तीन रूपों में किया जाता है- (क) .... सादा जीवन व्यतीत करते थे।

त्रुटिपूरक-चिह्न- जब कुछ लिखने से छूट ..... में लगे ही रहते हैं।

उद्धरण-चिह्न- इसे अवतरण चिह्न भी कहते हैं। जब किसी अन्य की उक्ति को ..... प्रसिद्ध ग्रंथ है।

(च) 1. मैं तो ठहर गया, बोल! तू कब ठहरेगा?

2. गाँधी जी ने कहा था- "सत्य और अहिंसा से ही हम देश आजाद करा सकते हैं।"

3. शाबाश! तुमने तो कमाल कर दिया।

4. प्रात: काल टहलना अच्छा है, सभी बताते हैं।

5. भगवान सबका भला करें, जो दे उसका भी, जो न दे उसका भी।

6. कमला जोर से चिल्लाई– 'बचो'।

7. नेताजी ने कहा– "तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा।"

8. मैनें डॉ० शर्मा का निबंध 'विज्ञान वरदान या अभिशाप' पढ़ा।

9. मुझे बाजार से जूते, कपड़े, टोपी, किताबें और कुछ मसाले खरीदने हैं।

10. गोपाल ने मोहन को पुकारा ओ मोहन; पर मोहन ने कोई ध्यान नहीं दिया। वह सोचता-सोचता रवि और दीपक के घर की ओर निकल गया।

11. देखो कौन आया है? उसे आदर के साथ, कुर्सी सोफे या पलंग पर बैठाओ।

12. अहा! देखा कितना सुंदर मौसम है, चारों ओर सुंदर फूल खिले हैं आओ नाचे गाऐं।

13. हाय! मैं लुट गया।

14. रवि, राकेश, मोहन और सुरेश आए थे, ये सब अब गाँव जाएँगे।

18. मुहावरे और लोकोक्तियाँ

(क) 1. (स) 2. (अ) 3. (स) 4. (स) 5. (स) 6. (अ)

(ख) 1. (अ) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ) 5. (ब)

(ग) 1. (स) 2. (अ) 3. (स) 4. (ब) 5. (ब) 6. (ब) 7. (ब) 8. (ब)

(घ) 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (ब) 5. (ब)

(ङ) 1. (य) 2. (अ) 3. (र) 4. (ब) 5. (द) 6. (स)

(च) 1. मुहावरा हिन्दी भाषा में अरबी भाषा की देन है। अरबी भाषा का 'मुहावर:' हिन्दी में मुहावरा हो गया है।

2. जो वाक्यांश सामान्य अर्थ को प्रकट न करके किसी विशेष अर्थ को प्रकट करते हैं मुहावरे कहलाते हैं।

3. मुहावरों का प्रयोग वाक्य के प्रसंग में होता है, अलग से नहीं।

4. वो वाक्य जो साधारण अर्थ को प्रकट न करके किसी विशेष अर्थ को प्रकट करें, लोकोक्तियाँ कहलाते हैं। जैसे- रूचि अपने पति को उंगली पर नचाती है।

(छ) 1. जो वाक्यांश सामान्य अर्थ को प्रकट न करके किसी विशेष अर्थ को प्रकट करते हैं, मुहावरा कहलाते हैं। उदाहरण : उड़ती चिड़िया के पंख गिनना।

2. मुहावरों के प्रयोग से भाषा की प्रभावशाली, मनमोहक तथा प्रवाहमयी बनाने में सहायता मिलती है। मुहावरों के बिना भाषा अप्राकृतिक तथा निर्जीव जान पड़ती है।

(ज) 1. लोकोक्ति (लोक + उक्ति) का सामान्य अर्थ है- लोक में प्रचलित उक्ति। मुहावरों की तरह ही लोकोक्तियाँ भी मानव जाति के अनुभवों की सुंदर अभिव्यक्ति ..... कहावत भी कहा जाता है। धोबी का कुत्ता घर का न घाट का ..... दूर के ढोल सुहावने होते हैं।

2. मुहावरे तथा लोकोक्तियों में अंतर निम्न बातों से स्पष्ट है– ..... मुहावरे के शब्द वाक्य के अनुसार परिवर्तनीय होते हैं।

20. अपठित गद्यांश व पद्यांश

अभ्यास-1

1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (स) 5. (अ) 6. (अ) 7. (अ)

अभ्यास-2

1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (स) 5. (ब) 6. (ब) 7. (अ)

अभ्यास-3

1. (ब) 2. (ब) 3. (स) 4. (स) 5. (ब) 6. (ब) 7. (स)

अभ्यास-4

1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (ब) 5. (स) 6. (ब) 7. (अ)

अभ्यास-5

1. (ब) 2. (ब) 3. (ब) 4. (अ) 5. (अ) 6. (ब) 7. (अ)

अभ्यास-6

1. (ब) 2. (अ) 3. (ब) 4. (ब) 5. (अ) 6. (स) 7. (अ)

अपठित पद्यांश

अभ्यास-1

1. (स) 2. (अ) 3. (अ) 4. (अ) 5. (ब) 6. (स) 7. (अ)

अभ्यास-2

1. (स) 2. (ब) 3. (ब) 4. (ब) 5. (ब) 6. (स)

अभ्यास-3

1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (स) 5. (स) 6. (स)

21. अलंकार

(क) 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (स) 5. (ब) 6. (ब) 7. (अ)

(ख) 1. आभूषण 2. असमान 3. चिपकना 4. वर्णों

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(घ) 1. अलंकार का अर्थ है– आभूषण या श्रृंगार। जिस प्रकार गहने या आभूषण शरीर के सौंदर्य को बढ़ाने में सहायक होते हैं, उसी प्रकार अलंकार भी काव्य के सौंदर्य को बढ़ाते हैं।

2. कविता में कथन के सौंदर्य का बहुत अधिक महत्त्व होता है। कभी तो कवि सीधे-सादे ढंग से अपनी बात कह देता है, ... जैसे 'काली घटा का घमंड घटा।'

(ङ) 1. जहाँ शब्दों के प्रयोग से भाषा के सौंदर्य में वृद्धि होती है और काव्य में चमत्कार आ जाता है, वहाँ शब्दालंकार माना जाता है। ऐसे स्थान पर अलंकार शब्द पर आश्रित होते हैं अर्थात् शब्द बदल देने पर उनका अलंकारत्व नष्ट हो जाता है।

2. जहाँ काव्य में विशेषता अर्थगत हो, वहाँ अर्थालंकार होता है अर्थात् जहाँ शब्दों के अर्थ से चमत्कार स्पष्ट हो, वहाँ अर्थालंकार माना जाता है। इस अलंकार से युक्त रचना की एक विशेषता यह भी है कि यदि एक शब्द के स्थान पर उसी अर्थ वाला दूसरा शब्द (पर्यायवाची) रख दिया जाए, तब भी रचना के चमत्कार में कोई अंतर नहीं आता।

(च) 1. प्रमुख शब्दालंकार हैं– 1. अनुप्रास 2. यमक 3. श्लेष।

अनुप्रास– जिस रचना में वर्णों की बार-बार आवृत्ति के कारण चमत्कार उत्पन्न होता है, वहाँ अनुप्रास .... अतः यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

यमक– जब एक शब्द दो या अधिक बार प्रयुक्त होता हो और ..... आवृत्ति होने के कारण यहाँ यमक अलंकार है।)

श्लेष अलंकार– श्लेष का अर्थ है- चिपकना। जहाँ एक ही शब्द में एक बार प्रयुक्त होने पर दो या अधिक अर्थ ..... शब्द में श्लेष अलंकार है।)

प्रमुख अर्थालंकार हैं : उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति

2. **उपमा**– उपमा का अर्थ है- दो असमान वस्तुओं की तुलना करके उनमें कुछ समानता दिखाना। .... धर्म-सुंदर, वाचक शब्द-समान)

रूपक– जहाँ गुण की अत्यंत समानता दर्शाने के लिए उपमेय और उपमान को 'अभिन्न' अर्थात् 'एक' कर दिया ..... (राम-रतन)

उत्प्रेक्षा– जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना अथवा कल्पना कर ..... अतः यहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार है।

अतिशयोक्ति– जहाँ किसी का वर्णन इतना बढ़ा-चढ़ाकर किया जाए ..... अतः अतिशयोक्ति अलंकार है।)

3. **उत्प्रेक्षा**– जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना अथवा कल्पना कर ..... अतः यहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार है।

अतिशयोक्ति– जहाँ किसी का वर्णन इतना बढ़ा-चढ़ाकर किया जाए ..... अतः अतिशयोक्ति अलंकार है।)

(छ) 1. अतिशयोक्ति 2. उपमा 3. रूपक 4. उपमा 5. यमक 6. यमक।